



* श्रीगणेशाय नमः *

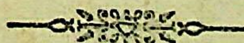
विष्णुसहस्रनाम

भाषाटीका सहित



जिसको

पं० गंगाप्रसाद शुक्ल बुकसेलर ३५० चौक लखनऊ ने अत्यंत शुद्धता पूर्वक छपाकर प्रकाशित किया ।



पण्डित रामशङ्कर वाजपेयी
प्रिंटर व प्रोप्राइटर के प्रबन्ध से
लखनऊ स्टीम प्रिंटिङ्ग प्रेस लखनऊ में छपा
प्रथमबार २०००] सन् १९२३ ई० [मूल्य ।)

श्रीविष्णुभगवान्





ॐ

परमात्मने नमः

विष्णुसहस्रनामार्थ ।



यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात् ।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ॥ १ ॥

अर्थ--जिसके केवल स्मरण ही से जीव आवागमन और संसार के लोभमोहादिक बंधने से छूटकर मोक्ष पावे है उस सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान् विष्णु के अर्थ नमस्कार है ॥ १ ॥

नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते ।
अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभ विष्णवे ॥ २ ॥

अर्थ--सम्पूर्ण प्राणीन के आप आदिभूत हैं, अनेक रूपन में विद्यमान हैं, ऐसे आप सर्वव्यापक विष्णु के अर्थ नमस्कार है ॥ २ ॥

वैशम्पायन उवाच ।

श्रुत्वाधर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः ।
युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ॥ ३ ॥

अर्थ—वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय ! राजा युधिष्ठिर, मन कर्म वाणी से तीनों पापों को नाश करने वाले, सम्पूर्ण वेदोक्त को ७व प्रकारसे सुनकर शंतनुपुत्र भीष्मपितामह से फिर पूछते भये ॥ ३ ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम् ।
स्तुवन्तः कंकमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ॥ ४

अर्थ—राजा युधिष्ठिरने पूछा कि हे महाराज ! संसार म एक सर्वेश्वर सर्वशक्तिमान् देवता कौन है? और सबसे पर एक स्थान कौनसा है? (जहां हृदयके दुर्विचार और संशय मिट जाते हैं) और किस देवताके गुण संकीर्तन करैं और किस देवता की कायिकमानसिक पूजा करनेसे मनुष्य कल्याण रूप स्वर्गादि फल को प्राप्त होवैं ॥ ४ ॥

को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः ।
किंजपन्मुच्यतेजंतुर्जन्मसन्सारबन्धनात् ॥५॥

अर्थ--हे महाराज ! सम्पूर्ण धर्मन में कौनसा धर्म आपको परम मन्तव्य है किसके जप करने से प्राणीमात्र जन्ममरण और अविद्यारूप सांसारिक बंधनसे छूट परम गति पाते हैं ॥ ५ ॥

इस प्रकार युधिष्ठिरने भीष्मजी से छः प्रश्न किये अनन्तर भीष्मजी कहने लगे—

भीष्म उवाच ।

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ॥ ६ ॥
तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम् ।
ध्यायन् स्तुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च ॥७॥
अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोक महेश्वरम् ।
लोकाध्यक्षंस्तुवन्नित्यंसर्वदुःखातिगोभवेत् ॥८॥

अर्थ--निरन्तर प्रयत्नवान् पुरुष, स्थावर जंगमके स्वामी,

देवोंके देव, अनन्त पुरुषोत्तम भगवान् की सहस्रनाम से स्तुति करै और उन्हीं अविनाशी सर्वशक्तिमान् की प्रतिदिन पूजा, ध्यान, स्तुति और नमस्कार करता रहै, और आदिमध्यान्त-रहित सर्वव्यापक लोकोंके स्वामी विष्णु भगवान् की नित्य स्तुति करै तो प्राणी कायिक वाचिक मानसिक पापों से छूट मोक्ष पावे ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥

ब्रह्मण्यंसर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिबर्धनम् ।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ॥ ९ ॥

अर्थ--कैसे हैं विष्णु भगवान् ब्रह्मा और ब्राह्मणों के हितकारक, सम्पूर्ण धर्मन के जानने वाले, प्राणीन की यश और कीर्ति के बढ़ानेवाले, लोकों के स्वामी, परमार्थ सत्य, सब चराचर के उत्पत्तिस्थान हैं ॥ ९ ॥

एष मे सर्वधर्माणां धर्मोधिक तमोमतः ।
यद्भक्त्या पुंडरीकाक्षंस्तवैरर्चेन्नरःसदा ॥ १० ॥

अर्थ--सम्पूर्ण वेद लक्षण धर्म में यही धर्म मुझे अधिकतम अभीष्ट है कि, मनुष्य सदा गुणसंकीर्तन करके भक्तिपूर्वक पुंडरीकाक्षकी स्तुति करता रहै क्योंकि, विष्णुपुराण में कहा भी है "ध्यायन् कृते यजन यज्ञैस्त्रेतायां

द्वापरेऽर्चयेत् । यदाप्नोति तदाप्नोति कलौसंकीर्त्य केशवम्'' ॥
जो फल सत्ययुग में ध्यान से, त्रेता में यज्ञादिक से, द्वापर में पूजन से मिलता था सो फल इस कलिकाल में केवल नाम-संकीर्तन से मिलता है ॥ १० ॥

परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः ।
परमं यो महद्ब्रह्म परमंयः परायणम् ॥ ११ ॥

अर्थ--जिसके तेजसे सूर्य, चन्द्र, तारागण, सब ज्योतिष्मान् पदार्थ प्रकाशित हैं, और परम सत्यस्वरूप हैं, परब्रह्म हैं और परायण, अर्थात् परम धाम हैं जहां मोक्ष चाहनेवाले जीवों को अनन्त सुख मिलता है ॥ ११ ॥

पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम् ।
दैवतं देवतानांच भूतानां योऽव्ययः पिता ॥ १२ ॥

अर्थ--पवित्रों को भी पवित्र करनेवाले मंगलपदार्थों के मंगलदाता और ब्रह्मादि देवता के भी पूज्य, उपास्य देवता और चराचर के नियन्ता, कर्ता त्रिकाल के अविनाशी विकार-रहित, सबके रक्षा करनेवाला परमात्मा है केवल विष्णु के ध्यान संकीर्तन में सम्पूर्ण तीर्थादिक का फल है ॥ १२ ॥

यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे ।
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥ १३॥

अर्थ--जिस परमात्मा से कल्प के आदि में सब चराचर स्थावर जंगम उत्पत्ति होते हैं उसी परमात्मा में महाप्रलय के समय सब लीन हो जाते हैं जैसे पानी का बबूला पानी से बनकर पानी में समाय जाता है ॥ १३ ॥

तस्य लोक प्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते ।
विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभयापहम् ॥ १४॥

अर्थ--उसी लोकन के आदिकारण, जगत्पत्ति सर्व व्यापक विष्णु को अशुभ कर्मादि पापन को नाश करनेवाले इस दिव्यसहस्रनाम को एकाग्रचित्तहोकर मुझसे सुन ॥ १५ ॥

यानि नामानि गौणानि विख्यातानिमहात्मनः
ऋषिभिःपरिगीतानितानिवक्ष्यामिभूतये॥१५॥

अर्थ--मंत्रद्रष्टा ऋषियों ने जो प्रभु के नाम प्रभु के गुणनसे गाये हैं उनमें जो अर्थ धर्म काम मोक्ष के देनेवाले प्रसिद्ध नाम सो मैं प्राणीन के हितार्थ कहूं हूं ॥ १५ ॥

ऋषिर्नाम्नां सहस्रस्य वेदव्यासो महामुनिः ।
छंदोऽनुष्टुप् तथा देवो भगवान्देवकीसुतः॥१६॥

अर्थ—महर्षि वेदव्यासजी इस विष्णुसहस्रनाम के ऋषि हैं अनुष्टुप् छंद है और भगवान् देवकी पुत्र श्रीकृष्ण चन्द्र जी देवता हैं ॥ १६ ॥

विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम् ।
अनेकरूपदैत्यान्तं नमामि पुरुषोत्तमम् ॥ १७ ॥

अर्थ—सर्वव्यापक शत्रुन के नाशकर्ता महाविष्णु सबके उत्पत्तिकारण महेश्वर अनेकरूप धारणकर दैत्यनके संहारकर्ता पुरुषोत्तम भगवान्के अर्थ मेरी नमस्कार है ॥ १७ ॥

ॐ अस्यश्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्र माला-मन्त्रस्य श्रीभगवान्वेदव्यासऋषिरनुष्टुप्छन्दः, श्री-कृष्णःपरमात्मादेवता, आत्मयोनिः स्वयंजात इति बीजम्, देवकीनन्दनः स्रष्टेतिशक्तिः, उद्भवःक्षोभणो देव इति परमोमंत्रः, शंखभृन्नन्दकी चक्रीति

कीलकम्, श्रीकृष्णप्रीत्यर्थे सहस्रनामस्तोत्रजपे-विनियोगः ॥

अर्थ—इस विष्णु के दिव्य सहस्रनाम के ऋषि वेद-व्यास हैं, अनुष्टुप्छंद (बत्तीस बत्तीस अक्षर के) श्रीकृष्ण परमात्मा देवता हैं, आत्मयोनिः स्वयं जात यह बीज है, देवकीनन्दनः स्रष्टा यह शक्ति है, उद्भवः क्षोभणोदेव यह परम मन्त्र है, शंख भृन्नन्दकीचक्री यह कीलक है, ऐसे दिव्य सहस्रनाम का मैं श्रीकृष्ण के प्रसन्न करने के हेतु पाठ करूं हूं ॥

अथ अङ्ग न्यासः ।

ॐ शिरसि श्रीवेदव्यासऋषये नमः॥ॐ मुखे अनुष्टुप्छन्दसे नमः ॐ हृदि श्रीकृष्णपरमात्मदेवताये नमः ॥ ॐ सर्वाङ्गशङ्ख भृन्नन्दकी चक्रीति कीलकायनमः ॥

अथ करन्यासः ।

ॐ उद्भवाय अंगुष्ठाभ्यान्नमः ॥ ॐ क्षोभणाय तर्जनीभ्या

नमः ॥ ॐ देवाय मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ उद्भवाय अनामिका-भ्यां नमः ॥ ॐ क्षोभणाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ देवाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥

अथ हृदयादि न्यासः ।

ॐ विश्वंविष्णुर्वषट्कारइतिहृदयाय नमः॥ अमृतांशूद्भवो-भानु रितिशिरसे स्वाहा ॥ ब्रह्मण्योब्रह्मकृद्ब्रह्मेति शिखायै वषट् ॥ सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यइति कवचाय हुं ॥ आदित्यज्योतिरादित्य इति नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ शार्ङ्गधन्वागदाधर इत्स्त्राय फट् ॥

इन तीनों न्यासों का अभिप्राय यह है, कि पाठ करनेवाला यह संकल्प करके पाठ करै, कि मेरे अङ्ग प्रत्यङ्ग सब श्रीकृष्ण के अर्पण हैं और जब अङ्गप्रत्यङ्ग भगवान के अर्पण कर दिये तो चित्त की वृत्ति भी एकाग्र होजाती है ।

अथ ध्यानम् ।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम् ।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम् ॥

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥१॥

अर्थ—शान्त स्वरूप, शेषशायी, नाभि में कमल धारण करनहारे, देवन के देव, विश्व के आधार आकाश के समान व्यापक मेघ के समान नीलवर्ण, शोभायुक्त जिन के अङ्ग लक्ष्मीनाथ कमलनयन, योगीजनों के ध्यान में आने वाले, सम्पूर्ण लोक के नाथ संसारिक भय के दूरकर्त्ता, व्यापक, विष्णु के अर्थ मेरी नमस्कार हैं ॥ १ ॥

ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः ।
भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥ १ ॥
पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमागतिः ।
अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥ २ ॥
योगो योगविदां नेता प्रधान पुरुषेश्वरः ।
नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः ॥ ३ ॥

अर्थ—सर्वत्र बाहर भीतर और जगत् में प्रवेश करने वाले आप विश्व (१) हैं चराचर में व्यापक होने से आप विष्णु

हैं आप यज्ञादि क्रियों के मूलकारण होने से वषट्कार (३) हैं; भूत भविष्यत् वर्तमान तीनों कालों के स्वामी होने से आप भूतभव्यभवत्प्रभु (४) हैं; स्वयं जीवों को उत्पन्न करने से आप भूतकृत् (५) हैं; प्राणियों के धारण पोषण करने से आप भूतभृत् (६) हैं; प्रपंचरूप से संसार को धारण करने से आप भाव (७) हैं; प्राणिन की आत्मा के अंतर्यामी होने से आप भूतात्मा (८) हैं; आप प्राणियों को प्रेरणा करते और उनकी वृद्धि करते हैं इससे भूतभावन (९) हैं; आत्माओं के पवित्र करने से आप पूतात्मा (१०) हैं; कार्य कारण से परे नित्य शुद्धज्ञान स्वभाव परम-आत्मा होने से परमात्मा (११) हैं; मुमुक्षु जहां से फिर नहीं आते हैं; क्योंकि गीता जी में भी कहा है "मामुपेत्य तु कौंतेय पुनर्जन्म न विद्यते" इससे आप मुक्तानांपरमगति (१२) हैं, अविनाशी होने से आप अव्यय (१३) हैं; नवद्वार के पुर रूपी देह में निवास करने से आप पुरुष (१४) हैं; सब पदार्थों को साक्षात् देखने से आप साक्षी (१५) हैं; शरीरों को जानने से आप क्षेत्रज्ञ (१६) हैं; किसी काल में क्षय नहीं

होते इससे **अक्षर** (१७) हैं; जीव और परमात्मा के योग से आप **योग** (१८) हैं; योगियों के प्रेरक होने से आप **योगविदांनेता** (१९) हैं; आप प्रकृति और पुरुष के ईश्वर हैं इससे **प्रधानपुरुषेश्वर** (२०) हैं; मनुष्यों के पाप कर्मादि दूर करने के हेतु आप **नृसिंहवपु** (२१) हैं; वक्षःस्थल में लक्ष्मीके निकट निवाससे आप **श्रीमान्** (२२) हैं; सुन्दर केशों के होने से अथवा ब्रह्मा, विष्णु महेश के स्वामी होने से अथवा केशीनामा दैत्य के मारने से आप **केशव** (२३) हैं; पुरुषों से उत्तम होने से आप **पुरुषोत्तम** (२४) हैं; ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः ।
सम्भवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः ॥ ४ ॥

अर्थ—सबकाल और सब जगह और सबके उत्पत्तिकर्ता होने से आप **सर्व** (२५) हैं; दुःख को दूर करने और सुख देने से आप **शर्व** (२६) हैं; कल्याण रूप होने से आप

शिव हैं; अचल और व्यापक होने से आप **स्थाणु** (२८) हैं; आप चराचर के आदि कारण हैं इससे **भूतादि** (२९) हैं; आप अक्षय भंडार हैं, इससे **निधिरव्यय** (३०) हैं गर्भादि क्लेशों से रहित धर्म की रक्षा के निमित्त अपनी इच्छा से प्रकट होते हैं; इससे आप **संभव** (३१) हैं; सम्पूर्ण फलों के दाता होने से आप **भावन** (३२) हैं; संसार को धारण करने से आप **भर्ता** (३३) हैं; आपही से सब वस्तु जन्म लेती हैं, इससे आप **प्रभव** (३४) हैं; सम्पूर्ण क्रियान में आप समर्थ हैं, इससे **प्रभु** (३५) हैं उपाधि रहित ऐश्वर्य के होनेसे आप **ईश्वर** (३६) हैं; ॥४॥

स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः।
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः॥५॥

अर्थ—आप स्वयम् प्रकट होते हैं इससे **स्वयम्भू** (३७) हैं; कल्याण करने वाले हैं, इससे आप **शम्भु** (३८) हैं; अनेक शरीरों में आप भिन्न दृष्टि आते हैं, पर

वास्तव में एक ही हैं, इससे आप **आदित्य** (३९) हैं; भक्तों पर आप कोमल कमल सी दृष्टि से देखते हैं, इससे आप **पुष्कराक्ष** (४०) हैं; आपका वेद रूप बड़ा शब्द है, इससे आप **महास्वन** (४१) हैं; जन्म और विनाश से रहित होने के कारण आप **अनादिनिधन** (४२) हैं; अनन्त रूप से विश्व को धारण करते हैं, इससे **धाता** (४३) हैं; शेषादि पृथ्वी के धारण करने वालों को भी धारण करने से **विधाता** (४४) हैं; ब्रह्मादिकों से आप उत्कृष्ट हैं, इससे आप **धातुरुत्तम** (४५) हैं; ॥ ५ ॥

अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः ।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥ ६ ॥

अर्थ—आप प्रमाणरहित हैं, इससे **अप्रमेय** (४६) हैं; इन्द्रियों के स्वामी हैं इससे आप **हृषीकेश** (४७) हैं; जगत् के उत्पत्ति हेतु कमल आपकी नाभि में है, इससे आप **पद्मनाभ** (४८) हैं; देवतानके स्वामी होनेसे आप **अमरप्रभु** (४९) हैं; यह विश्व आपकी रचना है, इससे आप

विश्वकर्मा (५०) हैं आप मनन करने के योग्य हैं इससे आप मनु (५१) हैं; सब पदार्थों में आपही का प्रकाश है, इससे आप त्वष्टा (५२) हैं; अति स्थूल विश्व रूप होने से आप स्थविष्ठ (५३) हैं; आप त्रिकाल में स्थिर इससे स्थविर (५४) हैं; सब काल और सब वस्तुन में अचल होने से आप ध्रुव (५५) हैं; ॥ ६ ॥:—

अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः ।
प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मंगलं परम् ॥ ७ ॥

अर्थ—पञ्चेन्द्रिय करके ग्राह्य नहीं इससे अग्राह्य कहते हैं, क्योंकि, श्रुतिभी कहै है. "यतो वाचो निवर्तते अप्राप्य मनसा सह" मन और वाणी आपको ग्रहण नहीं कर सकीं इससे आप अग्राह्य (५६) हैं; भूत भविष्य वर्तमान आपके निकट एकसा है, इससे आप शाश्वत (५७) हैं; श्यामवर्ण होने से आप कृष्ण (५८) हैं; (कृषि भूवाचक है, और ण निवृत्ति वाचक है, इनके संयो-

ग से आप परब्रह्म **कृष्ण** हैं;) पापियों पर लाल नेत्र करने से आप **लोहिताक्ष** (५९) हैं; प्रलय काल में सबका नाश करने से आप **प्रतर्दन** (६०) हैं; ज्ञान और ऐश्वर्यादि षड्गुण सम्पन्न होने से आप **प्रभूत** (६०) हैं; आपका तीनों लोकन में प्रकाश है, इससे आप **त्रिककुब्धाम** (६२) हैं, पवित्रों को भी पवित्र करने से आप **पवित्र** (६३) हैं; नित्य मङ्गल रूप जो ब्रह्मानन्द उससे परे होने से आप **मंगलपर** (६४) हैं; ॥ ७ ॥:—

ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः ।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः ॥ ८ ॥

अर्थ—प्राणीमात्र को वशी भूत रखने से आप **ईशान** (६५) हैं; आप प्राणों को देने वाले हैं और काल रूप धारण कर प्राणों को हरने वाले हैं इससे आप **प्राणद** (६६) हैं; प्राणन के भी प्राण होने से आप **प्राण** (६७) हैं; सबमें बड़े होने से आप **ज्येष्ठ** (६८) हैं; सबसे अधिक

स्तुति के योग्य होने से आप **श्रेष्ठ** (६९) हैं; प्रजा के पति होने से आप **प्रजापति** (७०) हैं; प्रकाश आपके गर्भ में है, इससे आप **हिरण्यगर्भ** (७१) हैं; पृथ्वी आपके भीतर है, इससे आप **भूगर्भ** (७२) हैं; लक्ष्मी के पति हैं, इससे अथवा मधु (विद्या) से जानने के योग्य अथवा मौनसे ध्यान करने के योग्य होने से भी आप **माधव** (७३) हैं; मधुदैत्यके मारने से आप **मधुसूदन** (७४) हैं; ॥८॥:—

ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः ।
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥ ९ ॥

अर्थ—सर्वशक्तिमान् होनेसे आप **ईश्वर** (७५) हैं; शूरवीर होने से आप **विक्रमी** (७६) हैं दिव्य धनुषधारी होने से। क्योंकि "रामः शस्त्रभृतामहम्" आपका बचन है कि धनुषधारियों में मैं रामहूं। आप **धन्वी** (७७) हैं; आपको स्वाभाविक ज्ञान है, और बहुत ग्रन्थ धारण करने की शक्ति है इससे आप **मेधावी** (७८) हैं बिना गरुड़ ही आप विश्व भर में जाते हैं इससे आप **विक्रम** (७९) हैं;

सब जगत को आच्छादन करने से आप क्रम (८०) हैं; आप से उत्तम कोई नहीं आपका ज्ञान अत्युत्तम है, इससे आप अनुत्तम (८१) हैं; आपको कोई धर्षणा नहीं दे सक्ता इससे आप दुराधर्ष (८२) हैं; प्राणियों के किये काम को जानते हैं, इससे आप कृतज्ञ (८३) हैं; कार्य रूप होने से आप कृति (८४) हैं आपके अनेक जीवात्मा हैं अर्थात आप अपनी महिमा में प्रतिष्ठित हैं, इससे आप आत्मवान् (८५) हैं; ॥९॥:—

सुरेशः शरणं शर्म्म विश्वरेताः प्रजाभवः।
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥१०॥

अर्थ—देवताओं के स्वामी होने से आप सुरेश (८६) हैं; दुःखियों के दुःख दूर करने से आप शरण (८७) हैं; परमानन्द रूप होने से शर्म्म (८८) हैं; विश्व के आदि कारण होने से आप विश्वरेता (८९) हैं; सब प्रजा आप से उत्पन्न हुई इससे आप प्रजाभव (९०) हैं; प्रकाशरूप हैं इससे आप अहः (९१) हैं; काल रूप करके

स्थिति होने से आप संवत्सर (९२) हैं; व्याल की नांई ग्रहण नहीं किये जाओ इससे व्याल (९३) हैं; विश्वास करने वाले को आप विश्वास देते हैं इससे प्रत्यय (९४) हैं; साक्षात रूप सबको देखने से आप सर्वदर्शन (९५) हैं ॥ १० ॥:—

अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः ।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः ॥ ११ ॥

अर्थ—आप पैदा हुए न होंय इससे अज (९६) हैं; ब्रह्मादि के ईश्वर होने से आप सर्वेश्वर (९७) हैं; एक रस होने से आप सिद्धि (९८) हैं; स्वर्गादि प्राप्त होने से आप सिद्ध रूप हैं इससे सिद्ध (९९) हैं; सब जीवों के आदिकारण होने से सर्वादि (१००) हैं; नाशरहित होने से अच्युत (१०१) हैं; सब कामनाओं के वर्षा करने वाले और पृथ्वी को जल से उधारनेवाले हैं इससे वृषाकपि (१०२) हैं; आपकी आत्मा का कोई प्रमाण नहीं कर सका इससे

अमेयात्मा (१०३) हैं; सब संबंधसे पृथक् और योग से ग्राह्य इससे आप सर्वयोगविनिःसृत (१०४) हैं; ॥ ११॥:-

वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मा संमितः समः।
अमोघः पुंडरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः ॥ १२ ॥

अर्थ-- सब प्राणियों में आप वासकरते हैं और आप में सब वासकरते हैं इससे वसु (१०५) हैं; रागद्वेषादि क्लेशों से निष्पाप और प्रशस्त मन हैं इससे वसुमना (१०६) हैं श्रुति कहती है "सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म" आप का ज्ञान सत्य है, इससे सत्य (१०७) हैं; सब में समान बुद्धि, और समान आत्मा होने से आप समात्मा (१०८) हैं; सब में अलग अलग हैं, और एक भी हैं, इससे संमित (१०९) हैं; सब कालों में सब प्रकार के विकारों से रहित और लक्ष्मीसहित हैं, इसमें सम (११०) हैं; पूजा स्तुति स्मरण से अमोघ फल देते हैं, इससे अमोघ (१११) हैं कमलरूप हृदय में योगीजनों से पूजित हैं और कमल से नेत्र हैं इससे आप पुंडरीकाक्ष (११२) हैं धर्म ही है क

आपका इससे वृषकर्मा (११३) हैं, धर्म ही है आकृति आपकी इससे वृषाकृति (११४) हैं क्योंकि "धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे" आप का वाक्य है कि धर्म के हेतु मैं युगयुग में अवतार धारण करता हूं ॥ १२ ॥:—

रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः ।
अमृतःशाश्वतः स्थाणुर्वरारोहोमहातपाः॥१३॥

अर्थ--प्रलय काल में सब का संहार और सब का दुःख दूर करते इससे आप रुद्र (११५) हैं; "सहस्रशीर्षा पुरुषः" ऐसी श्रुति है आप के असंख्य शिर हैं इससे बहुशिरा (११६) हैं, समस्त लोकों को धारण करने से बभ्रु (११७) हैं; विश्व आपही से उत्पन्न हुआ इससे विश्वयोनि (११८) हैं; आप ही हैं कल्याण कारक और सुनने के योग्य हैं नाम आप के इससे शुचिश्रवा (११९) हैं; मृत्यु से आप अलग हैं इससे अमृत (१२०) हैं; निरन्तर अचल स्थिति होने से शाश्वतस्थाणु (१२१) हैं; श्रेष्ठ गोद होनेसे अथवा आपको प्राप्त होकर फिर जन्म मरण से रहित होजाते

हैं इससे वरारोह (१२२) हैं; बड़ा ऐश्वर्य और तपोज्ञान होने से आप महातपा (१२३) हैं; ॥ १३ ॥:—

सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः ।
वेदो वेदविदव्यंगो वेदांगो वेदवित्कविः ॥ १४ ॥

अर्थ—सबजगह आपकी गमनशक्ति है इससे सर्वग (१२४) हैं; सबको जानते हैं इससे आप सर्ववित् (१२५) हैं सूर्यादिमें भी आपका प्रकाश है इससे भानु (१२६) हैं; आप के रणोद्योग से दुष्ट भाग जाते हैं इससे आप विश्वक्सेन (१२७) हैं, मनुष्यों का संहार करने से आप जनार्दन (१२८) हैं, वेद आपही का सत्य ज्ञान है इससे आप वेद (१२९) हैं वेद को जानने से आप वेदवित् (१३०) हैं, समस्त ज्ञान युक्त होने से अव्यंग (१३१) हैं, वेद आपके अंग हैं, इससे आप वेदांग (१३२) हैं. वेदों को विचारने से आप वेदवित् (१३३) हैं, कामना पूर्ण करने से आप कवि (१३४) हैं; ॥ १४ ॥:—

लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्म्माध्यक्षः कृताकृतः ।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥ १५ ॥

अर्थ--सब लोकों को आप ज्ञानदृष्टि से देखते हैं इससे **लोकाध्यक्ष** (१३५) हैं; देवताओं के समद्रष्टा होने से आप **सुराध्यक्ष** (१३६) हैं; अनुरूप फल देने को साक्षात् धर्म अधर्म को देखने से आप **धर्माध्यक्ष** (१३७) हैं; प्रवृत्ति और निवृत्ति मार्ग के नियन्ता होनेसे **कृताकृत** (१३८) हैं; ब्रह्मा त्रिकाल और अखिल जीवसृष्टि के बढाने की विभूति विष्णु सब जीव स्थिति के हेतु हैं इससे आप **चतुरात्मा** (१३९) हैं; संकर्षण, वासुदेव, प्रद्युम्न, अनिरुद्धि ये चार व्यूह हैं, इससे आप **चतुर्व्यूह** (१४०) हैं, नृसिंह अवतार में चार डाढें धारण करने से **चतुर्दंष्ट्र** (१४१) हैं, चारों वेद आप के भुजा हैं इससे आप **चतुर्भुज** (१४२) हैं; ॥ १५:—

भ्राजिष्णुर्भोजनंभोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः ।
अनघोविजयोजेताविश्वयोनिःपुनर्वसुः॥१६॥

अर्थ प्रकाशमान होने से भ्राजिष्णु (१४३) हैं; माया है भोजन आपकी इससे भोजन (१४४) हैं; जीवरूप धारण करने से आप भोक्ता (१४५) हैं; दुष्टों के तिरस्कार को सहने से सहिष्णु (१४६) हैं; जगत् के आदि में आप ही हैं इससे जगदादिज (१४७) हैं; पापरहित होने से अनघ (१४८) हैं; संसार को वश करने से आप विजय (१४९) हैं; स्वाभाविक जिसमें सब जीव लीन होजाते हैं इससे आपजेता (१५०) हैं; विश्व के आदिकारण होने से विश्वयोनि (१५१) हैं; क्षेत्ररूप से वारंबार शरीर में निवास करने से पुनर्वसु (१५२) हैं; ॥ १६ ॥:—

उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः ।
अतीन्द्रः संग्रहः सर्गोधृतात्मानियमोयमः॥ १७॥

अर्थ—इंद्र के छोटे भाई और ऊपर होने से आप उपेन्द्र (१५३) हैं? वामन रूप से बलि की याचना की इससे आप वामन (१५४) हैं वामन रूप से त्रिलोकी को नापा इससे प्रांशु (१५५) हैं अक्षयफल के देने से आप अमोघ (१५६)

हैं; पूजक और उपासकों को शुद्धि करनेसे आप शुचि (१५७) हैं; पूर्ण बल होने से आप ऊर्जित (१५८) हैं, ज्ञानैश्वर्यादि गुणों में इन्द्र से आप परे हैं इससे आप अतीन्द्र (१५९) हैं, प्रलय काल में सबको समेट लेते हैं, इस से आप संग्रह (१६०) हैं, सृष्टि को रचने से आपसर्ग (१६१)हैं,जन्मादिरहित एकरस आत्मा होनेसे आप धृतात्मा (१६२) हैं सूर्यचन्द्रादि चराचर अपने अपने धर्म पर लगाने से आप नियम (१६३) हैं, पापियों को दंड देने से आप यम (१६४) हैं, ॥ १७ ॥

वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः ।
अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहोमहाबलः॥१८॥

अर्थ—सबके शुभाशुभ को जानने से आप वेद्य (१६५) हैं; सब विद्याओं को जानने से आप वैद्य (१६६) हैं; सब काल में प्रकट होने से सदायोगी (१६७) हैं; दुष्टों के वध करने से वीरहा (१६८) हैं; माया और लक्ष्मी के पति होने से आप माधव (१६९) हैं; परा प्रीति को

पैदा कराने से आप **मधु** (१७०) हैं, पञ्च ज्ञानेन्द्रियों से आ दूर हैं इससे **अतीन्द्रिय** (१७१) हैं; माया रहित भी बहुत माया करते हो इससे **महामाय** (१७२) हैं; जगत् की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय में बहुत उत्साह होने से आप **महोत्साह** (१७३) हैं; अति पराक्रमी होने से आप **महाबल** (१७४) हैं; ॥ १८ ॥ ॥:—

महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः
अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥१९॥

अर्थ—बहुत बुद्धिमान् होने से आप **महाबुद्धि** (१७५) हैं; संसार में उत्पन्न करने की शक्ति होने से आप **महावीर्य** (१७६) हैं अति सामर्थ्यवान होने से **महाशक्ति** (१७७) हैं भीतर बाहर अति प्रकाश होने से आप **महाद्युति** (१७८) हैं; अप्रमाण शरीर होने से आप **अनिर्देश्यवपु** (१७९) हैं; ऐश्वर्यवान होने से आप **श्रीमान्** (१८०) हैं; जीव आपकी बुद्धि और आत्मा को नहीं जान सक्ते इससे आप **अमेयात्मा** (१८१) हैं; अमृत के हेतु मन्दराचल के उठाने से अथवा

गो गोपाल की रक्षा के निमित्त गोवर्द्धन उठाने से आप **महाद्रिधृक्** (१८२) हैं; ॥ १९ ॥:—

महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतांगतिः ।
अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदांपतिः ॥ २०

अर्थ—बड़े धनुर्धर होने से आप **महेष्वास** (१८३) हैं; पृथ्वी के पति होने से **महीभर्ता** (१८४) हैं; वक्षःस्थल में लक्ष्मी के होने से **श्रीनिवास** (१८५) हैं; वेदानुयायियों की गति हैं इससे आप **सतांगति** (१८६) हैं, आपकी गति को कोई नहीं रोक सक्ता इससे आप **अनिरुद्ध** (१८७) हैं; देवतान को आनन्द देनेवाले हैं इससे आप **सुरानन्द** (१८८) हैं; पृथ्वी, गौ, वेद-वाणी के रक्षक होने से आप **गोविन्द** (१८९) हैं वेदार्थज्ञाता ऋषियों के स्वामी होने से आप **गोविदां प-ति** (१९०) हैं ; ॥ २० ॥:—

मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः ।
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः ॥ २१ ॥

अर्थ—बहुत तेजस्वी होने से आप मरीचि (१९१) हैं; गर्व को दमन करने से आप दमन (१९२) हैं; सब शरीर में व्याप्त होने से आप हंस (१९३) हैं पक्षियों में गरुड़ आपको विभूति है इससे सुपर्ण (१९४) हैं; शेष रूप होने से आप भुजगोत्तम (१९५) हैं; प्रकाश आपकी नाभि में है इससे हिरण्यनाभ (१९६) हैं, नर नारायण रूप धारण करके सुन्दर तप करने से सुतपा (१९७) हैं; नाभि में; कमल होने से पद्मनाभ (१९८) हैं; ब्रह्मा रूप से प्रजा को उत्पन्न करने से प्रजापति (१९९) हैं; ॥ २१ ॥:—

अमृत्युः सर्वदृक्सिंहः संधाता संधिमान् स्थिरः ।
अजोदुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥ २२ ॥

अर्थ—विनाश न होने से अमृत्यु (२००) हैं; स्वाभाविक प्राणियों के कर्मों को देखने से सर्वदृक् (२०१) हैं; पापों को नाश करने से आप सिंह (२०२) हैं, प्रलय काल में सब को इकट्ठा कर लेने से आप संधाता (२०३) हैं

फल के भोक्ता होने से **संधिमान्** (२०४) हैं; सदा एक रस होने से **स्थिर** (२०५) हैं; कभी जन्म नहीं लेते इससे **अज** (२०६) हैं; दैत्यादिक आप पर क्रोध नहीं करसक्ते इससे **दुर्मर्षण** (२०७) हैं श्रेष्ठ शिक्षा देने से आप **शास्ता** (२०८) हैं; सत्य ज्ञानादि लक्षण होने से आप **विश्रुतात्मा** (२०९) हैं राक्षसों को नाश करने से आप **सुरारिहा** (२१०) हैं; ॥ २२ ॥:—

गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः ।
निमिषोऽनिमिषःस्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ॥२३॥

अर्थ सब विद्याओं के उपदेष्टा और सबके पिता होने से आप **गुरु** (२११) हैं; ब्रह्मविद्या के उपदेष्टा होने से **गुरुतम** (२१२) हैं; सब कामनाओं के आस्पद अथवा प्रकाशरूप होने से आप **धाम** (२१३) हैं; अविचल नियम होने से आप **सत्य** (२१४) हैं; अवितथ पराक्रम होने से आप **सत्यपराक्रम** (२१५) हैं; योगनिद्रामें नेत्र बन्द करने से **निमिष** (२१६) हैं; नित्य चैतन्य रूप होने से **अनिमिष** (२१७) हैं; वैजयंती

माला के धारण करने से स्रग्वी (२१८) हैं; वाणी के पति और उदारबुद्धि होने से वाचस्पतिरुदारधी (२१९) हैं: ॥ २३ ॥:—

अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान् न्यायो नेता समीरणः।
सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात्॥२४॥

अर्थ—मुमुक्षओं को अचल पद पर पहुंचाने से अग्रणी हैं; (२२०) हैं; जीवों के नियन्ता होने से ग्रामणी (२२१) हैं; कांतिमान् होने से श्रीमान् (२२२) हैं; पाप पुण्य का यथार्थ फल देने से न्याय (२२३) हैं; जगत् को अपने अपने कार्य में लगाने से नेता (२२४) हैं; पवनरूप से प्राणियों को जीवित रखने से समीरण (२२५) हैं; असंख्य शिर होने से सहस्रमुर्द्धा (२२६) हैं; विश्व को आत्मा होने से विश्वात्मा (२२७) हैं; असंख्य आंख होने से सहस्राक्ष (२२८) हैं; असंख्य पद होने से सहस्रपात् (२२९) हैं; ॥ २४ ॥:—

आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः संप्रमर्दनः ।
अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः ॥ २५ ॥

अर्थ—संसार को अपनी माया में भुला रक्खा है इससे आवर्तन (२३०) हैं; संसार के बन्धनों से आप अलग हैं इससे निवृत्तात्मा (२३१) हैं; चारों ओरसे जीवों को मायामें घेर रखनेसे संवृत (२३२) हैं; रुद्ररूपसे प्रजाका मर्दन करनेसे संप्रमर्दन (२३३) हैं; सूर्यरूप से दिन को प्रकट कर कालचक्र से घुमाते हैं इससे आप अहःसंवर्तक (२३४) हैं; अग्निरूप होने से वह्नि (२३५) हैं; श्वासरूप होने से अनिल (२३६) हैं; पृथ्वी को धारण करने से धरणीधर (२३७) हैं; ॥२५॥

सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृक् विश्वभुग्विभुः ।
सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः ॥ २६ ॥

अर्थ--अपचारपरभी प्रसन्न होने से आप सुप्रसाद (२३८) हैं; सदा प्रसन्न रहने से प्रसन्नात्मा (२३९) हैं; संसार को धारण करने से विश्वधृक् (२४०) हैं; विश्वका पालन करने से आप विश्वभुक् (२४१) हैं; ब्रह्मादि अनेक

रूप धारण करने से **विभु** (२४२) हैं; सत्पुरुषोंका सत्कार करने से **सत्कर्ता** (२४३) हैं, सत्पुरुषों से पूजे जातेहैं इससे **सत्कृत** (२४४ हैं, परकार्यों को साधन करने से आप **साधु** (२४५) हैं, सबको संहार करने से **जह्नु** (२४६) हैं, पंचतत्वं में निवास करने से **नारायण** (२४७) हैं, सब के नियन्ता होने से अथवा नररूप धारण करने से. आप **नर** (२४८) हैं, ॥ २६ ॥:—

असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः ।
सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः २७

अर्थ--अनगिनती नाम गुण होने से **असंख्येय** (२४९) हैं; आत्मा का प्रमाण न होने से आप **अप्रमेयात्मा** (२५०) हैं; अधिकगुणसंपन्न होने से **विशिष्ट** (२५१) हैं; श्रेष्ठों का पालन करते और पवित्र रखते इससे **शिष्टकृच्छुचि** (२५२) हैं; सब कामनाओंसे परिपूर्ण होनेसे **सिद्धार्थ** (२५३ हैं; सत्यप्रतिज्ञ होनेसे आप **सिद्धसंकल्प** (२५४) हैं; सिद्धकर्मका फल देनेसे **सिद्धिद** (२५५ ; हैं सिद्ध

पदार्थों के साधक होने से आप सिद्धिसाधन (२५६) हैं॥ २७ ॥:—

वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः।
वर्धनोवर्धमानश्चविविक्तः श्रुतिसागरः॥ २८॥

अर्थ--धर्मरूप दिवस का प्रकाश करने से आप वृषाही (२५७) हैं; भक्तोंपर कामनाओं की वर्षा करने से आप वृषभ (२५८) हैं; चराचर में व्याप्त होने से विष्णु (२५९) हैं; आपके पास धर्म से पहुँचा जाय यासें आप वृषपर्वा (२६०) हैं, धर्मरूप उदर होने से आप वृषोदर (२६१) हैं, प्रजा को बढानेसें आप वर्धन (२६२) हैं, आप बढ़ते हैं और चेतनों को बढ़ाते हैं इससे आप वर्धमान (२६३) हैं इस प्रकार बढ़ने बढ़ाने पर भी सबसे अलग हैं इससे आप विविक्त (२६४) हैं; श्रुति आपही से निकली और आप हो में मिलती हैं इससे आप श्रुतिसागर (२६५) हैं; ॥ २८ ॥-

सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः।
नैकरूपो बृहद्रूपःशिपिविष्ट प्रकाशनः ॥२९॥

अर्थ—जगत् की रक्षा करने वाली आपकी सुन्दर भुजा हैं इससे आप **सुभुज** (२६६) हैं; ध्यान में कठिनाई से आने पर आप **दुर्द्धर** (२६७) हैं; ब्रह्मवाणी आपके मुखसे निकली इस से आप **वाग्मी** (२६८) हैं; इन्द्रों के इन्द्र होने से आप **महेन्द्र** (२६९) हैं; धन के दाता होने से **वसुद** (२७०) हैं; माया से स्वरूप को छिपाने से अथवा निर्मल हृदयमें वास करने से आप **वसु** (२७१) अनेक रूप होने से आप **नैकरूप** (२७२) हैं; बाराहादि बड़े बड़े रूप धारण करने से आप **बृहद्रूप** (२७३) हैं; सब जीवों में यज्ञरूप परमात्मा यज्ञ के हेतु रहते हैं इससे **शिपिविष्ट** (२७४) हैं; सबको प्रकाश करते हैं इससे **प्रकाशन** (२७५) हैं; ॥ २९ ॥—

ओजस्तेजो द्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः ।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मंत्रश्चन्द्रांशुभास्करद्युतिः॥३०॥

अर्थ प्राण बल शौर्यादि गुण और कांति को धारण करने से **ओजस्तेजोद्युतिधर** (२७६) हैं; प्रकाश रूप आत्मा होने से **प्रकाशात्मा** (२७७) हैं; सूर्य्य रूप से विश्व को तपाने से

आप **प्रतापन** (२७८) हैं; धर्म ज्ञान वैराग्य करके युक्त होने से **ऋद्ध** (२७९) हैं; स्पष्ट,उदात्त,ओंकाररूप होने से **स्पष्टाक्षर** (२८०) हैं; ऋक्, यजुः सामलक्षण मन्त्र रूप होने से आप **मंत्र** (२८१) हैं, तापत्रय से भस्मीभूत प्राणियों को चन्द्र-किरणवत् शीतल करने से आप **चन्द्रांशु** (२८२) हैं, सूर्य्यवत् प्रकाशित होने से आप **भास्करद्युति** (२८३) हैं, ॥ ३० ॥ :—

अमृतांशूद्भवो भानुः शशिविन्दुः सुरेश्वरः ।
औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः ॥ ३१ ॥

अर्थ—समुद्र मथन में चन्द्रमा आप से प्रकट हुवा इससे आप **अमृतांशूद्भव** (२८४) हैं, सूर्यवत् सबमें विद्यमान होने से आप **भानु** (२८५) हैं, चन्द्रवत् औषधियों को रस पहुंचाने से आप **शशिबिन्दु** (२८६) हैं, देवताओं के ईश्वर होने से **सुरेश्वर** (२८७) हैं, संसार रूपी रोग की औषध होने से आप **औषध** (२८८) हैं, संसार रूपी समुद्र को तरने के हेतु आप सेतु हैं इससे **जगतः सेतु** (२८९)

हैं, धर्म ज्ञानादि गुण और पराक्रम सत्य होने से आप **सत्यधर्मपराक्रम** (२९०) हैं; ॥ ३१ ॥:—

भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः ।
कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः ३२।

अर्थ—भूत, भविष्यत्, वर्तमान तीनों कालों के स्वामी होने से **भूतभव्यभवन्नाथ** (२९१) हैं पवन रूप होने से आप **पवन** (२९२) हैं; पवित्र करने वाले होने से आप **पावन** (२९३) हैं; कभी तृप्ति न होने से **अनल** (२९४) हैं; मुमुक्षु और भक्तों के काम को नाश करने से आप **कामहा** (२९५) हैं; कामियों की कामना पूर्ण करने से अथवा प्रद्युम्न के पिता होने से आप **कामकृत्** (२९६) हैं अभि रूप तम होने से **कांत** (२९७) हैं; इच्छाओं के पूर्ण करने से **काम** (२९८) हैं; भक्तों की कामना पूर्ण करने से **कामप्रद** (२९९) हैं, सामर्थ्यवान होने से **प्रभु** (३००) हैं; ॥ ३२ ॥:—

युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः ।
अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित् ॥३३॥

अर्थ—काल भेद करके युगों के करने से युगादिकृत् (३०१) हैं; युगों के बारम्बार करने से युगावर्त (३०२) हैं; अनेक माया रूप होने से नैकमाया (३०३) हैं; प्रलय में सबको समेट कर अपने में मिलाने से महाशन (३०४) हैं; बुद्धि आदि इन्द्रियों से नहीं जाने जाते इससे अदृश्य (३०५) हैं; अप्रकट रूप होने से अव्यक्तरूप (३०६) हैं; सहस्रों को जीतने से सहस्रजित् (३०७) हैं; क्रीडा करके अनन्त विश्व को जीतने से अनन्तजित् (३०८) हैं; ॥ ३३ ॥ः—

इष्टो विशिष्टः शिष्टेष्टः शिखंडी नहुषो वृषः।
क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥३४॥

अर्थ--यज्ञमें पूजा होने से आप इष्ट (३०९) हैं; श्रेष्ठ होने से आप विशिष्ट (३१०) हैं; श्रेष्ठ विद्वानों के इष्ट होने से शिष्टेष्ट (३११) हैं; मोरपक्षधारी गोपवेष होने से आप शिखंडी (३१२) हैं, अपनी माया करके बांधने से नहुष (३१३) हैं, धर्मरूप होने से वृष (३१४) हैं, क्रोध को नाश

करने से **क्रोधहा** (३१५) हैं, दुष्टोंपर क्रोध करने से **क्रोधकृत्** (३१६) हैं, जगत् के रचने से **कर्ता** (३१७) हैं; सब विश्व में बाहु होने से आप **विश्वबाहु** हैं, पूजा अथवा पृथ्वी को ग्रहण करने से **महीधर** (३१९) हैं, ॥ ३४ ॥:—

अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः ।
अपां निधिरधिष्ठानम[प्रमत्तः] प्रतिष्ठितः ॥ ३५ ॥

अर्थ--विकाररहित [होने] से **अच्युत** [(३२०)] जगत् के उत्पत्त्यादि कर्म से विख्यात होने से **प्रथित** (३२१) हैं, जीवन के वायुरूपी प्राण होने से आप **प्राण** (३२२) हैं, असुरों के प्राण लेते हैं इससे **प्राणद** (३२३) हैं, इन्द्र के छोटे भ्राता होने से **वासवानुज** (३२४) हैं, आप कहते हो "**सरसामस्मि सागरः**" नदियों में सागर हूं सो आप **अपांनिधि** (३२५) हैं, गीता में आप ने कहा है "**मत्स्थानि सर्वभूतानि**" सब प्राणी आप में निवास करते हैं इससे आप **अधिष्ठान** (३२६) हैं, सब को कर्मानुसार

फल देनेसे **अप्रमत्त** (३२७) हैं, अपनी महिमा में प्रतिष्ठित होने से आप **प्रतिष्ठित** (३२८) हैं; ॥ ३५ ॥:—

स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः ।
वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरंदरः ॥ ३६ ॥

अर्थ--अमृतरूप करके वर्षाने से और वायुरूप करके सोखने से आप **स्कन्द** (३२९) हैं, धर्म को धारण करने से **स्कन्दधर** (३३०) हैं, सब जीवों के अग्रगण्य होने से आप **धुर्य** (३३१) हैं, मनवांछित फल देने से आप **वरद** (३३२) हैं, वायु को चलाने से आप **वायु-वाहन** (३३३) हैं, सब प्राणियों के वासस्थान होने अथवा वसुदेव के पुत्र होने से आप **वासुदेव** (३३४) हैं; चन्द्र सूर्यादि रूप से आप जगत् को प्रकाशित करते हैं इससे **बृहद्भानु** (३३५) हैं; सब के आदि कारण होने से **आदि-देव** (३३६) हैं; देवताओं के शत्रु, पुरु के मारने से आप **पुरंदर** (३३७) हैं; ॥ ३६ ॥:—

अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः ।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥३७॥

अर्थ—शोक रहित होने से **अशोक** (३३८) हैं; संसार सागर से तारते हैं अतएव **तारण** (३३९) हैं, गर्भ, जन्म, जरा, मृत्यु के भय से छुड़ाते हैं इससे **तार** (३४०) हैं; पराक्रमी होने से **शूर** (३४१) हैं; शूरसेन के कुलमें होने से **शौरि** (३४२ हैं, जीवजंतुओं के ईश्वर होने से **जनेश्वर** (३४३) हैं; आत्मत्वकरके सबके अनुकूल होने से **अनुकूल** (३४४) हैं; धर्म की रक्षा के निमित्त अनेक जन्म लेने से **शतावर्त** (३४५) हैं; कमल हाथ में होने से **पद्मी** (३४६) हैं; कमल के से नेत्र होने से **पद्मनिभेक्षण** (३४७) हैं;॥३७॥

पद्मनाभोऽरविंदाक्षः पद्मगर्भो शरीरभृत् ।
महर्द्धिऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः॥३८॥

अर्थ—पद्मनाभी में स्थित होने से **पद्मनाभ** (३४८) हैं; कमल से नेत्र हैं इससे **अरविंदाक्ष** (३४९) हैं; हृदय रूपी कमल में योगियों करके उपास्य होने से **पद्मगर्भ** (३५०) हैं;

अन्नादिक से प्राणियों का पोषण करने से अथवा स्वयं शरीर धारण करने से **शरीभृत्** (३५१) हैं; बहुत ऐश्वर्यवान् होनेसे **महर्द्धि** (३५२) हैं; प्रपंचरूप से बढ़े इससे **ऋद्ध** (३५३) है; पुरातन आत्मा होने से **वृद्धात्मा** (३५४) है; विशाल नेत्र होने से **महाक्ष** (३५५) है; ध्वजा में गरुड़ का चिन्ह होनेसे **गरुडध्वज** (३५६) हैं ॥ ३८ ॥:—

अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः ।
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिंजयः ॥ ३९ ॥

अर्थ—"न तस्य प्रतिमा अस्ति" इत्यादि किसी के समान नहीं इससे **अतुल** (३५७) है; जीर्ण शरीरों में अलग २ रूप से प्रकाशमान होने से **शरभ** (३५८) हैं; चराचर आपसे डरते हैं इससे **भीम** (३५९) हैं; उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय काल को जानने से आप **समयज्ञ** (३६०) हैं; यज्ञ भागों को लेने से अथवा प्राणियों के पाप हरने से आप **हविर्हरि** (३६१) हैं; सब प्रमाणों से आप जाने जांय हैं अतएव आप **सर्वलक्षणलक्षण्य** (३६२) हैं, लक्ष्मी

का वक्षःस्थल में निवास होने से लक्ष्मीवान् (३६३) हैं; युद्ध को जीतने से समितिंजय (३६४) हैं; ॥ ३९ ॥:—

विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः ।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥४०॥

अर्थ—नाशरहित होने से विक्षर (३६५) हैं; मत्स्यरूप धारण करने से आप रोहित (३६६) हैं; मुमुक्षु आपको ढूंढते हैं इससे आप मार्ग (३६७) हैं; उपादान निमित्त कारण होने से आप हेतु (३६८) हैं; इन्द्रियादिकों के जीतने वाले को उत्तम गति देने से अथवा यशोदा ने रस्सी से बांधे अतएव आप दामोदर (३६९) हैं, सबके अपराधों को सहते हैं इससे सह (३७०) हैं; गिरिरूप से पृथ्वी को धारण करते हैं इससे महीधर (३७१) हैं अवतारों में बड़ा ऐश्वर्य्य प्रकट करने से महाभाग (३७२) हैं; मन से भी अधिक वेग होने से वेगवान् (३७३) हैं; प्रलय में सन्सार का भक्षण करने से अमिताशन (३७४) हैं; ॥ ४० ॥:—

उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः ।
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ॥४१॥

अर्थ—सन्सार से आप अलग और उत्पत्ति, पालन नाश करने से आप **उद्भव** (३७५) हैं; प्रकृति और पुरुष को क्षोभ कराने से आप **क्षोभण** (३७६) हैं; **"एकोदेव"** श्रुति के अनुसार आप ही चलते फिर क्रीड़ा करते हैं इससे **देव** (३७७) हैं; जगद्गर्भा विभूति आपके उदरमें है इससे आप **श्रीगर्भ** (३७८) हैं;परम ऐश्वर्यवान् होनेसे आप **परमेश्वर** (३७९) हैं; संसार के साधक मत होने से **करण** (३८०) हैं; जगत् की उत्पत्ति में उपादान होनेसे आप**कारण** (३८१) हैं; जगत् के स्वतन्त्र रचने वाले हैं इससे **कर्त्ता** (३८२) हैं; विचित्र भुवनन के करने से आप **विकर्त्ता** (३८३) हैं; आप के स्वरूप, सामर्थ्य और चेष्टा नहीं जाने जाँय इससे **गहन** (३८३) हैं; माया करके अपना स्वरूप छिपाया है इससे **गुह** (३८५) हैं; ॥ ४१ ॥:—

व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदोध्रुवः ।
परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टःपुष्टः शुभेक्षणः ॥ ४२ ॥

अर्थ—सच्चित्‌रूप होने से व्यवसाय (३८६) हैं; आ
में सब की व्यवस्थिति है इससे व्यवस्थान (३८७)
प्राणियों का प्रलय में आप में स्थान है इससे आप संस्था
(३८८) हैं; कर्मानुसार सब को स्थान देने से स्थान
(३८९) हैं; अविनाशी होने से ध्रुव (३९०) हैं; सब
परे ऋषि हैं इससे परर्द्धि (३९१) हैं; अनन्य सिद्धि होने
परमस्पष्ट (३९२) हैं; परमानंदरूप होने से तुष्ट (३९३)
गुणों से भरपूर हैं इससे पुष्ट (३९४) हैं; मनवांछित फ
देनेवाले नेत्र होने से शुभेक्षण (३९५) हैं; ॥ ४२ ॥:—

रामो विरामो विरजो मार्गो नेयोनयोऽनयः ।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः ॥४३॥

अर्थ—योगिजनों के निवास स्थान होने से राम
(३९६) हैं; प्राणियों को आराम देने से विराम (३९७) हैं;
रजो गुण रहित होने से विरज (३९८) हैं; "नाऽन्यः
पन्था विद्यतेऽयनाय" मुमुक्षुओं के आपही मार्ग हैं इससे

र्ग (३९९) हैं; सन्मार्ग में प्रेरक होने से नेय (४००) हैं; जीवों को अपना करते हैं इससे नय (४०१) हैं; कोई नेता नहीं इससे अनय (४०२) हैं; पराक्रमी होने से वीर (४०३) हैं; ब्रह्मादिकों से भी उत्तम शक्ति होने से शक्तिमतां श्रेष्ठ (४०४) हैं; धर्म करके आराधन के योग्य होनेसे धर्म (४०५) हैं; धार्म्मिकों में उत्तम होनेसे धर्मविदुत्तम (४०६) ॥ ४३ ॥:—

वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः ।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तोवायुरधोक्षजः॥४४॥

अर्थ--विविध प्रकार की कुंठित गतियों को नाश करने से आप वैकुंठ (४०७) हैं; सब से पहिले हुए अथवा पुरमें शयन करने से पुरुष (४०८) हैं; क्षेत्रज्ञ रूप से सब के प्राण होने से प्राण (४०९) हैं; प्रलय में प्राणियों का नाश करने से प्राणद (४१०) हैं; सब आप को प्रणाम करते हैं इससे प्रणव (४११) हैं संसाररूप से विस्तार

को प्राप्त हुए इससे पृथु (४१२) हैं ब्रह्मा आप के गर्भ हुआ इससे हिरण्यगर्भ (४१३) हैं; देवताओं के शत्रुओं मारने से शत्रुघ्न (४१४) हैं; सब कार्यों में व्याप्त होने व्याप्त (४१५) हैं; "पुण्यो गंधः पृथिव्यांच" यह पने कहा है, इस वास्ते वायु रूप होने से वायु (४१६) आपके आश्रय से अधोगति नहींहोती इससे आप अधोक्ष (४१७) हैं; ॥ ३५ ॥:—

ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः ।
उग्रः सम्वत्सरोदक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥४

अर्थ--यथा काल पर ऋतु पैदा करने से ऋतु (हैं; भक्तन को आपका दर्शन निर्वाण फल देता है इ सुदर्शन (४१९) हैं; समयरूपसे सबको गिनतेहो इससे (४२०) हैं; हृदयाकाश रूप अपनी महिमामें विराजते हैं; परमेष्ठी (४२१) हैं; भक्तों से अर्पित पत्र पुष्प को ग्रहण सेआप परिग्रह (४२२) हैं; सूर्यादिकों को भय देनेसे आप (४२३) हैं; प्राणी सुखपूर्वक आपमें निवास करते हैं इ संवत्सर (४२४) हैं; जगत् के रचनेमें कुशल होनेसे आप

(४२५) हैं; सन्सार समुद्रमें नानाप्रकारके क्लेशोंसे प्राणियों को विश्राम देने से आप विश्राम (४२६) हैं; विश्व के रचने में बड़े चतुर हैं इससे विश्वदक्षिण (४२७) हैं, ॥ ४५ ॥

विस्तारः स्थावरः स्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम् ।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥ ४६ ॥

अर्थ—समस्त जगत् का विस्तार करने से विस्तार (४२८ हैं; स्थितिशील पृथिव्यादि आपमें निवास करते हैं इस से स्थावर (४२९) हैं; त्रिकाल में एक रस होने से स्थाणु (४३०) हैं; सब वस्तुओं के प्रमाण होने से आप प्रमाण (४३१) हैं, विनाशरहित, सब चराचर के बीजरूप होने से आप बीजमव्यय (४३२) हैं; सुख रूप होने से आपसे मिलने की सब प्रार्थना करते हैं इससे आप अर्थ (४३३) हैं; किसी से कुछ कामना नहीं रखते इससे आप अनर्थ (४३४) हैं, अन्नादिक के बड़े कोश होने से महाकोश (४३५) हैं; सुखरूप बड़े भोगों के भोगनेवाले हैं इससे महाभोग (४३६) हैं भोगसाधनरूप बड़ा धन होने से महाधन (४३७) हैं; ४६

अनिर्विण्णः स्थविष्ठो भूर्धर्म्मयूपो महामखः ।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः ॥ ४७॥

अर्थ—सब कामनाओं से परिपूर्ण हैं, किसी वस्तु की अपेक्षा नहीं इससे अनिर्विण्ण (४३८) हैं; विराट रूप से स्थित है इससे आप स्थविष्ठ (४३९) हैं; अजन्मा होकर सब पृथ्वी को धारण करते हैं इससे आप भू- (४४०) हैं; धर्म के आप यज्ञ खंभ हैं इससे आप धर्मयूप (४४१) हैं; आपके अर्थ बड़े २ यज्ञ किये जांय इससे आप महामख (४४२) हैं; सब तारागणों की नेमि रूप होने से नक्षत्रनेमि (४४३) हैं; नक्षत्रों के स्वामी चन्द्रमा रूप होने से आप नक्षत्री (४४४) हैं; पृथ्वी के समान सबको सहने से क्षम (४४५) हैं; आत्मा रूप से सब प्राणियों में स्थित हैं इससे आप क्षाम (४४६) हैं, सृष्टिरचने के हेतु चेष्टा- कराने से समीहन (४४७) हैं; ॥ ४७ ॥:—

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः ।
सर्वदर्शी विमुक्ताऽऽत्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम्॥४८

अर्थ--"यज्ञो वै विष्णुः" श्रुति कहती है,। आप यज्ञरूप हैं इससे **यज्ञ** (४४८) हैं, आप यजन के योग्य हैं इससे इज्य (४४९) हैं, सब देवतान में अधिकतर यज्ञ के योग्य होने से आप **महेज्य** (४५०) हैं, यूप सहित यज्ञ रूप होने से **क्रतु** (४५१) हैं; यज्ञों की रक्षा करने से आप**सत्र** (४५२) हैं; महात्माओं की आपही गति हैं इससे **सतांगति** (४५३) हैं; सबको आप देखते हैं इससे **सर्वदर्शी** (४५४) हैं; स्वभाव करके मुक्त होने से आप **विमुक्तात्मा** (४५५) हैं; सबको जानने से **सर्वज्ञ** (४५६) हैं; सब उत्कृष्ट पदार्थों का साधक तम ज्ञान होने से आप **ज्ञानमुत्तम** (४५७) हैं; ॥ ४८ ॥:—

सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत्।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ॥ ४९ ॥

अर्थ—अभय देनेका सुन्दर नियम होनेसे आप**सुव्रत** (४५८) हैं, प्रसन्नसन्मुख अथवा सब विद्याओं के उपदेश करनेसे आप **सुमुख** (४५९) हैं, आप लघुरूप से सबमें प्रवेश करते हैं इससे **सूक्ष्म** (४६०) हैं, वेदरूपी वाणी आप

के मुख से निकली इससे सुघोष (४६१) हैं, भलों को सुख देते और दुष्टोंके सुख को दूर करते इससे सुखद (४६२) हैं, सबसे श्रेष्ठ भावसे वर्तें इससे सुहृत् (४६३) हैं, आपके गुण मनको हरते हैं इससे मनोहर (४६४) हैं क्रोधको जीत रक्खा है इससे आप जितक्रोध (४६५) हैं, बड़ी पराक्रम वाली भुजा होने से आप वीरबाहु (४६६) हैं, अधर्मियों का नाश करने से आप विदारण (४६७) हैं; ॥ ४९ ॥

स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत्।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥ ५० ॥

अर्थ—प्राणियों को आप प्रलय काल में गहरी नींद देते हैं इससे आप स्वापन (४६८) हैं, स्वतन्त्र होने से आप स्ववश (४६९) हैं, आकाशवत् सब जगह व्यापक होने से आप व्यापी (४७०) हैं, अनेक प्राणिन में अनेक रूप होने से आप नैकात्मा (४७१) हैं, जगत् की उत्पत्ति, संपत्ति विपत्ति. अनेक कर्म करते हैं इससे आप नैककर्मकृत् (४७२) हैं, अखिल आप में निवास करता है इससे वत्सर (४७३

हैं, भक्तोंपर स्नेह करनेसे **वत्सल** (४७४) हैं, बछड़ों के पालनेसे अथवा वत्सरूप प्रजाहोने से **वत्सी** (४७५) हैं, वात्सल्यादि गुणरूप आपके गर्भ में हैं इससे **रत्नगर्भ** (४७६) हैं, धनों के स्वामी होने से आप **धनेश्वर** हैं; ॥ ५० ॥

धर्मगुप् धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम् ।
अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ॥ ५१ ॥

अर्थ--धर्म की रक्षा करने से **धर्मगुप्** (४७८) हैं; धर्म अधर्म रहित भी आप धर्मसंस्थापन करते हैं, इससे आप **धर्मकृत्** (४७९) हैं, धर्मके आधार होने से आप **धर्मी** (४८०) हैं; आत्मा और देह रूप सत्य और असत्य हैं इस से आप **सदसत्** (४८१) हैं; प्राणीमात्रको देहरूप नाशवान हैं इससे क्षर (४८२) हैं; आत्मरूप अविनाशी होने से **अक्षर** (४८३) हैं; आपको भेदाभेदका ज्ञान नहीं इससे **अविज्ञाता** (४८४) हैं; सूर्यवत् तेजरूप होने से **सहस्रांशु** (४८५) हैं, शेष; दिग्गज, भूधर और समस्त प्राणियों के धारण करने से आप **विधाता** (४८६) हैं; नित्य निष्पन्न चैतन्यरूप आप होने से **कृतलक्षण** (४८७) हैं; ॥ ५१ ॥

गभस्तिनेमिः सत्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः ॥५२॥

अर्थ—सुदर्शन चक्र में सूर्य्यरूप से स्थित हैं इससे आप गभस्तिनेमी (४८८) हैं; सत्वगुण का प्रकाश करने से अथवा सब प्राणियों में स्थिति होने से आप सत्वस्थ (४८९) हैं; सिंह के समान उत्कर्ष वल होने से सिंह (४९०) हैं सब प्राणियों के महान् ईश्वर होने से भूतमहेश्वर (४९१) हैं; सबके आदिकारण होने से आदिदेव (४९२) हैं; आपसे परे कोई देव नहीं है इससे आप महादेव (४९३) हैं; देवताओं में प्रधान होने से आप देवेश (४९४) हैं; देवतान के भरण पोषण करने से आप देवभृत् (४९५) हैं; सबके शिक्षक होने से आप गुरु (४९६) हैं; ॥ ५२ ॥:—

उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ॥
शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः॥ ५३।

अर्थ जन्म और संसारसागर से पार करें अथवा

सर्वोत्कृष्ट होने से **उत्तर** (४९७) हैं; गौओं के पालने को आपने गोपवेष धारण किया इससे **गोपति** (४९८) हैं; प्राणी मात्र को रक्षा करने से **गोप्ता** (४९९) हैं; ज्ञान से जाने जांय इससे **ज्ञानगम्य** (५००) हैं: सनातन होने से आप **पुरातन** (५०१) हैं; पञ्चभूतों से बने हुए शरीर को पोषण करने से **शरीरभूतभृत** (५०२) हैं; परमानन्द के भोगने से **भोक्ता** (५०३) हैं; वाराहमूर्ति अथवा वानराधीश रघुनाथ जी होने से आप **कपीन्द्र** (५०४) हैं; धर्म की मर्यादा के हेतु आप यज्ञ करातेहैं इससे **भूरिदक्षिण** (५०५) हैं; ॥ ५३ ॥:—

सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुसत्तमः ।
विनयोजयःसत्यसंधोदाशार्हःसात्वतांपतिः ॥५४॥

अर्थ—सब यज्ञन में देवतारूप होकर सोमपान करने से आप **सोमप** (५०६) हैं; मोहनीरूप से असुरों को छल देवतान को अमृत पिवाय आप भी पीते भये इससे आप **अमृतप** (५०७) हैं; चन्द्रमारूप से सब औषधियों के पुष्टि

करने से **सोम** (५०८) हैं; बहुतों को जीतने से **पुरुजित्** (५०९) हैं; सर्वोत्कृष्ट विश्वरूप धारण करने से **पुरुसत्तम** (५१०) हैं; दुष्टों को दण्ड देने से **विनय** (५११) हैं; और जीतने से **जय** (५१२) हैं; श्रुति में आपको **"सत्यसंकल्प"** अर्थात् सत्यप्रतिज्ञ लिखा है इससे आप **सत्यसंध** (५१३) हैं; दान के योग्य होने से अथवा दशार्ह के कुल में उत्पन्न होनेसे **दाशार्ह** (५१४) हैं; यादवों के पति और योगक्षेम के देने से आप **सात्वतांपति** (५१५) हैं; ॥ ५४ ॥:—

जीवो विनयिता साक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः ।
अंभोनिधिरनंतात्मा महोदधिशयोंतकः ॥ ५५ ॥

अर्थ—क्षेत्ररूप करके प्राणों को धारण करने से आप **जीव** (५१६) हैं; नम्रीभूत प्रजान को साक्षात देखने से **विनयिता** (५१७) हैं; सबके धर्मा धर्म के देखनेसे **साक्षि** (५१८) हैं; मुक्तिदाता होने से **मुकुन्द** (५१९) हैं; अपार बलके होने से **अमितविक्रम** (५२०) हैं; देवताओं के निवासस्थान होने से **अंभोनिधि** (५२१) हैं; दिग्देश काल

में व्याप्त होने से अनन्तात्मा (५२२) हैं; प्राणियों को समेट कर क्षीरसागर में शयन करने से महोदधिशय (५२३) हैं; प्राणियों का नाश करने से अंतक (५२४) हैं; ॥ ५५ ॥ :—

अजो महार्हः स्वभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः ।
आनन्दो नंदनोऽनन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः ।५६।

अर्थ--अजन्मा आपसे जगत् की उत्पत्ति है अतएव आप **अज** (५२५) हैं; बड़ी पूजा के योग्य होने से **महार्ह** (५२६) हैं; स्वभाव करके नित्य सिद्धरूप होनेसे **स्वभाव्य** (५२७) हैं; भीतर के रागद्वेषादि और बाहर के रावणादि अमित्र जीत लेनेसे **जितामित्र** (५२८) हैं; ध्यानियों को आनन्द देनेसे **प्रमोदन** (५२९) हैं; आपका आनन्द स्वरूप है इससे **आनन्द** (५३०) हैं; सबको प्रसन्न करनेसे **नन्दन** (५३१) हैं; विषयवासनारूप सुखके न होने से **अनन्द** (५३२) हैं; धर्म ज्ञानादिक सत्य होने से आप **सत्यधर्म** (५३३) हैं, वामनरूप धारण कर तीनों लोक नापने से आप **त्रिविक्रम** (५३४) हैं; ॥ ५६ ॥ :—

महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः।
त्रिपदास्त्रिदशाध्यक्षो महाशृंगः कृतान्तकृत्॥५७

अर्थ—चारों वेदों के जानने वाले और सांख्य शास्त्र के तत्ववेत्ता हैं इससे महर्षिकपिलाचार्य (५३५) हैं; थोड़े धर्म को बहुत मानने से कृतज्ञ (५३६) हैं; पृथ्वी के रक्षक होने से मेदिनीपति (५३७) हैं; तीन पैर से त्रिलोकी नापे इस से त्रिपद (५३८) हैं; जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, अथवा त्रयोदश अवस्था अथवा देवतान के स्वामी होने से त्रिदशाध्यक्ष (५३९) हैं; प्रलय में मत्स्यरूप धारण करने से अथवा वाराह रूप धारण कर सींगरूप डाढ पर पृथ्वी के लाने से महाशृंग (५४०) हैं; सृष्टि का संहार करने से अथवा मृत्यु के भी मृत्यु होने से आप कृतान्तकृत (५४१) हैं; ॥ ५७ ॥ :—

महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकांगदी।
गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः॥ ५८ ॥

अर्थ—बड़े वाराह रूप होने से महावराह (५४२) हैं

वेदान्त वाक्य रूप वाणी से जाने जांय सो गोविन्द (५४३) हैं; शुद्धगुणात्मक सेवक हैं आपके इससे सुषेण (५४४) हैं; सुवर्ण के बाजू पहरने से आप कनकांगदी (५४५) हैं; हृदयरूप आकाश में गुप्त रहने से गुह्य (५४६) हैं, ज्ञान ऐश्वर्य और वालादिकन से गभीर (५४७) हैं, आपके चरित्र में प्रवेश करना कठिन है या से आप गहन (५४८) हैं, मन और वाणीसे अगोचर हैं इससे आप गुप्त (५४९) हैं; प्राणियों के रक्षा के निमित्त मनरूपी चक्र और बुद्धिरूपी गदा के धारण करने से चक्रगदाधर (५५०) हैं; ॥ ५८ ॥

वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः संकर्षणोऽच्युतः।
वरुणो वारुणोवृक्षः पुष्कराक्षोमहामनाः ॥५९॥

अर्थ—सृष्टि के धारण करनेसे वेधा (५५१) हैं; कार्य करने के हेतु आप सहकारी हैं इससे स्वाङ्ग (५५२) हैं, किसी अवतार में किसी ने नहीं जीते इससे अजित (५५३) हैं; कृष्ण द्वैपायन व्यास श्यामवर्ण हैं इससे आप कृष्ण (५५४) हैं; अच्युत स्वरूप होने से दृढ़ (५५५) हैं;

संहार समय में सब प्रजा को खींच लेते हैं और आप अच्युत हैं इससे **संकर्षणोच्युत** (५५६) हैं; सायंकाल को वरुण की दिशा में जाने से सूर्य्यरूप हैं इससे **वरुण** (५५७) हैं; वरुण के पुत्र अगस्त्य वशिष्ठरूप होत भये इस से **वारुण** (५५८) हैं, वृक्ष की तरह अचल होने से **वृक्ष** (५५९) हैं; हृदयरूपी कमल में प्रकाश करने से **पुष्कराक्ष** (५६०) हैं; मन ही से उत्पत्ति, पालन नाश, करने से **महामना** (५६१) हैं. ॥ ५९ ॥:—

भगवान् भगहा नन्दी वनमाली हलायुधः ।
आदित्योज्योतिरादित्यःसहिष्णुर्गतिसत्तमः ।६०।

अर्थ—ऐश्वर्य, धर्म, यश, लक्ष्मी, वैराग्य, मोक्ष, ये विद्यमान हैं आप में इससे **भगवान्** (५६२) हैं; संसारकालमें ऐश्वर्यादिकों का नाश करने से **भगहा** (५६३) हैं; सुखरूप होने से **नन्दी** (५६४) हैं; वैजयंती माला के पहरने से **वनमाली** (५६५) हैं; बलभद्ररूप से हल आयुध लिया इस से **हलायुध** (५६६) हैं; अदित के पुत्र वामनरूप होने से **आदित्य** (५६७) हैं; सूर्य्य में ज्योतिरूप होने से **ज्योति-**

शादित्य (५६८) हैं, शीतोष्ण सुख दु;खादिकों के सहने से सहिष्णु (५६९) हैं; सद्गति देते हैं इससे आप गतिसत्तम (५७०) हैं, ॥ ६० ॥

सुधन्वा खंडपरशुर्दारुणोद्रविणप्रदः ।
दिवस्पृक् सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः ।६१।

अर्थ—साधुओं का रक्षक, श्रेष्ठ धनुष धारण करते हैं इस से सुधन्वा (५७१) हैं; परशुराम रूप धारण कर जिनका परशा शत्रुओं के काटने से खंडित हुआ इससे आप खंडपरशु (५७२) हैं; सन्मार्ग विरोधियों को आप दारुण हैं इससे दारुण (५७३) हैं, मनवांछित फल के देने से आप द्रविणप्रद (५७४) हैं; स्वर्गरूप होने से तथा स्वर्ग को स्पर्श करने से दिवस्पृक् (५७५) हैं, ऋग्वेदादि चारों वेदों का विस्तार करने से सर्वदृग्व्यास (५७६) हैं, विद्याओं के पति होने से वाचस्पति (५७७) हैं, माता से जन्म धारण नहीं किया इससे अयोनिज (५७८) हैं, ॥ ६१ ॥:—

त्रिसामा सामगः सामनिर्वाणं भेषजं भिषक्।
संन्यासकृच्छमः शांतो निष्ठा शांतिः परायणः६

अर्थ—वेदत्रयी करके स्तुति के योग्य होने से आ
त्रिसामा (५७९) हैं; "वेदानां सामवेदोस्मि" सामवेद हैं
आप गाने के योग्य हैं इससे सामग (५८०) हैं; सब दुःखें
के दूरकर्ता परमानन्दरूप होने से सामनिर्वाण (५८१) अ
संसार रोग की औषध हैं इस कारण आप भेषज (५८२) क
संसार रोग से बचाने के हेतु परा विद्या का उपदेश क
द्वारे आप भिषक् (५८३) हैं; मोक्ष के हेतु चतुर्थ संन्यास
श्रम निर्माण करने से आप संन्यासकृत् (५८४)
प्रदान करके संन्यासियों को शान्ति देने से आप श
(५८५) हैं; विषयानन्द में संगति रहित होने से आप शां
(५८६) हैं; प्रलयकाल में सब प्राणियों के आप ही आधार
इससे आप निष्ठा (५८७) हैं; सब अविद्याओं से पृथ
हैं, शान्तस्वभाव हैं, इससे आप शान्ति (५८८) हैं; ब्रह्म
परम उत्कृष्ट स्थान होने से आप परायण (५८९)
॥ ६२ ॥:—

शुभांगः शांतिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः ।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ॥ ६३ ॥

अर्थ--सुन्दर शरीर धारण करने से शुभांग (५६०) हैं; रागद्वेषादि से शांति देते हैं इससे आप शांतिद (५६१) हैं; प्रजा को रचने से स्रष्टा (५६२) हैं; पृथ्वी के विषय आनन्द करने से आप कुमुद (५६३) हैं; शेषपर शयन करने से आप कुवलेशय (५६४) हैं; गौओं के हेतु गोवर्द्धन उठाया इससे आप गोहित (५६५) हैं; भूमि के पति हैं इस कारण आप गोपति (५६६) हैं; जगत् के रक्षक होने से आप गोप्ता (५६७) हैं; सब कामना के वर्षा करने हारी अथवा धर्म दृष्टि होने से आप वृषभाक्ष (५६८) हैं; धर्म ही आप को प्रिय है इससे आप वृषप्रिय (५६९) हैं; ॥ ६३ ॥:—

अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः ।
श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतां वरः ६४

अर्थ—देवासुरसंग्राम और धर्म से आप कभी निवृत्त

नहीं होते इससे **अनिर्वर्ती** (६००) हैं; स्वभाव का
हां विषयवासना से निवृत्त इस हेतु **निवृत्तात्मा** (६०१
हैं; संसारमय जगत् को सकोड़ने से **संक्षेप्ता** (६०२)
उत्पन्न किए हुए की रक्षा करने से **क्षेमकृत्** (६०३)
स्मरणमात्र से पवित्र करते हैं इससे **शिव** (६०४)
वक्षस्थल में श्रीवत्स चिह्न धारण करने से **श्रीवत्सव**
(६०५) हैं; हृदय में अनपायिनी लक्ष्मी का निवास होने
श्रीवास (६०६) हैं; लक्ष्मी के पति होने से **श्रीपति** (६
हैं श्रीमान् जो ब्रह्मादिक देवता उनमें प्रधान हो इससे श्र
श्रीमतांवर (६०८) हैं; ॥ ६४ ॥

श्रीदःश्रीशःश्रीनिवासःश्रीनिधिः श्रीविभावनः।
श्रीधरःश्रीकरःश्रेयःश्रीमांल्लोकत्रयाश्रयः ॥ ६५॥

अर्थ—भक्तों को श्री देने से **श्रीद** (६०९) हैं; लक्ष्
कांत होने से **श्रीश** (६१०) हैं; श्रीमानों में निवास करने
से **श्रीनिवास** (६११) हैं; लक्ष्मी के निवास स्थान होने
श्रीनिधि (६१२) कर्मानुसार पृथक् २ विभव देने

श्रीविभावन (६१३) हैं; जगज्जननी लक्ष्मी को धारण करने से आप श्रीधर (६१४) हैं; उपासकों के कल्याण करने से श्रीकर (६१५) हैं; जीवों का कल्याण करने से श्रेय (६१६) हैं; लक्ष्मीवान् होने से आप श्रीमान् (६१७) हैं; तीनों लोकों के नाथ होने से आप लोकत्रयाश्रय (६१८) हैं; ॥ ६५ ॥:—

स्वक्षः स्वंगः शतानन्दो नंदिर्ज्योतिर्गणेश्वरः।
विजितात्माऽविधेयात्मासत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः ६६

अर्थ—कमल के समान नेत्र होने से स्वक्ष (६१९) हैं; सुशोभित अंग धारण करने से स्वंग (६२०) हैं; एक ही परमात्मा के उपाधिभेद से सैकड़ों रूप भए हैं यासे आप शतानन्द :(६२१) हैं; परमानन्द विग्रह होने से नन्दी (६२२) हैं; नक्षत्रादि प्रकाशित पदार्थों के ईश्वर होने से ज्योतिर्गणेश्वर (६२३) हैं; मन को विजय करने से विजितात्मा (६२४) हैं; आपके आत्मस्वरूप को कोई नहीं जान सके इससे अविधेयात्मा (६२५) हैं; सत्यकीर्ति

होने से सत्कीर्ति (६२६) हैं; सब को हस्तामलक करनेसे और संशय को दूर करने से छिन्नसंशय (६२७) हैं;॥६६॥

उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः ।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः॥६७॥

अर्थ—सब प्राणियों से श्रेष्ठ हैं, इससे उदीर्ण (६२८) हैं; आपके चारों ओर नेत्र हैं, इससे सर्वतश्चक्षु (६२९) हैं; आपका कोई ईश नहीं इससे अनीश (६३०) हैं; निरन्तर विकार रहित होने से शाश्वतस्थिर (६३१) हैं; लंका का मार्ग ढूंढते समय समुद्र के किनारे पृथ्वी पर सोये इससे आप भूशय (६३२) हैं; पृथ्वी को भूषित करने से भूषण (६३३) हैं; चराचर में आप विभूति हैं इस कारण भूति (६३४) हैं; परमानन्दरूप करके शोक रहित होने से विशोक (६३५) हैं; भक्तों के शोक का नाश करने से आप शोकनाशन (६३६) हैं; ॥ ६७ ॥

अर्चिष्मानर्चितः कुंभो विशुद्धात्मा विशोधनः ।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः ॥६८॥

अर्थ--सूर्यचन्द्रमादिक के प्रकाशक होनेसे **अर्चिष्मान्** (६३७) हैं; ब्रह्मादिक आप की पूजा करें इससे **अर्चित** (६३८) हैं; घट में जैसे सब वस्तु स्थित हैं ऐसे आप में भी लीन हैं इससे **कुंभ** (६३९) हैं; विशुद्ध आत्मा होने से आप **विशुद्धात्मा** (६४०) हैं; आप के स्मरणमात्र से पाप नाश हो जाते हैं इससे **विशोधन** (६४१) हैं; शत्रु आप को नहीं रोक सके इससे आप **अनिरुद्ध** (६४२) हैं; आप का कोई विरोधी नहीं इससे **अप्रतिरथ** (६४३) हैं; बहुत धन होने से **प्रद्युम्न** (६४४) हैं; अपरिमित पराक्रम होने से **अमितविक्रम** (६४५) हैं; ॥ ६८ ॥:—

कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः ।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहाहरिः ६९

अर्थ--कालनेमि असुर को मारने से **कालनेमिनिहा** (६४६) हैं; बलवान् होने से **वीर** (६४७) हैं; शूर कुल में उत्पन्न होने से **शौरि** (६४८) हैं; शूरवीर जो इन्द्रादिक उनके भी ईश्वर हैं इससे **शूरजनेश्वर** (६४९) हैं; तीनों

लोकों की अन्तरात्मा हैं इससे त्रिलोकात्मा (६५०) हैं; तीनों लोकन को अपने कर्मन में प्रवृत्ति करते हैं इससे आप त्रिलोकेश (६५१) हैं; ब्रह्मा और शिव के पिता और सूर्य चन्द्रमा की किरण आपके केश हैं इससे आप केशव (६५२) हैं; केशी दैत्य को मारने से केशिहा (६५३) हैं; संसार को हरते हैं इससे आप हरि (६५४) हैं; ॥ ६९ ॥:—

कामदेवः कामपालः कामी कांतः कृतागमः ।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनंजयः ॥ ७० ॥

अर्थ—अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, चतुर्वर्गके देनेहारे इससे कामदेव (६५५) हैं; कामियोंकी इच्छाओंको पूरण करते हैं इससे कामपाल (६५६) हैं; कामनान करके परिपूर्ण होने से कामी (६५७) हैं द्विपरार्द्ध में ब्रह्मा का अन्त करने से कान्त (६५८) हैं; श्रुति स्मृति रूप आगम करने से कृतागम (६५९) हैं; गुणन करके अतीत है रूप जिनको इससे अनिर्देश्यवपु (६६०) हैं; व्यापक होने से विष्णु

(६६१) हैं; दुखियों के नाश को दूर करें इससे वीर (६६२) हैं; देश, काल, वस्तु से अपरिच्छिन्न होने से अनन्त (६६३) हैं; दिग्विजय में अर्जुन रूप से अनन्त धनों को जीतने से धनञ्जय (६६४) हैं; ॥ ७० ॥:—

ब्रह्मण्योब्रह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः।
ब्रह्मविद्ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः॥ ७१ ॥

अर्थ—तप, वेद, सत्य, ज्ञान के हितकारी होने से ब्रह्मण्य (६६५) हैं; तपादि के करने से ब्रह्मकृत् (६६६) हैं; ब्रह्मा रूप धारण करके सबको रचते हैं इससे ब्रह्मा (६६७) सत्यादि लक्षणों करके बृहत् होने से ब्रह्म (६६८) हैं; तपादिकों के बढ़ाने से आपको ब्रह्मविवर्द्धन (६६९) कहते हैं; वेद और वेदार्थ को आप अच्छे प्रकार जाने हैं इससे ब्रह्मवित् (६७०) हैं; वेद का उपदेश करने से आप ब्राह्मण (६७१) हैं; वेदादिक आपके रूप हैं इससे ब्रह्मी (६७२) हैं; आत्म भू वेदों का आप जानते हैं इससे ब्रह्मज्ञ (६७३) हैं; वेदवेत्ता आपको प्रिय हैं इससे ब्राह्मणप्रिय (६७४) हैं; ॥ ७१ ॥:—

महक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः ॥ ७२ ॥

अर्थ—वामनरूप में आपने बड़ी २ डगभरीं इससे महाक्रम (६७५) हैं; सृष्टिके रचने के समान आपके बड़े २ कर्म हैं, इससे महाकर्मा (६७६) हैं; सूर्यादिक आपके तेज हैं, इससे आप महातेजा (६७७) हैं; शेषरूप से पृथ्वी को धारण किया इस कारण महोरग (६७८) हैं; बड़े २ यज्ञ रूप होने से महाक्रतु (६७९) हैं; अश्वमेध यज्ञ कराने वाले आपही हैं इसकारण महायज्वा (६८०) हैं; यज्ञरूप होनेसे महायज्ञ (६८१) हैं; प्रलय में सबको अपने में लीन कर लेते हैं इससे आप महाहवि (६८२) हैं; ॥ ७२ ॥

स्तव्यः स्तव्यप्रियःस्तोत्रंस्तुतिःस्तोता रणप्रियः ।
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः ॥७३॥

अर्थ—आप स्तुति के योग्य हैं इससे स्तव्य (६८३) हैं; स्तुति आपको प्यारी है इस कारण स्तवप्रिय (६८४) हैं; जिस स्तुति से स्तुति के योग्य हो वहभी आपही हो इस

कारण स्तोत्र (६८५) हैं; स्तुतिरूप आपही हो इससे स्तुति (६८६) हैं; करने वाले भी आपही हैं इसकारण स्तोता (६८७) हैं; पंच आयुधों से प्राणियों को बचाते हैं इससे रणप्रिय (६८८) हैं; सब काम और शक्तियों करके परिपूर्ण होने से आप पूर्ण (६८९) हैं; केवल पूर्ण ही नहीं किन्तु पूर्ण करने वाले भी हो इससे पूरयिता (६९०) हैं; स्मरण ही से पापों का नाश करने से आप पुण्य (६९१) हैं; आपकी कीर्ति मनुष्यों को पवित्र करने वाली है अतएव पुण्यकीर्ति (६९२) हैं; वाह्य और भीतर की शक्ति से रहित हो इसकारण अनामय (६९३) हैं; ॥ ७३ ॥:—

मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः ।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ॥ ७४ ॥

अर्थ—मन के सदृश वेगवान् होने से मनोजव (६९४) हैं; वेदादिविद्या तीर्थरूप बनाने से तीर्थकर (६९५) हैं; सुवर्ण आपका वीर्य्य है, इससे वसुरेता (६९६) हैं; धन को देने वाले हैं, इससे वसुप्रद (६९७) हैं; भक्तों को मोक्ष

देते हैं इस कारण **वसुप्रद** (६९८) हैं; वसुदेव के पु
पुत्र होने से **वासुदेव** (६९९) हैं; चराचर में आ
वर्तमान हैं, अथवा चराचर आपमें हैं ,इस कारण **वसु** (७०
हैं; सब में आपका मन बसता है इस कारण **वसुमन**
(७०१) हैं; यज्ञ में हविरूप हैं, इस कारण **हवि** (७०२
हैं; ॥ ७४ ॥:—

सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिःसत्यपरायणः।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः॥७५॥

अर्थ—महात्माओं को मोक्ष देने से **सद्गति** (७०३
जगत् की रक्षा करने से **सत्कृति** (७०४) हैं; भेद शून्य
से **सत्ता** (७०५) हैं; साधून के ऐश्वर्य और जग में प्रका
रूप होनेसे**सद्भूति** (७०६)हैं; उत्कृष्ट अयन होनेसे **सत्यपराय**
(७०७) हनुमान आदि शूरवीर आपकी सेनामें थे इसका
शूरसेन (७०८) हैं; यदुवंशियों में श्रेष्ठ होने से **यदु**
(७०९) हैं; विद्वानों के आश्रय हैं, इससे **सन्निवास** (७
हैं; यमुना के तीर पर विहार करने से **सुयामुन** (७१
हैं; ॥ ७५ ॥

भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोनलः ।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः ॥ ७६ ॥

अर्थ—सब प्राणी आप में निवास करते हैं, इस से आप **भूतवास** (७१२) हैं; सब जगत् को आपने अपनी माया से ढक रक्खा है, इस से **वासुदेव** (७१३) हैं; आपमें सब जीवात्माओं के प्राण रहते हैं, इससे और आपकी शक्ति और सम्पत् असंख्य है, इस कारण **सर्वासुनिलयानल** (७१४) हैं; अभिमानियों के दर्प को दूर करने से **दर्पहा** (७१५) हैं; अधर्मियों के दर्प को नाश करने से **दर्पद** (७१६) हैं; स्वात्मामृत रस को आस्वादन करने से **दृप्त** (७१७) हैं; कठिनता से हृदय में ध्यान किए जांय इस से **दुर्धर** (७१८) हैं; कोई शत्रु आप को पराजित नहीं कर सकता इस से आप **अपराजित** (७१९) हैं; ॥ ७६ ॥:—

विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् ।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥७७ ॥

अर्थ—सर्वात्मक होने से विश्व आपकी मूर्ति है, इससे विश्वमूर्ति (७२०) हैं; शेषपर्यंकशायी आपकी विशाल मूर्ति है, इससे महामूर्ति (७२१) हैं; ज्ञानमयी तेजोमय मूर्ति होने से दीप्तमूर्ति (७२२) हैं; किसी प्रकार की मूर्ति न रखने से अमूर्तिमान् (७२३) हैं; लोकोपकार के हेतु अनेक मूर्ति धारण करने से अनेकमूर्ति (७२४) हैं; आपके अनेक रूप हैं; और फिर अदृष्ट भी हैं इस कारण अव्यक्त (७२५) हैं; सैकड़ों मूर्ति रखने से शतमूर्ति (७२६) हैं; जो आप विश्वादि मूर्ति हैं, इससे शतानन (७२७) हैं; ॥७७॥

एको नैकः सवः कः किम् यत्तत्पदमनुत्तमम् ।
लोकबंधुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥ ७८ ॥

अर्थ—सजातीय विजातीय भेद रहित होने से एक (७२८) हैं; माया से अनेक दृष्टि पड़ते हैं, इस कारण नैक (७२९) हैं; यज्ञादि में सोमरूप होने से सव (७३०) हैं; सुख रूप होने से क (७३१) हैं; सर्व पुरुषार्थ रूप ब्रह्म विचार के योग्य हैं, इस कारण किम् (७३२) हैं; स्वतः

सिद्ध होने से यत् (७३३) हैं; ज्ञान को बढ़ाने से तत् (७३४) हैं; जिस अनुत्तम पदकी मुमुक्षु जन इच्छा करते हैं, अतएव पदमनुत्तमम् (७३५) हैं; लोकन के हिता हितका उपदेश करनेवाला आपसे अधिक कोई हितैषी नहीं, इसले लोकबंधु (७३६) हैं; सब लोकों से आप प्रार्थनीय हैं इससे लोकनाथ (७३७) हैं; लक्ष्मीपति होने से माधव (७३८) हैं; भक्तों पर स्नेह करने से भक्तवत्सल (७३९) हैं; ॥ ७८ ॥:—

सुवर्णवर्णो हेमांगो वरांगश्चन्दनांगदी ।
वीरहा विषमः शून्योऽघृताशीरचलश्चलः ॥७९॥

अर्थ—सुवर्ण रूप होने से सुवर्ण (७४०) हैं; सुवर्ण से अंगावयवहोनेसे हेमांग (७४१) हैं; सुशोभित अंगोंकरके युक्त होनेसे वरांग (७४२) हैं; चन्दन के हस्ताभूषण होने से चन्दनांगदी (७४३) हैं; धर्म के हेतु असुरों को मारने से वीरहा (७४४) हैं; सबसे बिलक्षण होने से विषम (७४५) हैं; दोष रहित होनेसे शून्य (७४६) हैं किसीसे कुछ प्रार्थना नहीं करते इसकारण अघृताशी (७४७)

हैं; सदा एकरस होनेसे अचल (७४८) हैं; पवनरूप चलते हैं, इस कारण चल (७४६) हैं ॥ ७६ ॥ :—

अमानीमानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक्
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥८०

अर्थ—अनात्मवस्तुन में आत्माका अभिमान होने अमानी (७५०) हैं; सब जीवों को अपनी मायासे आत्म का अभिमान देते हैं इससे मानद (७५१) हैं; सबके पूजनीय होनेसे मान्य (७५२) हैं; त्रिलोकी के हर्ता होनेसे लोकस्वामी (७५३) हैं; त्रिलोकीके आधार हो त्रिलोकधृक (७५४) हैं; सुन्दर बुद्धि होने से सुमेधा (७५५) हैं; यज्ञ में प्रकट होनेसे मेधज (७५६) हैं; कृतार्थ होने से धन्य (७५७) हैं; सत्य बुद्धि होने से सत्यमेधा (७५८) हैं; समस्त अंशों करके सब पृथ्वी को शेषरूप धारण करते हैं इस कारण धराधर (७५६) हैं; ॥८०॥

तेजोवृषो द्युतिधरःसर्वशस्त्रभृतां वरः ।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृंगो गदाग्रजः ॥८१

अर्थ—द्वादश आदित्यरूप करके वर्षा और तेज फैलानेसे तेजोवृष (७६०) हैं; अति कांति धारण करने से द्युतिधर (७६१) हैं; सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ हैं, इस कारण सर्व-शस्त्रभृतांवर (७६२) हैं; भक्तों से अर्पित पत्रपुष्पादिक ग्रहण करने से अथवा अश्वरूप इन्द्रियों का लगाम की नांई निग्रह करने से प्रग्रह (७६३) हैं; स्वभाव करके सबका निग्रह करने से निग्रह (७६४) हैं; भक्तों को मनवांछित देने से व्यग्र (७६५) हैं; वेदादि चारशृंग होने से नक-शृंग (७६६) हैं; बलदेवजी के लघुभाई होनेसे गदाग्रज (७६७) हैं; ॥ ८१ ॥ :—

चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥ ८२ ॥

अर्थ--वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, ये चार मूर्ति हैं, अतएव चतुर्मूर्ति (७६८) हैं; चार भुजा धारण करने से चतुर्बाहु (७६९) हैं; शरीर और जीवपुरुष छन्द, वेदपुरुष, महापुरुष, ये चारों चतुर्व्यूह (७७०) हैं, चारों

वर्णों के मनुष्यों को कर्मानुसार गति देने से चतुर्गति (७७१) हैं, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, ये चारों आप आत्मा होने से चतुरात्मा (७७२) हैं; अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, ये चारों भाव होने से चतुर्भाव (७७३) हैं, यथार्थ चारों वेदों का अर्थ जानने से चतुर्वेदवित् (७७४) हैं एक पद होने से एकपात् (७७५) हैं; ८२

समावर्तो निवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा ॥ ८३

अर्थ--संसारचक्र के चलानेवाले हैं, इससे आप समावर्त (७७६) हैं; सब विषयादिकन से पृथक् होने के कारण निवृत्तात्मा (७७७) हैं; कोई आप को जीत नहीं सक्ता इस कारण दुर्जय (७७८) हैं, भय से आप की आज्ञा को कोई उल्लंघन नहीं करसक्ता इस कारण दुरतिक्रम (७७९) हैं, दुर्लभ भक्तिकर प्राप्त होने से दुर्लभ (७८०) हैं, दुःख करके जाने जाते हैं, इस कारण दुर्गम (७८१) हैं, हृदयरूप दुर्ग में निवास करने से दुर्ग (७८२) हैं; योगी

न समाधिद्वारा आप को कठिनता से धारण करते हैं, इससे दुरावास (७८३) हैं; दानवादि दुष्टों के मारने से दुरारिहा (७८४) हैं; ॥ ८३ ॥:—

शुभांगो लोकसारंगः सुतंतुस्तंतुवर्धनः ।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः ॥ ८४ ॥

अर्थ—ध्यान के योग्य सुन्दर अंग हैं, इस कारण शुभांग (७८५) हैं; लोक में सार वस्तु को ग्रहण करने से अथवा प्रणवरूप होने से लोकसारंग (७८६) हैं; तंतुकीनाईं विस्तार करते हैं, इसकारण सुतंतु (७८७) हैं; संसार को बढ़ाने से तंतुवर्द्धन (७८८) हैं; बड़े कार्यके करनेसे इन्द्रकर्मा (७८९) हैं; ब्रह्मादि आपके बड़े कार्य हैं, इससे महाकर्मा (७९०) हैं; सब करचुके करना कुछ नहीं इससे कृतकर्मा (७९१) हैं; वेद आपने किया इससे कृतागम (७९२) हैं; ॥ ८४ ॥

उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः ।
अर्को वाजसनः शृंगी जयन्तः सर्वविज्जयी ॥ ८५ ॥

अर्थ—अपनी इच्छा करके उत्कृष्ट जन्म धारण करने से
उद्भव (७९३) हैं; सौभाग्यशाली होनेसे सुन्दर (७९४)
हैं; कृपालु होनेसे सुन्द (७९५) हैं; रत्न की सुन्दर नाभि होने
से रत्ननाभ (७९६) हैं; सुन्दर नयन अथवा ज्ञान होने से
सुलोचन (७९७) हैं; पूजनीय ब्रह्मादिकों से पूजा के
योग्य होनेसे अर्क (७९८) हैं; इच्छुकों को अन्न देने से
वाजसन (७९९) हैं; प्रलय में मत्स्यरूप धारण करने से
शृंगी (८००) हैं; दुष्टों को जीतने से जयंत (८०१)
बाह्य और आभ्यन्तर सब प्रकार का ज्ञान रखने से सर्ववि
(८०२) हैं; हिरण्याक्षादि असुरों को जीतने से ज
(८०३) हैं; ॥ ८५ ॥

सुवर्णविन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः ।
महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥८६॥

अर्थ—देह पर सुवर्णसे बिन्दु हैं, इसकारण सुवर्ण
विन्दु (८०४) हैं; रागद्वेषादि आपको जीत नहीं स
इससे अक्षोभ्य (८०५) हैं; सम्पूर्ण वागीश्वर ब्रह्मादि

के भी ईश्वर हैं, इससे सर्ववागीश्वरेश्वर (८०६) हैं; योगीजन आनन्द पूर्वक आपके हृदय में विहार करते हैं इस- कारण महाह्रद (८०७) हैं; दुरत्य माया है, आपकी इससे महागर्त (८०८) हैं; तीनों काल आपमें अनवच्छिन्न हैं, इससे महाभूत (८०९) हैं; सम्पूर्ण प्राणी आप में निवास करते हैं, इससे महानिधि (८१०) हैं, ॥ ८६ ॥

कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पवनोऽनिलः
अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥ ८७ ॥

अर्थ—पृथ्वी का बोझ उतार आनन्द करने से कुमुद (८११) हैं; सुन्दर फूलों के देने से कुन्दर (८१२) हैं; कुन्द से स्वच्छ अंग होने से कुन्द (८१३) हैं; इन्द्रवत् ताप- त्रय को दूर कर सब कामनाओं को देते हैं, इस कारण पर्जन्य (८१४) हैं; स्मरणमात्र से पवित्र करते हैं, इससे पवन (८१५) हैं; सदा दूर से प्रेरणा करते हैं; इससे अनिल (८१६) हैं; अपने आनन्द स्वरूप अमृत को पान करने से अमृताश (८१७) हैं; मरणरहित शरीर धारण करने से अमृतवपु (८१८) हैं; सबको जानने से सर्वज्ञ (८१९)

हैं; सब जगह मुख होने से सर्वतोमुख (८२०) हैं; ॥ ८७ ॥

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
न्यग्रोधोदुंबरोश्वत्थश्चाणूरांध्रनिषूदनः ॥ ८८ ॥

अर्थ—भक्ति से अर्पित जो पत्रपुष्पादिक उन्हीं से प्राप्ति के योग्य हैं; इससे सुलभ (८२१) हैं; शरणागत का पालना आपका सुन्दरव्रत है, इससे सुव्रत (८२२) हैं; स्वतन्त्र होने से सिद्ध (८२३) हैं; देवताओं के शत्रुओं को जीतने से आप शत्रुजित् (८२४) हैं; शत्रुओं को आप तपाते हैं, इस से शत्रुतापन (८२५) हैं; वटवृक्ष के सदृश आपकी माया प्राणियों के ऊपर नीचे फैली हुई है, इससे आप न्यग्रोध (८२६) हैं; आकाश में व्याप्त हैं; अथवा अन्नादिक से सबका पोषण करते हैं; इस कारण उदुंबर (८२७) हैं; "ऊर्ध्वमूलमधः शाखमश्वत्थंप्राहुरव्ययम्" एवंभूत आप अनादि हैं, इससे अश्वत्थ (८२८) हैं; अन्ध्रदेश के चाणूर को मारने हारे हैं; इससेचाणूरान्ध्रनिषूदन (८२९) हैं; ॥ ८८ ॥:—

सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः ।
अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः ॥८९॥

अर्थ—हजारन आपके सूर्यरूप किरण हैं, इससे सहस्रार्चि (८३०) हैं; काली, करालि, मनोजवा, सुलोहिता, धूम्रवर्णा, स्फुलिंगिनी, विश्वरुचि, ये आपकी सात जिह्वा हैं, अथवा आप अपनी जिह्वा से सब प्रकार की वाणी बोले हैं, इस से सप्तजिह्व (८३१) हैं, सात प्रकार की लकड़ी यज्ञ में हैं इससे सप्तैधा (८३२) हैं; सप्ति नाम का घोड़ा अथवा अग्निरूप सात वाहन हैं; इस कारण सप्तवाहन (८३३) हैं; हाथ पांव शरीर के अवयवन करके रहित होने से अमूर्ति (८३४) हैं; पाप रहित हो इससे अनघ (८३५) हैं, आपको कोई यह नहीं जान सके कि यह परमात्मा हैं इससे अचिन्त्य (८३६) हैं; अधर्मियों को भय देने वाले हैं, इससे भयकृत् (८३७) हैं; भक्तों के भय का नाश करते हैं इससे भयनाशन (८३८) हैं; ॥ ८९ ॥:—

अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणोमहान् ।
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशोवंशवर्धनः ॥९०॥

अर्थ—अनु से भी सूक्ष्म हैं इस कारण **अणु** (८३
हैं; ब्रह्माण्ड में व्याप्त होने से **बृहत्** (८४०) हैं; बहुत
होने से **कृश** (८४१) हैं; सबकी आत्मा होने से **स्थूल** (८४
हैं; सत्वरजतम गुणों के धारण करने से **गुणभृत्** (८४
हैं; परमार्थ करके गुणों का अभाव हैं; इस कारण
निर्गुण (८४४) हैं; नित्य स्वच्छ शुद्ध, सूक्ष्म, सर्वज्ञ
अतर्क्य हैं, इससे **महान्** (८४५) हैं; आप सबको धा
करते हैं, आप निराधार हैं, इससे **अधृत** (८४६) हैं;
की आत्मा को धारण करते हैं, इससे **स्वधृत** (८४७)
सुन्दर मुख अथवा वेद आप के मुखसे निकला इस
स्वास्य (८४८) हैं; ब्रह्मादि आपसे उत्पन्न हुए इस
प्राग्वंश (८४९) हैं; प्रपंच को बढ़ाने से आप **वंशवर्द्धन**
(८५०) हैं; ॥ ९० ॥ :—

भारभृत् कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः।
आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः॥९

अर्थ—अनन्त रूप से पृथ्वी का भार धारण करते
इससे **भारभृत** (८५१) हैं; सब वेदों ने आप की म

...ई इस से कथित (८५२) हैं; योग से आप प्राप्त होते हैं, अथवा योग में अपना आत्मा धारण करते हैं; इससे योगी (८५३) हैं; योगी आपकी माया करके विघ्न में पड़ जाते हैं, आप विघ्नरहित हैं, इससे योगीश (८५४) हैं; सम्पूर्ण कामनाओं को देनेवाले हैं, इससे सर्वकामद (८५५) हैं; सबके आश्रयरूप होने से आप आश्रम (८५६) हैं; अवि-वेकियों को संतप्त करते हैं, इस से आप श्रमण (८५७) हैं; सब प्रजा को क्षीण करते हो इस कारण क्षाम (८५८) हैं; संसाररूप वृक्ष के आप सुन्दर वेद रूप पत्र हैं 'छंदांसि यस्य पर्णानि' इस कारण आप सुवर्ण (८५९) हैं; आप के भय से वायु चलती है इससे वायुवाहन (८६०) हैं; ॥ ९१ ॥—

धनुर्द्धरो धनुर्वेदो दंडो दमयिता दमः ।
अपराजितः सर्वसहो नियंताऽनियमो यमः ।९२।

अर्थ--रामरूप से धनुष धारण किया इससे धनुर्द्धर (८६१) हैं; धनुर्वेद को जानते हैं, इससे धनुर्वेद (८६२) ... दुष्टन को दंडरूप हैं, इससे दंड (८६३) हैं; सूर्यरूप

अथवा राजारूप से दुष्ट प्रजा को दंड देते हैं, इससे दम (८६४) हैं; दंडकार्यरूप फल आप हैं, इससे दम (हैं; शत्रु आप को पराजित नहीं कर सकते और सब को समर्थ होने से आप अपराजित (८६६) हैं; सब को सहते हैं, इससे सर्वसह (८६७) हैं; अपने २ कर्म को लगाने से नियंता (८६८) हैं; आप का कोई नहीं, इससे अनियम (८६९) हैं; आप सब को पूर्वक चलाते हैं और मृत्युरहित होने से आप यम (हैं; ॥ ९२ ॥:—

सत्ववान् सात्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः
अभिप्रायःप्रियार्होऽर्हः प्रियकृत प्रीतिवर्द्धनः॥

अर्थ- शौर्यादि सत्व आप के विद्यमान हैं, इससे सत्ववान् (८७१) हैं; सत्वगुण में स्थिति होने से सा (८७२) हैं; श्रेष्ठ कामों को साधन करने से सत्य हैं, हैं; वेदविहित सत्यधर्म में चलने से सत्यधर्मपरायण (८७४) हैं; पुरुषार्थ चाहनेवालेनको चाहते हैं, अथवा में जगत् आप में प्रविष्ट हो जाता है, इससे अ

८७५) हैं; उत्तम वस्तुओंके योग्य होनेसे प्रियार्ह (८७६)
, प्रशंसा, स्वागत, आसन, अर्घ, पाद्य, स्तुति, नमस्कारादि
जाओंके योग्यहैं, इससे अर्ह (८७७) हैं; पूजन करने वालों
के प्रिय करनेवालेहैं, इससे प्रियकृत् (८७८) हैं; पूजकों की
प्रीतिको बढ़ातेहैं, इससे प्रीतिवर्द्धन (८७९) हैं;

विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः ।
रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः ॥९४॥

अर्थ—सूर्यरूपसे आकाशमें चलतेहैं, इससे विहायस-
गति (८८०) हैं; स्वयंप्रकाशितहैं, इससे आप ज्योति (८८१)
हैं; शोभायमान कान्ति होनेसे सुरुचि (८८२) हैं; देवताओंके
उद्देशकरकेहवनकियेहुएपदार्थकोखातेहैं,इससे हुतभुक् (८८३)
हैं,सबजगह वर्तमानऔरतीनों लोकोंकेप्रभुहैं इससे विभु (८८४)
हैं, रसोंको खींचते हो इससेरवि(८८५) हैं, सूर्यरूपसे सदा
प्रकाशित, इससे विरोचन (८८६) हैं; लक्ष्मीके देनेहारेहैं,
इस कारण सूर्य(८८७)हैं,सब जगत्के पैदाकरनेहारेहैं इसकारण

सविता (८८८) हैं, सूर्य आपका नेत्रहै इससे रवि
वन (८८९) हैं,

अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकदोऽग्रजः
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ।९

अर्थ—नित्यशुद्धरूप होनेसे अनन्त (८९०) हैं, ।
किये हुए पदार्थोंको खालेतेहैं इससे हुतभुग् (८९१)हैं,अं
प्रकृतिको भोग लगानेसे भोक्ता (८९२) हैं, भक्तों को मो
सुख देनेसे सुखद (८९३) हैं, धर्मरक्षार्थ अनेक जन्म ध
किये, इससे नैकज (८९४) हैं, "हिरण्यगर्भः समवर्तत
श्रुति कहतीहै सबसे पहिले पैदाहुए इसकारण अग्रज(८
हैं, सब कामोंमें परिपूर्ण होनेसे अनिर्विण्ण (८९६)
साधुओंके अपराधको सदा क्षमा करतेहैं, इससे सदा
(८९७) हैं; सब लोकोंके आधारहो इससे लोकाधि
(८९८) हैं; आपका रूप शक्ति व्यापार कार्य अद्भुत है
अद्भुत (८९९) हैं; ॥ ९५ ॥:—

सनात्सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः। स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्स्वस्तिस्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः॥९६॥

अर्थ--सदा एकरस होने से सनात् (१००) हैं; ब्रह्मादिकों से भी सनातन हैं, इससे सनातनतम (१०१) हैं; बडवानल के समान रूप होने से कपिल (१०२) हैं; किरणों से जल पीते हैं, इससे कपि (१०३) हैं; प्रलय में भी विकार को प्राप्त नहीं होते इससे अव्यय (१०४) हैं; भक्तों को मंगल देने से स्वस्तिद (१०५) हैं; कल्याण करते हैं, इससे स्वस्तिकृत (१०६) हैं; मंगल स्वरूप होने से स्वस्ति (१०७) हैं; मंगलानन्दरूप को भोगते हैं, इससे स्वस्तिभुक् (१०८) हैं; मंगलरूप धर्म को बढाने से स्वस्तिदक्षिण (१०९) हैं, ॥ ९६ ॥:—

अरौद्रः कुंडली चक्री विक्रम्यूर्जित शासनः। शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः॥९७॥

अर्थ--समस्त कामना करके व्याप्त और रागद्वेषादि

करके रहित होने से **अरौद्र** (११०) हैं; शेषरूप धा
करने से **कुंडली** (१११) हैं; लोकनकी रक्षा के निमि
चक्रधारण करने से **चक्री** (११२) हैं; वामनरूप में चर
का विस्तार करने से अथवा अनन्त वीर्य होने से **विक्र**
(११३) हैं; श्रुति स्मृतिरूप आज्ञा के धारण करने
ऊर्जितशासन (११४) हैं, शब्द से आप की प्रशंसा न
हो सक्ती इससे **शब्दातिग** (११५) हैं; अपनी २ सामर्थ्या
नुसार वेद आप कीप्रशंसा करते हैं; इससे **शब्द**
(११६) हैं, तापत्रय से दग्ध जीवों के आश्रय होने
शिशिर (११७) हैं, संसारियों को आत्मज्ञानरूपी वि
और ज्ञानियों को संसार रूपी निशा करते हैं, इ
शर्वरीकर (११८) हैं, ॥ ९६ ॥:—

अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः ।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥ ९८

अर्थ--सब सामग्रियों के उपस्थित होने से, **अ**
(११९) हैं; कर्म मन वाणी शरीर करके शोभायमान हैं इ
पेशल (१२०) हैं; सामर्थ्यवान् होने से **दक्ष** (१२१)

चतुरों में भी चतुर होनेसे दक्षिण (६२२) हैं, क्षमावान योगी और पृथिव्यादिकन में भी श्रेष्ठ हैं इसमें क्षमिणांवर (६२३) हैं, सर्वदा सर्वगोचर होनेसे विद्धमत्ति (६२४) हैं; संसारिक भय न होनेसे वीतभय (६२५) हैं; आपके चरित्र सुनने और नाम कीर्तन करने से पुण्य होता है, इससे पुण्यश्रवणकीर्तन (६२६) हैं; ॥ ६८ ॥ :—

उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः ।
वीरहा रक्षणः संतो जीवनः पर्यवस्थितः ॥९९॥

अर्थ—संसार समुद्र से पार लगाते हैं इससे उत्तारण (६२७) हैं, पापों का नाश करते हैं इससे दुष्कृतिहा (६२८) हैं, स्मरण करने वाले को पुण्य करते हैं इससे पुण्य (६२९)हैं; खोटे स्वप्नोंका नाश करने से दुःस्वप्ननाशन (६३०) हैं, संसारियों को मुक्ति देकर उनके बल को हरते हैं इस से वीरहा (६३१) हैं, सत्वगुण में स्थिति होकर रक्षा करते हैं, इससे रक्षण (६३२) हैं; सन्मार्गवर्ती संतरूपसे विद्याविनयवृद्धि करते हैं इससे संत (६३३) हैं; प्राणरूप

करके सब प्रजाको जिवाते हैं इससे जीवन (९३४) हैं; चारों ओरसे विश्वमें व्यापक होकरस्थितहैं इससे पर्यवस्थित (९३५) हैं, ॥ ९९ ॥ :—

अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः ।
चतुरस्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः १०० ॥

अर्थ—अनन्तरूप करके विश्वके चारों ओर स्थित हैं; इससे अनन्तरूप (९३६) हैं; अपरिमित शक्ति होनेसे अनन्तश्री (९३७) हैं क्रोध के जीतनेसे जितमन्यु (९३८) हैं; प्राणीन के भयको दूर करनेसे भयापह (९३९) हैं, अर्थ, धर्म, काम, मोक्षको देते हैं इससे चतुरस्र (९४०) हैं; ब्रह्मा भी आपके गंभीर आशय को नहीं जानसके इससे गंभीरात्मा (९४१) हैं; अधिकारियों को विविध फल देनेसे विदिश (९४२) हैं; इन्द्रादिकों को तरह २ की आज्ञा देनेसे व्यादिश (९४३) हैं, वेदरूपसे समस्त कर्मफल देनेसे दिश (९४४) हैं; ॥ १०० ॥

अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिरांगदः ।
जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रम ॥१०१॥

अर्थ—आपका कोई आदिकारण नहीं है, इससे अनादि (१४५) हैं; भूमि के आधार और त्रिलोकी में व्यापक होने से भूर्भुव (१४६) हैं, त्रिलोकी की संपत्ति होने से लक्ष्मी (१४७) हैं; अच्छी है गति और आज्ञा इससे सुवीर (१४८) हैं शोभायमान हैं हस्ताभूषण जिनके इससे रुचिरांगद (१४९) हैं, नाना प्रकार के जंतुओं को पैदा करने से जनन (१५०) हैं, मनुष्य के जन्म के आदि कारण होने से जनजन्मादि (१५१) हैं, दुष्टों का भय के हेतु होने से भीम (१५२) हैं, राक्षसों को भयकारी पराक्रम होने से भीमपराक्रम (१५३) हैं, ॥ १०१ ॥:—

आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः ।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः॥१०२॥

अर्थ—पृथिव्यादि पञ्च भूतों के आधार होने से आ-

धारनिलय (९५४) हैं, आप निराधार हैं, इससे अ-धाता (९५५) हैं, पुष्पवत् संसार को प्रफुल्लित रखते हैं, इससे पुष्पहास (९५६) हैं; सदा जाग्रत् अवस्था होने से प्रजागर (९५७) हैं; सबसे ऊपर स्थित हैं, इससे ऊर्ध्वग (९५८) हैं, सत्पुरुषन के मार्ग में चलते हैं, इस कारण सत्पथाचार (९५९) हैं, परीक्षितादि मरे हुओं को प्राण देने से प्राणद (९६०) हैं; ओंकार रूप होने से प्रणव (९६१ हैं; यथा योग्य व्यवहार करने से पण (९६२) हैं; ॥ १०२ ॥:—

प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत् प्राणजीवनः ।
तत्वं तत्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥१०३॥

अर्थ—वेद रूप प्रमाण होने से प्रमाण (९६३) हैं; इन्द्रियां जिनमें लीन होय हैं अतएव प्राणनिलय (९६४) हैं; प्राणों का आप पोषण करे हैं, इससे प्राणभृत् (९६५) हैं; प्राणियों को प्राण रूप पवन से जिवाते हैं, इससे प्राणजीवन (९६६) हैं; ब्रह्म रूप होनेसे तत्व (९६७) हैं; अपने

रूप को जानने से तत्त्ववित् (१६८) हैं; एक आत्मा रूप होनेसे एकात्मा (१६९) हैं; शरीर जन्म लेता है, बढ़ता है, विपरीत होता है, क्षीण होता है, नष्ट होता है, जन्ममृत्यु और बुढ़ापे से दूर हैं, अतएव जन्ममृत्युजरातिग (१७०) हैं; ॥ १०३ ॥:—

भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः सपिता प्रपितामहः ।
यज्ञोयज्ञपतिर्यज्वा यज्ञांगो यज्ञवाहनः ॥१०४॥

अर्थ--तीनों लोकों के प्राणियों को तारने के हेतु आप नौकारूप हैं, इससे भूर्भुवःस्वस्तरु (१७१) हैं; नाम-संकीर्तन से संसार को तारते हैं इससे तार (१७२) हैं, सब के पिता हैं इससे सपिता (१७३) हैं ब्रह्मा के भी पिता होने से प्रपितामह (१७४) हैं, यज्ञरूप होने से यज्ञ (१७५) हैं, यज्ञन के रक्षक होने से यज्ञपति (१७६) हैं, यजमानरूप होने से यज्वा (१७७) हैं, यज्ञ आप का अंग है, अथवा आप यज्ञमूर्ति हैं, इससे यज्ञांग (१७८) हैं, फलहेतु यज्ञों के करानेहारे आप ही हैं, इससे यज्ञवाहन (१७९) हैं. ॥ १०४ ॥:—

यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः ।
यज्ञांतकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नादएवच ॥ १०५ ॥

अर्थ--यज्ञों की रक्षा करने से यज्ञभृत् (९८०) हैं, जगत् के आदि में यज्ञ करनेहारे हैं इससे यज्ञकृत् (९८१) हैं; यज्ञ करनेवारेन की रक्षा करने से यज्ञी (९८२) हैं, यज्ञ के भोक्ता हैं, इस कारण यज्ञभुक् (९८३) हैं; यज्ञ के साधन प्राप्त करने से यज्ञसाधन (९८४) हैं, यज्ञ के समाप्त करनेहारे हैं. इससे यज्ञांतकृत् (९८५) हैं, ज्ञानरूपी यज्ञ करने से यज्ञगुह्य (९८६) हैं, सब जीव अन्न के भोग करने से जीते हैं, इससे अन्न (९८७) हैं; आप अन्न को खाते हैं, इससे अन्नाद (९८८) हैं; ॥ १०५ ॥:—

आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः ।
देवकीनन्दनः स्रष्टाक्षितीशः पापनाशनः॥१०६॥

अर्थ--आप अपने आप प्रगट हुए, इससे आत्मयोनि (९८९) हैं, प्रकृतिरूप से जन्म लेते हैं, इससे स्वयंजात (९९०) हैं, पृथ्वी खोद कर हिरण्याक्ष को मारने से

वैखान (९९१) हैं, सामवेद आप के मुख से निकला, इससे सामगायन (९९२) हैं, देवकी के पुत्र होने से देवकी-नन्दन (९९३) हैं, सब लोकन के कर्त्ता हैं, इससे स्रष्टा (९९४) हैं; पृथ्वी के राजा होने से आप क्षितीश (९९५) हैं, नामस्मरण ध्यान से पापों का नाश करने से आप पापनाशन (९९६) हैं, ॥ १०६ ॥:—

शंखभृन्नंदकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ।
रथांगपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥१०७॥

सर्वप्रहरणायुधोंनमइति ॥

अर्थ—आप अहंकारात्मक पाञ्चजन्य शंख धारण करतेहैं, इससे शंखभृत् (९९७) हैं; विद्यामय नंदक नाम खड्ग के धारण करने से नंदकी (९९८) हैं मनस्तत्वात्मक सुदर्शन चक्र के धारण करने से चक्री (९९९) हैं, इन्द्रियादि अहं-कारात्मक धनुष धारण करने से शार्ङ्गधन्वा (१०००) हैं, बुद्धितत्वात्मक कौमोदकी गदा धारण करने से गदाधर

(१००१) हैं, रथांग अर्थात् चक्र धारण करने से रथांगपाणि (१००२) हैं काहू से चलायमान नहीं होते अतएव अक्षोभ्य (१००३) हैं, और सब आयुधन को धारण करते हैं अतएव सर्वप्रहरणायुध (१००४) हैं, ॥ १०७ ॥:—

सब आयुध धारण करने हारे आप महापुरुष को बारम्बार नमस्कार हैं ॥

इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः ।
नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् ॥ १०८ ॥

अर्थ—इस प्रकार कीर्तन करने के योग्य जो महात्मा केशव भगवान ताके ये दिव्य सहस्रनाम पूर्ण रीति से वर्णित किये हैं ॥ १०८ ॥

य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तयेत् ।
नाशुभं प्राप्नुयात्किंचित्सोऽमुत्रेह च मानवः १०९

अर्थ—जो मनुष्य याको नित्य श्रवण करै अथवा पाठ करै सो इस लोक और उस लोक दोनों में शुभ-फल प्राप्त करै ॥ १०९ ॥

वेदान्तगो ब्राह्मणः स्यात्क्षत्रियो विजयी भवेत्।
वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रः सुखमवाप्नुयात् ११०

अर्थ--इसके पाठ करनेसे ब्राह्मण वेदांती, क्षत्रिय समर विजयी, वैश्य धनसम्पन्न, और शूद्र सुखी होय ११०

धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थी चार्थमाप्नुयात् ।
कामानवाप्नुयात्कामी प्रजार्थी चाप्नुयात्प्रजाम् १११

अर्थ--इसका पाठ करनेसे धर्मका अभिलाषी धर्म और अर्थका अभिलाषी अर्थ, और कामना करने वाला मनोकामना, और संतान चाहनेवाला संतान पावे १११

भक्तिमान्यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः ।
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत्प्रकीर्तयेत् ॥ ११२ ॥

अर्थ--जोभक्तिमान् पुरुष उठकर पवित्र होय भगवान्में मन लगायके या वासुदेव सहस्र नामको पाठकरै ॥

यशःप्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेवच ।
अचलांश्रियमाप्नोति श्रेयः प्राप्नोत्यनुत्तमम् ११३

अर्थ--तो वह मनुष्य बड़ा यश पावै. सजातियों में उच्च

गिलाजावै. अचललक्ष्मी प्राप्ति करै और अत्युत्तम कल्याण
पावै ॥ ११३ ॥

न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विंदति ।
भवत्यरोगो द्युतिमान् बलरूपगुणान्वितः ॥ ११४ ॥

अर्थ--और कभी किसीसे न डरे और बड़ा वीर्य तेज
निरोगी कांतिमान् बलरूप और गुणोंसे युक्त होवै ॥ ११४ ॥

रोगार्त्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
भयान्मुच्येतभीतस्तु मुच्येतापन्नआपदः ॥ ११५

अर्थ--रोगी रोगसे, बंधुआ बंधनसे, और भयभीत भय
और आपद्ग्रस्त विपत्तिसे छूटजाय ॥ ११५ ॥

दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ॥ ११

अर्थ--जो मनुष्य भक्तिपूर्वक या सहस्रनाम करके पु
त्तम भगवान्को स्तुति करै, सो शीघ्रही संसार रूपी
दुर्गसे निस्तार होजाय ॥ ११६ ॥

वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ॥११७॥

अर्थ—जो मनुष्य वासुदेव के आश्रय हैं, वासुदेव में परायण हैं; सो सम्पूर्ण पापन से शुद्ध होकर सनातन ब्रह्म में लीन हो जाते हैं ॥ ११७ ॥

न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् ।
जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते ॥११८॥

अर्थ—वासुदेव के भक्तों को कभी किसी से भय नहीं उत्पन्न होता है, और जन्ममृत्यु रोग बुढ़ापे का भय कभी नहीं होता ॥ ११८ ॥

इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।
युज्येतात्मसुखं क्षान्तिः श्रीधृतिः स्मृतिकीर्तिभिः

अर्थ जो श्रद्धाभक्तिपूर्वक इस स्तोत्र का पाठ करै, उसको आत्मसुख, शांति, लक्ष्मी धैर्य, स्मृति, और कीर्ति मिलै॥११९॥

न क्रोधोनच मात्सर्य्यं न लोभोनाशुभामतिः ।
भवंतिकृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥१२०॥

अर्थ—वे सुकृती जीव जो पुरुषोत्तम भगवान् में भक्ति[illegible] हैं, उनको क्रोध, मत्सरता, लोभ, बुरी बुद्धि, कभी नहीं होते हैं ॥ १२० ॥

द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्राः खंदिशोभूर्महोदधिः ।
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानिमहात्मनः॥ १२१॥

अर्थ—स्वर्ग, चन्द्रमा, सूर्य, तारागण, आकाश, दिश[illegible] समुद्र ये सब महात्मा वासुदेव के पराक्रम से स्थित हैं ॥

ससुरासुरगंधर्वं सयक्षोरगराक्षसम् ।
जगद्वशेवर्ततेदं कृष्णस्य स चराचरम् १२२।

अर्थ—देवता असुर गंधर्व यक्ष साँप राक्षस और स[illegible] स्थावर जंगम भगवान् श्रीकृष्ण के आधीन हैं ॥ १२२ ॥

[illegible] द्धः सत्वंतेजो वलंधृतिः ।
वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एवच॥ १२३।

अर्थइन्द्री, मन, बुद्धि, सतोगुण, तेज, बल, धैर्य्य, [illegible] और क्षेत्रज्ञ अर्थात् शरीर और जीव ये सब वासुदेव [illegible] आत्मा हैं ॥ १२३ ॥

सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते ।
आचारः प्रथमो धर्म्मो धर्मस्यप्रभुरच्युतः॥ १ २ ४॥

अर्थ—सम्पूर्ण शास्त्रोंमें आचार प्रथम बताया है, आचार प्रथम धर्म है, और आचार ही से प्रभु मिलते हैं ॥ १२४ ॥

ऋषयः पितरो देवा महाभूतानिधातवः ।
जङ्गमाजङ्गमंचेदं जगन्नारायणोद्भवम् ॥ १ २ ५ ॥

अर्थ—ऋषि, पितर, देवता, सम्पूर्ण पञ्च महा भूत और धातु चराचर और यह जगत् नारायण से उत्पन्न हैं ॥ १२५ ॥

योगोज्ञानं तथासांख्यं विद्याःशिल्पादिकर्मच ।
वेदाः शास्त्राणि विज्ञानमेतत्सर्वं जनार्दनात् १ २ ६

अर्थ—योग ज्ञान सांख्य विद्या शिल्पादि कर्म वेद शास्त्र विज्ञान ये सब जनार्दन से उत्पन्न हैं ॥ १२६ ॥

एकोविष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः ।
त्रींल्लोकान्व्याप्यभूतात्माभुंक्तेविश्वभुगव्ययः१ २७

अर्थ—एकही विष्णु सबसे बड़े हैं, पृथक् २ प्राणियों में अनेक रूप धरते हैं; तीनों लोकों में व्यापक होकर प्राणियों को भोगते हैं और अविनाशी हैं ॥ १२७ ॥

इमंस्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम् ।
पठेद्यइच्छेत्पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानिच ॥ १२८ ॥

अर्थ—भगवान विष्णु का यह स्तोत्र वेदव्यासजी ने कीर्तन किया है, जो सुख और कल्याण प्राप्ति करने की इच्छा करै, सो इसका पाठ करै ॥ १२८ ॥

विश्वेश्वरमजं देवं जगतः प्रभवाप्ययम् ।
भजंति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम् ॥ १२९ ॥

अर्थ—विश्वेश्वर अजन्मा महादेव जगत् के हर्ता कर्ता कमल नयन भगवान को जो भजते हैं; उनका तिरस्कार कहीं नहीं होता है ॥ १२९ ॥

अर्जुन उवाच.

पद्मपत्रविशालाक्ष पद्मनाभ सुरोत्तम ।
भक्तानामनुरक्तानां त्राता भव जनार्दन ॥ १३० ॥

अर्थ—अर्जुन बोले, हे कमलपत्रवत् विशालाक्ष ! पद्मनाभ ! हे सुरोत्तम ! हे जनार्दन ! अनुराग युक्त आप भक्तों के निस्तार करने वाले हो ॥ १३० ॥

श्रीभगवानुवाच.

योमांनामसहस्रेण स्तोतुमिच्छति पांडव ।
सोहमेकेन श्लोकेन स्तुत एव न शंशयः॥ १३१ ॥

अर्थ--भगवान् बोले हे अर्जुन जो मनुष्य या सहस्रनाम से स्तुतिकरनेकी इच्छाकरै, तो मैं एकही श्लोकसे प्रसन्न होय जाऊं इसमें संदेह नहीं ॥ १३१ ॥

नमोस्त्वनंताय सहस्रमूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरो-
रुबाहवे ॥सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्रको-
टीयुगधारिणेनमः ॥ १३२ ॥

अर्थ--त्रिकालमें समभाव और विनाशरहित आपके अर्थ नमस्कारहैं, सहस्रन आपकी मूर्तिहैं, सहस्रन चरण, सहस्रन आंख, शिर, हृदय, बाहु और सहस्रन नामवाले जो आपहैं, आपको नमस्कारहै. फिर कैसेहैं? आप पुरुषहैं निरन्तर हैं, हज़ारन कोट युगोंके धारण करने हारेहैं, ऐसे जो आप सो आपके अर्थ नमस्कारहै ॥

नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने ।
नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोस्तुते॥१३३॥

अर्थ—हे कमलनाभ! आपको नमस्कारहै. हे जलशायी! आपको नमस्कारहै. हे केशव! हे अनन्त! आपको नमस्कारहै. हे वासुदेव! आपको नमस्कारहै ॥ १३३ ॥

वासनाद्वासुदेवस्य वासितंभुवनत्रयं ।
सर्वभूतनिवासोसि वासुदेवनमोस्तुते ॥१३४॥

अर्थ—हे वासुदेव! जीवोंकी वासना नाशकरो; क्योंकि जो वासना भुवनत्रय निवासियोंको है, और सब जीवनमें तुह्मारो वासहै, ऐसे वासुदेवके अर्थ नमस्कारहै ॥

नमो ब्रह्मण्यदेवा गोब्राह्मणहितायच ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः ॥१३५

अर्थ—ब्रह्मण्यदेव गौब्राह्मणके हितकारी आपके अर्थ नमस्कारहै; जगद्धितकारी श्रीकृष्ण गोविन्द प्रभुके अर्थ नमस्कारहै ॥ १३५ ॥

आकाशात्पतितंतोयं यथागच्छतिसागरं ।
सर्वदेवनमस्कारः केशवंप्रतिगच्छति ॥१३६॥

अर्थ—जैसे सब ठौर आकाशसे गिरो भयौ जल समुद्रमें

पहुँच जाय है तैसेही चाहे जो देवता को अर्चन वन्दनकरौ सब केशव भगवान् को प्राप्त होय जाय है ॥

एषनिष्कंटकः पंथा यत्र संपूज्यते हरिः ।
कुपथं तंविजानीयाद्गोविन्दरहितागमम् ॥१३७॥

अर्थ—यही निष्कंटक मार्ग है, यामें हरिभगवान् पूजे जाय हैं, वही मार्ग बुरो है जो गोविन्द रहित है ॥ १३७ ॥

सर्ववेदेषु यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषुयत्फलम् ।
तत्फलं समवाप्नोति स्तुत्वादेवं जनार्दनम् ॥१३८॥

अर्थ—सब वेदाध्ययन को पुण्य और सब तीर्थनको फल वा मनुष्यको मिलै जो जनार्दन भगवान्की स्तुति करै ॥१३८॥

योनरः पठतेनित्यं त्रिकालं केशवालये ।
द्विकालमेककालं वा क्रूरंसर्वं व्यपोहति॥१३९॥

अर्थ—जो मनुष्य देवालय में बैठके या सहस्रनाम को त्रिकाल अथवा द्विकाल अथवा एकही समय पढ़े तो वाके सब अपराध नष्ट होजांय हैं ॥ १३९ ॥

दह्यन्ते रिपवस्तस्य सौम्यराः सर्वेसदाग्रहाः ।
विलायन्ते च पापानिस्तिवेह्यस्मिन्प्रकीर्तिते १०४

अर्थ—वा मनुष्य के पूर्ण वैरी नष्ट होजाँयगे, सम्पूर्ण ग्रह शान्ति रहैंगे, पाप विलाय जांयगे, जो या स्तोत्र को पाठ करैंगे ॥ १४० ॥

येनध्यात श्रुतोयेन येनायं पठितःस्तवः ।
दत्तानिसर्व दानानि सुराःसर्वे समर्चिताः॥ १४१॥

अर्थ--जाने या स्तोत्र को ध्यान कियो जाने येही पढ्यौ वाने सब दान दिये और सम्पूर्ण देवतान को पूजन कर लियो ॥ १४१ ॥

इहलोके परेवापि नभयं विद्येत कचित् ।
नाम्नां सहस्रंयोऽधीते द्वादश्यां ममसन्निधौ॥ १४२

अर्थ—द्वादशी के दिन मेरे निकट बैठके जो मनुष्य या सहस्रनाम को पाठ करै, ताको या लोक में तथा परलोक में कुछभी भय नहीं होय ॥ १४२ ॥

सनिर्दहति पापानि कल्पकोटिशतानि च ।
अश्वत्थसन्निधौपार्थ कृत्वामनसिकेशवम्॥ १४३

अर्थ—हे पार्थ ! पीपल के पास बैठ के और केशव भग॰ वान् को हृदय में ध्यान करके जो मनुष्य पाठ करेंगे, उनके सौ कोटि कल्पन के भी पाप भस्म होय जांयगे ॥ २४३ ॥

पठेन्नामसहस्रंतु गवांकोटिफलं लभेत् ।
शिवालये पठेन्नित्यं तुलसीवनसंस्थितः ॥ १४४ ॥

अर्थ—जो मनुष्य या सहस्रनाम को पाठ करै, वाको करोड़ गौदान करने को फल होय; परन्तु शिवालय में बैठे ओर चारों ओर तुलसी को बन होय ॥ १४४ ॥

नरोमुक्तिमवाप्नोति चक्रपाणेर्वचो यथा ।
ब्रह्महत्यादिकं पापं सर्वं सद्योविनश्यति ॥१४५॥

अर्थ—चक्रपाणि भगवान् के वचनानुसार मनुष्य मुक्ति पावै, और वाके सम्पूर्ण ब्रह्म हत्यादिक पाप तत्काल नष्ट होजांय ॥ १४५ ॥

इति श्रीमन्महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायांवैयासिक्यामानुशासनिके पर्वणि दानधर्मे भीष्मयुधिष्ठिरसंवादे श्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

श्रीकृष्णार्पणमस्तु शुभम् ।

भूमिका ।

धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर ने कलियुगी जीवों को निराधार और दुःखी देख शोक संतप्त होकर भीष्मजी से इनके उद्धारार्थ प्रश्न किया; भीष्म पितामह ने विष्णुभगवान् के इस सहस्र नाम का उपदेश किया कारण—

नाम्नोऽस्ति यावती शक्तिः पापनिर्हरणे हरेः ।
तावत्कर्तुं न शक्नोति पातकं पातकी नरः ॥

विष्णु भगवान् के नाम में पाप दूर करने की जितनी शक्ति है, पापी मनुष्य उतने पाप भी नहीं कर सका है, सहस्रनाम में प्रभून के नाम गुणानुरूप ध्यान करके नाम स्मरण ही इस कलिकाल में मोक्ष का अवलम्बन है स्वयं भगवान् ने कहा है—

नाऽहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

नारदजी ने भगवान् से पूछा कि आपका मिलने का स्थान कहां है ? प्रभु ने हंसकर उत्तर दिया, यदि वैकुण्ठ में प्राणी मेरे पाने की इच्छा करै, मैं वहां नहीं मिलूं, योगियों के हृदय में भी मेरा निवास नहीं है, मैं केवल भक्ति के आधीन

हैं; जहाँ भक्तजन प्रसन्न चित्त से मेरे गुण संकीर्तन करें, वह मेरे रहने का स्थान है, अर्थात् मैं अपने भक्तों के क्लेशादि दूर करने को सर्वत्र सदैव विद्यमान हूं, अतएव मनुष्य जो मोक्ष प्राप्ति की इच्छा करें वे इस सहस्रनाम सोपान का अवलम्बन करें ।

आबाल वृद्ध सबही वैष्णव लोग इस अमूल्य रत्न का पाठ करते हैं, परन्तु बहुत कम मनुष्य ऐसे हैं जो नामार्थ से अभिज्ञ हों, केवल शुकवत् "राधाकृष्ण, राधाकृष्ण" रटे चले जाते हैं, परन्तु प्रश्न करने पर मूक होजाते हैं, कुछ उत्तर नहीं बन पड़ता, इसी अभिप्राय से मैंने महर्षि श्रीशङ्कराचार्य के भाष्यानुसार व्रज भाषा में बहुत सुगम शब्दों में नामार्थ किया है, अर्थ के ज्ञान सहित नामस्तुति करने से "अधिकस्याऽधिकफलम्" बहुत ही फल मिलेगा और प्रभु के गुणों में चित्त सन्निविष्ट होजायगा ।

पहिले भी इस सहस्रनाम की कई टीका हो चुकी हैं और वे मेरे सब दृष्टि गोचर हुईं, परन्तु उनमें से कई टीका ऐसी कठिन हैं और कुढङ्ग से छपी हैं कि मूल के अर्थ का समझना तो दूर रहा, टीका भी समझ में नहीं आती, टीका भी टीका की अपेक्षा रखती है, कइयों में कुछ न्यूनता रह गई है अतएव मैंने बहुत सुगम अर्थ किया है, जो सर्व साधारण की समझ में बिना प्रयास आजावे, इति शम् ॥

कृष्णलाल मथुरानिवासी ।

॥ श्रीः ॥

श्रीसंमोहनतंत्रांतर्गतं

गोपालसहस्रनामस्तोत्रं

भाषाटीकासहितम् ।

तच्च

'हरिप्रसाद भगीरथजी'

इत्येषां प्राचीन-पुस्तकालयस्याध्यक्षैः

पं. व्रजवल्लभ हरिप्रसादजी

इत्येतैः मोहमय्यां

'ट्युटोरियल' इत्याख्ये मुद्रणालये

मुद्रितम् ।

शकाब्दाः १८४६, वैक्रमाब्दाः १९८१

॥ श्रीः ॥

श्रीसंमोहनतंत्रांतर्गतं

गोपालसहस्रनाम स्तोत्रं

भाषाटीकासहितम् ।

तच्च

' हरिप्रसाद भगीरथजी '

इत्येषां प्राचीनपुस्तकालयस्याध्यक्षाणां

श्री. व्रजवल्लभ हरिप्रसादजी

इत्येतेषां कृते मोहमय्यां

' ट्युटोरियल ' इत्याख्यमुद्रणालयाधिपेन

मुद्रितम् ।

शकः १८४६ सं. १९८१

Printed by V. P. Pendherkar at the Tutorial Press,
211a Girgaon Back Road, Bombay No. 4.
AND
Published by Vrajavalabha Hariprasad Bhagirathji,
House No. 331, Kalbadevi Road, Bombay No. 2.

लघु-प्रस्तावना ।

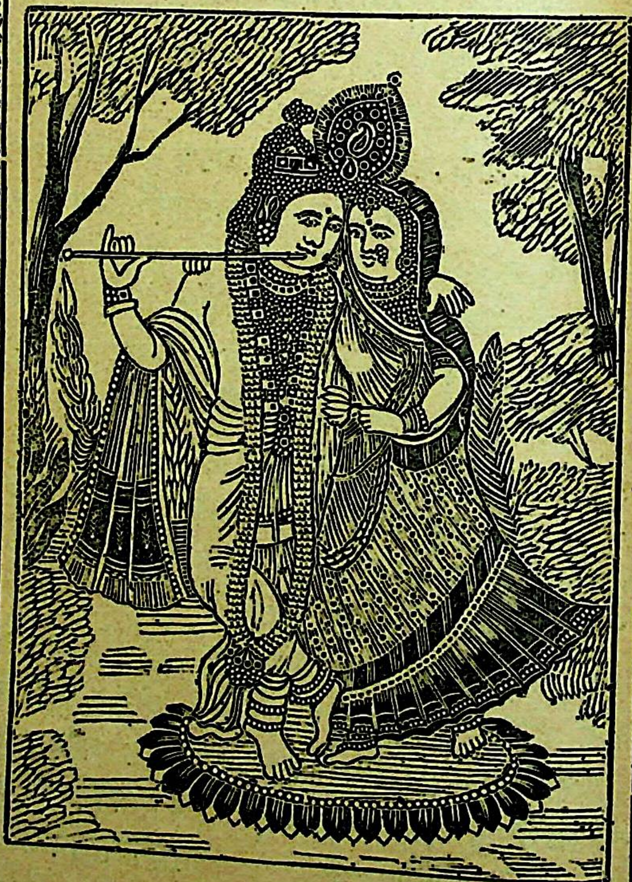
दोर्भ्यां दोर्भ्यां व्रजन्तं व्रजसदनजनाह्वानतः प्रोल्लसन्तं
मन्दं मन्दं हसन्तं मधुमधुरवचो मेति वेति ब्रुवन्तम् ॥
गोपालीपाणिपालातरलितवलयध्वानमुग्धान्तरालं
वंदे तं देवमिन्दीवरविमलदलश्यामलं नन्दबालम् ॥ १ ॥

विदित हो कि, इस करालकलिकालमें हरिनामकीर्तनसे अर्थ, धर्म, काम व मोक्षकी प्राप्ति होवै है; इसकारण इस गोपालसहस्रनामस्तोत्रकी भाषाटीका सुंदर सरल देशभाषामें लिखकर प्रकाशित करी है. यदि लेखदोषसे अथवा मूलसे अनुवादमें कुछ त्रुटि रहगई हो तो सज्जनभक्त क्षमा करैं; क्योंकि दूसरीवार छपनेमें भूलचूक सुधर जायगी. यहां इस पुस्तकके अनुवाद लिखनेका प्रयोजन यह है कि, विना अर्थ जाने नाममें पूर्णभक्ति नहीं होती है. नामका अर्थ जाननेसे उस नाममें भक्तिका प्रादुर्भाव होता है. भवसागरको तरनेके अर्थ नामस्मरणरूपी नौकाकी आवश्यकता प्रत्येक हरिजनको है; अतः यह पुस्तक प्रत्येक हरिजनको अपने पास रखनी उचित है.

इस पुस्तकके छापनेका अधिकार बंबईमें पं. हरिप्रसाद भगीरथजीके प्राचीन पुस्तकालयके अध्यक्ष श्रीयुत सेठ पंडित व्रजवल्लभ हरिप्रसादजीको समर्पण कर दिया है. यदि भक्तजन हमारी लिखी भाषाका आदर करेंगे तो हम अपने परिश्रमको सफल समझेंगे. शुभमित्यलम्. सत्कृपाभाजन—

पं. नारायणप्रसाद मिश्र.

श्रीगोपालकृष्ण.



अथ गोपालसहस्रनाम

नारायणीय-भाषाटीका-सहितम् ।

पार्वत्युवाच ।

कैलासशिखरे रम्ये गौरी पृच्छति शंकरम् ।
ब्रह्मांडाखिलनाथस्त्वं सृष्टिसंहारकारकः ॥ १ ॥
त्वमेव पूज्यसे लोकैर्ब्रह्मविष्णुसुरादिभिः ।
नित्यं पठसि देवेश कस्य स्तोत्रं महेश्वर ॥ २ ॥
आश्चर्यमिदमाख्यातं जायते मयि शंकर ।
तत्प्राणेश महाप्राज्ञ संशयं छिन्धि मे प्रभो ॥ ३ ॥

श्रीगणेशं नमस्कृत्य नारायणः प्रसन्नधीः ॥
गोपालनामतिलकं प्रकरोम्यार्य्यभाषया ॥ १ ॥

अर्थः—कैलास पर्वतके रमणीय सुन्दर अथवा क्रीडा करनेके योग्य शिखरपर पार्वतीजी शंकर (महादेव) जीसे पूछने

लगीं कि—हे नाथ! आप संपूर्ण ब्रह्मांडोंके स्वामी हो, और सृष्टिके संहारकर्ता हो ॥ १ ॥ आपही अपने भक्तजनों करके तथा ब्रह्मा, विष्णु और इन्द्र आदि देवताओं करके पूजे जाते हो. फिर हे देवेश! हे महेश्वर! आप नित्य नियमपूर्वक किसकी स्तुति किया करते हो, अर्थात् आपसे परे कौनसा देव है? किसकी उपासनामें तत्पर रहा करते हो? ॥ २ ॥ हे शंकर! मैं तो आपहीको उपास्य देवता जानती थी परन्तु आप तो अन्य देवताका स्मरण करते हो, यह मुझको अत्यन्त आश्चर्य है. अतएव, हे प्राणाधार! हे महाप्राज्ञ! हे प्रभो! मेरे इस सन्देहको आप दूर करो ॥ ३ ॥

श्रीमहादेव उवाच ।

धन्यासि कृतपुण्यासि पार्वति प्राणवल्लभे ।
रहस्यातिरहस्यं च यत्पृच्छसि वरानने ॥ ४ ॥
स्त्रीस्वभावान्महादेवि पुनस्त्वं परिपृच्छसि ।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ ५ ॥

अर्थः—पार्वतीजीका प्रश्न सुनकर श्रीमहादेवजी बोले—हे पार्वति! हे प्राणप्रिये! तथा हे वरानने! तुम धन्य हो; परोपकारको करनेवाली हो; क्योंकि जो हरिनामकीर्तनरूप स्तोत्र गुप्तसे भी गुप्त है उसे तुम पूछती हो ॥ ४ ॥ हे महादेवि! स्त्रीस्वभाव

(साहस) से जो तुम फिर मुझसे पूछती हो, सो यह रहस्य अतियत्नपूर्वक गोपनीय (अप्रकाश्य) है अर्थात् सहसा किसीके सन्मुख नहीं पढ़ना ॥ ५ ॥

दत्ते च सिद्धिहानिः स्यात्तस्माद्यत्नेन गोपयेत्।
इदं रहस्यं परमं पुरुषार्थप्रदायकम् ॥ ६ ॥
धनरत्नौघमाणिक्यतुरंगमगजादिकम्।
ददाति स्मरणादेव महामोक्षप्रदायकम् ॥ ७ ॥
तत्तेऽहं संप्रवक्ष्यामि शृणुष्वावहिता प्रिये।
योऽसौ निरंजनो देवश्चित्स्वरूपी जनार्दनः ॥ ८ ॥
संसारसागरोत्तारकारणाय नृणां सदा।
श्री[1]गंगादिकरूपेण त्रैलोक्यं व्याप्य तिष्ठति ॥ ९ ॥
ततो लोका महामूढा विष्णुभक्तिविवर्जिताः।
निश्चयं नाधिगच्छन्ति पुनर्नारायणो हरिः ॥ १० ॥
निरंजनो निराकारो भक्तानां प्रीतिकामदः।
वृन्दावनविहाराय गोपालं रूपमुद्वहन् ॥ ११ ॥

१ 'श्रीरंगादिकरूपेण' इति पाठान्तरम्।

अर्थः—अनधिकारी पुरुषोंको अपने अभीष्ट पदार्थका देना सिद्धिका हानिकारक होता है, 'निर्वीर्यो दुष्टदत्तः स्यादिति तंत्रवाक्यात्' अतएव परम उत्कृष्ट पुरुषार्थचतुष्टय (अर्थ, धर्म काम, मोक्ष) का देनेवाला यह वक्ष्यमाण रहस्य यत्नपूर्वक गोपनीय है ॥ ६ ॥ निष्ठावान् पुरुषोंको यह स्तोत्र स्मरण मात्रसे ही धन व रत्नोंका समूह, (स्त्रीपुत्र आदि-"गृहस्थानां पदं रत्नं सती भार्या बुधः सुतः" इति नीतिवाक्यात्) अश्व गज आदि पदार्थोंको देता है और अन्तमें महामोक्ष (परमपद) को देता है ॥ ७ ॥ हे प्रिये ! उस रहस्यको मैं तुम्हारे अर्थ भली भांति कहूंगा. तुम सावधान होकर सुनो. जो सर्वान्तर्यामी, निरंजन (मायासम्बन्धरहित), देव (सबमें प्रकाशित), चित्स्वरूपी (ज्ञानस्वरूप) जनार्दन भगवान् हैं ॥ ८ ॥ वही भगवान् मनुष्योंको काम, क्रोध आदि महाग्राहोंसे दुस्तर संसाररूपी सागर (समुद्र) को तरनेके हेतु श्रीगंगाजलआदिरूपसे त्रिलोकीमें व्याप्त होकर सर्वदा स्थित है ॥ ९ ॥ परन्तु महामोहसे युक्त, विष्णु भगवान्‌की भक्तिसे रहित होनेसे सम्पूर्ण मनुष्य निश्चयपूर्वक उनको नहीं जानते हैं ॥ १० ॥ इसलिये निरंजन (दुःखरहित), निराकार (प्राकृत आकाररहित), अपने भक्तोंके प्रीतिपूर्वक मनोरथ सिद्ध करनेवाले, उन भगवानने वृन्दावनमें विहार करनेके अर्थ गोपवेष धारण किया

अर्थात् गोपाल (ग्वालवाल) स्वरूप धारण किया ॥ ११ ॥

मुरलीवादनाधारी राधायै प्रीतिमावहन् ।
अंशांशभ्यस्समुन्मील्य पूर्णरूपकलायुतः ॥ १२ ॥
श्रीकृष्णचन्द्रो भगवान् नन्दगोपवरोद्यतः ।
धरणीरूपिणी-मातृयशोदानन्ददायकः ॥ १३ ॥
द्वाभ्यां प्रयाचितो नाथो देवक्यां वसुदेवतः ।
ब्रह्मणाऽभ्यर्थितो देवो देवैरपि सुरेश्वरि ॥ १४ ॥
जातोऽवन्यां मुकुंदोऽपि मुरली वेदरेचिका ।
तया सार्द्धं वचः कृत्वा ततो जातो महीतले ॥१५॥

अर्थः—मुरली (वंशी) बजाने और श्रीराधाजीके अर्थ प्रीति करनेके लिये गोपालरूप योग्य है यह विचार कर पहिले मत्स्य कूर्म आदि निज अंश और नर-नारायण, धन्वंतरी, परशुराम, कपिल सनकादिक, नारद, व्यास आदिके अंशों करके सोलह कलाओंसे युक्त होकर ॥ १२ ॥ नंद-गोपालको जो वर ब्रह्माजीनें दिया था उसे सफल करने और पृथ्वीरूप माता यशोदाको आनंद देनेके कारण वे भगवान् श्रीकृष्ण नामसे प्रकट हुए ॥ १३ ॥ तथा पूर्वजन्ममें पृश्नि और सुतपाने स्वयं भगवान्ही पुत्र होनेके लिये प्रार्थना

की थी सो इस जन्ममें देवकी व वसुदेव हुए. इन दोनोंके मनोरथ पूर्ण करनेके कारण भी हे पार्वति ! भूमिका भार दूर करनेके लिये ब्रह्मादिक देवोंसे प्रार्थित उन भगवान्ने अवतार धारण किया ॥ १४ ॥ और मुक्ति देनेवाले वे भगवान् ज्ञानको प्रकट करनेवाली अथवा वेदमन्त्रोंको प्रकाशित करनेवाली मुरली (योगमाया) के साथ " गच्छ देवि व्रजं भद्रे " इत्यादि वचन कहकर पृथिवीपर अवतार धारण करते भये ॥ १५ ॥

संसारसारसर्वस्वं श्यामलं महदुज्ज्वलम् ।
एतज्ज्योतिरहं वेद्यं चिन्तयामि सनातनम् ॥१६॥

अर्थः—वही यह जो संसारके सारभूत और सर्वस्व अर्थात् मूलरूप श्यामल और उज्ज्वल वर्ण, सबसे स्तुति करने योग्य ज्योति है उसका अर्थात् राधामाधवरूपका मैं निरन्तर ध्यान करता रहता हूँ ॥ १६ ॥

गौरतेजो विना यस्तु श्यामतेजः समर्चयेत् ।
जपेद्वा ध्यायते वापि स भवेत्पातकी शिवे ॥१७॥
स ब्रह्महा सुरापी च स्वर्णस्तेयी च पंचमः ।
एतैर्दोषैर्विलिप्येत तेजोभेदान्महेश्वरि ॥ १८ ॥

अर्थः—हे शिवे! गौरतेज (राधा) के विना जो पुरुष श्यामतेज

(श्रीकृष्ण चन्द्र) का अर्चन (पूजन) जप वा ध्यान करता है, वह पापका भागी होता है ॥ १७ ॥ और हे महेश्वरि ! जो पुरुष इन दोनों तेजोंको भेदबुद्धिसे मानता है वह ब्रह्मघाती, मदिरापान करनेवाला, सुवर्ण चुरानेवाला, और गुरुकी शय्यापर (स्त्रीके साथ) शयन करनेवाला, और इन चारों महापापियोंसे संसर्ग रखना यह पांचवां महापाप इन दोषोंसे युक्त कहा जाता है; इस कारण इन दोनों तेजोंमें भेदबुद्धि नहीं करना. भगवान्ने स्वयं कहा है, "आवयोर्भेदबुद्धिं च यः करोति नराधमः । तस्य वासः कालसूत्रे यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ १ ॥ आदौ राधां समु-च्चार्य पश्चात्कृष्णं वदेद्बुधः । व्यतिक्रमे ब्रह्महत्यां लभते नात्र संशयः ॥ २ ॥ अर्थात् हम दोनोंमें जो नराधम भेदबुद्धि मानता है उसका जबतक चंद्रमा और सूर्य रहें तबतक नरकमें वास होता है, अतः बुधजन विना भेदबुद्धिसेभी प्रथम राधाका नाम फिर कृष्णका नाम ले. इससे विपरीत नाम लेनेवाला निस्संदेह ब्रह्महत्यारा होता है ॥ १८ ॥

तस्माज्ज्योतिरभूद्द्वेधा राधामाधवरूपकम् ।
तस्मादिदं महादेवि गोपालेनैव भाषितम् ॥ १९ ॥
दुर्वाससो मुनेर्मोहे कार्तिक्यां रासमंडले ।
ततः पृष्टवती राधा सन्देहं भेदमात्मनः ॥ २० ॥

निरंजनात्समुत्पन्नं मयाऽधीतं जगन्मयि ।
श्रीकृष्णेन ततः प्रोक्तं राधायै नारदाय च ॥ २१ ॥

अर्थः—इस कारण श्याम गौरभेदसे दो प्रकारकी राधा माधवकी मूर्ति है, इससे हे महादेवि ! यह रहस्य स्वयं श्रीगोपालजीने राधाजीसे कहा है ॥ १९ ॥ कार्तिकी पूर्णिमाकी रात्रिमें रासमंडलके समय श्रीकृष्णजीके दर्शनार्थ आये हुए दुर्वासा ऋषिने विचार किया कि गोपियोंके साथ श्रीकृष्णजी कैसे रमण करते हैं ऐसे उन ऋषिके मोह होनेपर श्रीराधिकाजीने अपने भेदविषयक संदेहको जब पूंछा तब श्रीकृष्णजीने समाधान किया ॥ २० ॥ निरंजन (श्रीकृष्ण) जीसे उत्पन्न यह रहस्य मैंने पढा फिर हे जगन्मयि पार्वति ! श्रीकृष्णजीने राधा और नारदजीके अर्थ कहा ॥ २१ ॥

ततो नारदतः सर्वे विरला वैष्णवा जनाः ।
कलौ जानन्ति देवेशि गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ २२ ॥
शठाय कृपणायाथ दांभिकाय सुरेश्वरि ।
ब्रह्महत्यामवाप्नोति तस्माद्यत्नेन गोपयेत् ॥ २३ ॥

अर्थः—तदनन्तर नारदजीके द्वारा अन्य सब लोगोंने जाना किन्तु कोई २ वैष्णवजन कलियुगमें जानते हैं इससे हे देवेशि ! यह स्तोत्र अति यत्नसे गोपनीय है अर्थात्

अनधिकारी पुरुषोंको देने योग्य नहीं है ॥ २२ ॥ कदाचित् कोई पुरुष शठ कृपण और पाखंडीको देवे तो वह हे सुरेश्वरि ! ब्रह्महत्याको प्राप्त होता है, इससे इसे अतियत्नपूर्वक गुप्त रखना उचित है ॥ २३ ॥

ॐ अस्य श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रमंत्रस्य श्रीनारद ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, श्रीगोपालो देवता, कामो बीजम्, माया शक्तिः, चन्द्रः कीलकम्, श्रीकृष्णचन्द्रभक्तिरूपफलप्राप्तये श्रीगोपालसहस्रनामजपे विनियोगः ॥ अथवाॐऐं क्लीं बीजं, श्रीं ह्रीं शक्तिः, श्रीवृन्दावननिवासः कीलकम्, श्रीराधाप्रियं परं ब्रह्मेति मंत्रः, धर्मादिचतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रजपे विनियोगः ॥ २४ ॥

अर्थः—इस हमारे अनुष्ठीयमान श्रीगोपालसहस्रनाम स्तोत्ररूपी मंत्रका नारद ऋषि (प्रवर्तक) है; इसका अनुष्टुप् छन्द (वृत्त)अर्थात् बत्तीस अक्षरका अनुष्टुप्छन्द है; श्रीगोपाल उपास्य देवता हैं; कामबीज जो 'क्लीं' यह सारभूत है; मायाबीज जो 'ह्रीं' वह शक्ति है; चन्द्रबीज जो 'ग्लौं' वह कीलक है. इसप्रकार ऋष्यादि स्मरण करके श्रीकृष्णचन्द्रजीकी भक्तिसे

उत्पन्न फलकी प्राप्तिके अर्थ श्रीगोपालसहस्रनामके पाठ करनेमें इसका विनियोग है (यह कह कर दाहिने हाथमें जल लेके छोड दे ।) अथवा–'ॐ ऐं क्लीं' बीज है, 'श्रीं ह्रीं' शक्ति है; श्रीवृन्दावननिवास कीलक है, 'श्रीराधाप्रियं परं ब्रह्म' यह मंत्र है. धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों प्रकारके पुरुषार्थोंकी सिद्धिके अर्थ जप करनेमें विनियोग है. (यह कहकर दक्षिण हाथसे जल लेके छोड दे ।)

अथ मूलमंत्रेण करन्यासः । ॐ क्लीं अंगुष्ठाभ्यां नमः । कृष्णाय तर्जनीभ्यां नमः । गोविन्दाय मध्यमाभ्यां नमः । 'गोपीजन–' अनामिकाभ्यां नमः। वल्लभाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । इति करन्यासः ।

अर्थ–अब मूलमंत्रसे अंगन्यास लिखते हैं. पहले करन्यास कहते हैं:– 'ॐ क्लीं' अंगुठोंसे नमस्कार करै । 'कृष्णाय तर्जनीभ्यां नमः' इसको पढ़कर दोनों तर्जनियोंसे नमस्कार करै; 'गोविन्दाय मध्यमाभ्यां नमः' यह पढ़कर दोनों बीचकी अंगुलीयोंसे नमस्कार करै. 'गोपीजन अनामिकाभ्यां नमः' यह पढ़कर दोनों अनामिका अंगुलियोंसे नमस्कार करै । 'वल्लभाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः' यह पढ़कर दोनों छोटी अंगुलियोंसे नम-

स्कार करै । ' स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ' यह पढ़कर हथेली और हथेलीकी पीठसे नमस्कार करै. यह करन्यास है ।

अथ हृदयादिन्यासः । ॐ क्लीं हृदयाय नमः । कृष्णाय शिरसे स्वाहा । गोविन्दाय शिखायै वषट् । गोपीजन० कवचाय हुम् । वल्लभाय नेत्रत्रयाय वौषट् । स्वाहा अस्त्राय फट् । इति हृदयादिन्यासः ।

अर्थः—हृदयादिन्यास लिखते हैं—'ॐ क्लीं हृदयाय नमः' यह पढकर हृदयपर हाथ धरकर नमस्कार करै । ' कृष्णाय शिरसे स्वाहा ' यह पढकर शिरपर हाथ धरै । ' गोविन्दाय शिखायै वषट् ' यह पढकर चोटीको स्पर्श करै । ' गोपीजन कवचाय हुम् ' यह पढकर दाहिने हाथसे बायें कन्धेको और बायें हाथसे दाहिने कन्धेको स्पर्श करै । 'वल्लभाय नेत्रत्रयाय वौषट्' यह पढकर दाहिने हाथकी तर्जनी और अनामिका अंगुलीसे दोनों नेत्र और बीचकी अंगुलीसे भृकुटीके मध्यभागका स्पर्श करै । ' स्वाहा अस्त्राय फट् ' यह पढकर बायें हाथकी हथेलीपर फट्कार शब्द करै, अर्थात् दो वार ताली बजावे. यह हृदयादि न्यास है ।

अथ ध्यानम् ।

कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षस्स्थले कौस्तुभं
नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कंकणम् ।
सर्वांगे हरिचन्दनं सुललितं कंठे च मुक्तावलि-
र्गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः॥१॥
फुल्लेंदीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं
श्रीवत्सांकमुदारकौस्तुभधरं पीतांबरं सुन्दरम् ।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्यांगभूषं भजे ॥२॥

अर्थः—अब श्रीगोपालजीका ध्यान कहते हैं-जिन श्रीगोपालजीके ललाटपटल (मस्तक) में कस्तूरीका तिलक है; वक्षःस्थल (हृदय) में कौस्तुभमणि शोभा देरही और नासिकाके अग्रभागपर सुन्दर मोतीका बुलाक धारण किये, हाथमें वेणुको लिये, पहुँचे पर कंकण पहरे, सम्पूर्ण अंगमें चन्दन लगाये, कंठमें सुन्दर स्वच्छ मोतियोंकी माला पहिनी है, गोपियोंके मध्यमें विराजमान श्रीगोपालचूडामणि अर्थात् श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द सर्वोत्कर्ष करके वर्तते हैं ॥१॥ तथा खिले हुए नीलकमलकीसी कान्ति (शोभा) है,

पूर्ण चन्द्रमाके तुल्य मुख है, मोरपंखोंका प्रियमुकुट शिरपर शोभा दे रहा है, वक्षःस्थल (हृदय) में श्रीवत्स (भृगुलता) का चिन्ह है, कौस्तुभमणिको धारण किये हैं, सुन्दर पीताम्बर पहिरे हैं, और गोपियोंके नेत्ररूप कमलोंसे अर्चित (पूजित) शरीर है, गो और गोपालोंके समूहसे घिरेहुए हैं, परम दिव्य वेणुसे कामबीज 'क्लीं' का गान करते हैं, दिव्य अंगोंमें आभूपण धारण किये हैं ऐसे गोविंद भगवान्‌का मैं मन, कर्म, वाणी करके ध्यान करता हूं ॥ २ ॥

अथ गोपालसहस्रनामव्याख्या ।

श्रीगोपालो महीपालो वेदवेदांगपारगः ।
कृष्णः कमलपत्राक्षः पुंडरीकः सनातनः ॥ १ ॥

अर्थः—'श्रीगोपालः १' श्रीशब्दोऽत्र मंगलवाची, गोशब्दो वाणीपरः, श्रियं मंगलरूपिणीं गां वेदगिरं पालयति तत्प्रतिपाद्यत्वेन तद्गोचरी भवतीति श्रीगोपालः। अथवा श्रिया राधया सहितो गोपालो धर्मरक्षक इति श्रीगोपालः, श्रुतेरपि राधातापिन्या अनुमीयते चैवं 'यस्तु राधां विना तं ध्यायति भवदृति प्रपठति स मूढतमोत्तमः' आदौ राधां समुच्चार्य

पश्चात्कृष्णं वदेद्बुधः इति ब्रह्मवैवर्तोक्तेश्च । मंगलरूप जो वेद-वाणी उसके पालन करनेसे गोपालनाम है अथवा राधासहित धर्मकी रक्षा करनेवाले हैं इससे श्रीगोपाल नाम है, वेदविहित-राधातापिनीमेंभी लिखा है, कि राधाके विना श्रीकृष्णजीका नाम जो लेताहै अथवा गुणगान करताहै वह महामूढ है, बुध-जन प्रथम राधाका नाम फिर गोपालजीका नाम उच्चारण करे ऐसा ब्रह्मवैवर्त पुराणमें कहा है । 'महीपालः २' पृथु आदि रूप धारण करके पृथ्वीका पालन करनेसे महीपालनाम है । 'वेदवेदांगपारगः ३' (वेद ऋग्, यजु, साम, अथर्व) और वे-दांग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द) के पारगामी होनेसे वेदवेदांगपारग नाम है । 'कृष्णः ४' भक्तोंके मनको आकर्षण करनेसे अथवा–'श्रुतमात्रोऽपि यः स्त्रीणां प्रस-ह्याकर्षते मनः' इति भगवद्वाक्यात्—सुननेमात्रसे रासादिक्री-डामें स्त्रियोंका मन आकर्षण करनेसे किंवा "परिपूर्णतमं ब्रह्म तेन कृष्ण इति स्मृतः-इति ब्रह्मवैवर्तोक्तेः" परिपूर्णतम ब्रह्म होनेसे कृष्ण नाम है । 'कमलपत्राक्षः ५' कमलपत्रके समान बडेबडे नेत्र होनेसे कमलपत्राक्ष नाम है । 'पुंडरीकः ६' 'अथ यादि-दमास्मिन्ब्रह्मपुरे देहे पुंडरीकं वेश्मेत्यादि श्रुतेः' हृदयकमलमें निवास होनेसे पुण्डरीक नाम है । 'सनातनः ७' 'सदाभवः सनातनः' सर्वदा विद्यमान होनेसे सनातन नाम है ॥ १ ॥

गोपतिर्भूपतिः शास्ता प्रहर्ता विश्वतोमुखः ।
आदिकर्ता महाकर्ता महाकालः प्रतापवान् ॥ २ ॥

अर्थः—'गोपतिः ८' गोपरूप धारण कर गौओंके पालक होनेसे अथवा पंचेन्द्रियके नियन्ता होनेसे गोपति नाम है। 'भूपतिः ९' पृथुआदि अवतारों करके पृथ्वीके रक्षक होनेसे भूपति नाम है। 'शास्ता १०' अधार्मियोंको दंड देनेवाले तथा मनु आदिरूप धारण करके धर्मकी शिक्षा देनेवाले होनेसे शास्ता नाम है। 'प्रहर्ता ११' भक्तोंके पत्र पुष्प आदिकको प्रीतिसे ग्रहण करनेवाले अथवा दुष्टोंका नाश करनेवाले होनेसे प्रहर्ता नाम है। 'विश्वतोमुखः १२' देवताओंके प्रधान अथवा अनन्त मुख होनेसे विश्वतोमुख नाम है। 'आदिकर्ता १३' ब्रह्मादिकों के सिरजनहार होनेसे आदिकर्ता नाम है। 'महाकर्ता १४' ब्रह्मादिकके भी प्रेरणा करनेवाले सबसे बडे कर्ता होनेसे 'महाकर्ता' नाम है। 'महाकालः १५' 'ज्ञोकालः-इति श्रुतेः' सबके संहारकर्ता अर्थात् कालके भी महाकाल होनेसे महाकाल नाम है। 'प्रतापवान् १६' अप्रतिहत आज्ञावाले अर्थात् जिनकी आज्ञा कोई उल्लंघन नहीं कर सकता ऐसे होनेसे प्रतापवान् नाम है ॥ २ ॥

जगज्जीवो जगद्धाता जगद्भर्ता जगद्वसुः ।
मत्स्यो भीमः कुहूभर्ता हर्ता वाराहमूर्तिमान् ॥ ३ ॥

अर्थः—'जगज्जीवः १७ येन चेतयते विश्वमिति' जगत्को चैतैन्य करनेवाले अथवा जगत्के प्राणधारक होनेसे जगज्जीव नाम है। 'जगद्धाता १८' गीतायाम् 'धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे' जगत्में विष्णु आदिरूपसे धर्मके स्थापन करनेवाले अथवा 'अहमन्नमहमन्नम्' अन्नरूपसे जगत्के पोषक होनेसे जगद्धाता नाम है। 'जगद्भर्ता १९' बिभर्त्यन्नादिदानेन सर्वेषां वृत्तिदः पितेति स्मृतिवाक्यात्' स्वामीके समान जगत्को अन्नादि दानसे वृत्तिको पूर्ण देनेसे जगद्भर्ता नाम है। 'जगद्वसुः २०' सब संसारमें व्याप्त होनेसे जगद्वसु नाम है।'मत्स्यः २१' वेदके रक्षार्थ मत्स्यावतार होनेसे मत्स्य नाम है।'भीमः २२'दुष्टोंके भयदायक होनेसे भीम नाम है। 'कुहूभर्ता २३ 'अमावास्याके दिन पितृरूपसे पोषण करनेवाले होनेसे कुहूभर्ता नाम है।'हर्ता २४'सर्व पापोंको हरनेसे हर्ता नाम है। 'वाराहमूर्तिमान् २५' पृथ्वीकी रक्षाके अर्थ वाराहरूप धारण करनेसे वाराहमूर्तिमान् नाम है ॥ २॥

नारायणो हृषीकेशो गोविन्दो गरुडध्वजः।
गोकुलेन्द्रो महीचन्द्रः शर्वरीप्रियकारकः ॥ ४॥

अर्थः—नारायण २६(नार—अयन)'आपो नारा इति प्रोक्ता इत्यादि मनुवचनात्' परमात्माका निवासस्थान जल है अर्थात् जलशायी होनेसे अथवा मनुष्योंके समूहके आश्रयभूत हैं इससे

नारायण नाम है । हृषीकेशः २७–इन्द्रियोंके नियन्ता होनेसे हृषीकेश नाम है। गोविन्दः २८–ज्ञानसे जाननेयोग्य होनेसे अथवा इन्द्रियोंके वश करनेसे अथवा गौवोंका पालन करनेसे गोविन्द नाम है । गरुडध्वजः २९–गरुड ध्वजामें होनेसे अथवा गरुड वाहन होनेसे गरुडध्वज नाम है । गोकुलेन्द्रः ३०–'अहं किलेन्द्रो देवानां त्वं गवामिन्द्रतां गतः–इतीन्द्रवाक्यात्' गोसमूह अर्थात् गौवोंके इन्द्र होनेसे गोकुलेंद्र नाम है । महीचन्द्रः ३१–पृथ्वीपर चन्द्रमाके समान आनंददायक होनेसे महीचन्द्र नाम है । शर्वरीप्रियकारकः ३२–रात्रिसमय चन्द्ररूपसे प्रसन्न करनेवाले होनेसे शर्वरीप्रियकारक नाम है ॥ ४ ॥

कमलामुखलोलाक्षः पुण्डरीकः शुभावहः ।
दूर्वाशः कपिलो भौमः सिन्धुसागरसंगमः ॥ ५ ॥

अर्थः—कमलामुखलोलाक्षः ३३–लक्ष्मीजीके मुखके दर्शनमें आसक्त नेत्रवाले होनेसे कमलामुखलोलाक्ष नाम है। पुंडरीकः ३४–हृदयकमलमें स्थित होनेसे पुंडरीक नाम है। शुभावहः ३५–भक्तोंको सुख देनेवाले अथवा सम्पूर्ण शुभफलके दाता होनेसे शुभावहः नाम है। दूर्वाशः ३६–ब्रह्माद्वारा वत्सहरणसमय वत्सरूप धारण कर दूर्वा भक्षण करनेसे, अथवा दूर है आशा जिनसे अथवा 'अनश्नन्नन्योअभिचाकशीति–इति श्रुतेः' संसाररूप वृक्षके फल भोजन होनेसे दूर्वाश नाम है।

कपिलः ३७—'मर्काय कामं ददतं शिचि स्थितम्—इति भागवतोक्तेः' वानरोंकोदधिदुग्धादि देनेवाले होनेसे अथवा उपनिषद्—भागका व्याख्यान कर वेदकी रक्षा करनेसे अथवा दैत्योंको कंपायमान करनेसे अथवा सूर्यरूप होकर जल पीनेसे अथवा कपिलावतार होनेसे कपिल नाम है। भौमः ३८—अश्वत्थः सर्ववृक्षाणाम्—इति स्मृतेः' अश्वत्थरूपसे भूमिमें प्रगट होनेसे अथवा सर्व पृथ्वीपर विदित अथवा प्रतिमारूपसे होनेसे भौम नाम है। सिन्धुसागरसंगमः ३९—गंगा और समुद्रके संगमस्थानपर कपिलरूपसे स्थित होनेसे सिन्धुसागरसंगम नाम है ॥ ५ ॥

गोविन्दो गोपतिर्गोत्रः कालिन्दीप्रेमपूरकः ।
गोस्वामी गोकुलेन्द्रो गोगोवर्द्धनवरप्रदः ॥ ६ ॥

अर्थः—गोविन्दः ४०—'अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च—इति स्मृतः' यज्ञोंके फलके भोक्ता होनेसे अथवा वेदवाणीसे प्राप्त होनेसे गोविन्द नाम है। गोपतिः ४१—'ज्योतिषां रविरंशुमानिति' सूर्यरूप किरणोंके पति होनेसे अथवा स्वर्गादि लोकके स्वामी होनेसे गोपति नाम है। गोत्रः ४२—स्वामी रूप करके पृथिवीके रक्षक होनेसे गोत्र नाम है। कालिन्दीप्रेमपूरकः ४३—जलक्रीडा आदि करके यमुनाजीके प्रेमको बढ़ानेवाले

होनेसे कालिन्दीप्रेमपूरक नाम है । गोस्वामी ४४–इन्द्ररूप दिशाके अथवा बुद्धिके स्वामी अथवा किरणोंके स्वामी सूर्यरूप होनेसे गोस्वामी नाम है। गोकुलेंद्रः ४५–गौओंके समूहको ऐश्वर्य प्राप्त करनेवाले अथवा गोकुलमें इन्द्रसमान ऐश्वर्यवान् होनेसे गोकुलेन्द्र नाम है। गोगोवर्द्धनवरप्रदः ४६–गौ और गोवर्द्धनपर्वतरूपसे वरप्रदान करनेवाले अथवा गोपोंको गोरक्षानिमित्त वर देनेवाले होनेसे गोगोवर्द्धनवरप्रद नाम है ।

नन्दादिगोकुलत्राता दाता दारिद्र्यभञ्जनः ।
सर्वमङ्गलदाता च सर्वकामप्रदायकः ॥ ७ ॥

अर्थः–नन्दादिगोकुलत्राता ४७–विष, अग्नि और जलसे नन्दआदि गोप और गोसमूहकी रक्षा करनेवाले होनेसे नन्दादिगोकुलत्राता नाम है। दाता ४८–'वदान्यः को भवेदन्य ईदृशो जगदीश्वरात् । स्वपादं स्मरतां यो वै स्वात्मानमपि चार्पयेत्–इति स्मृतेः' अपने भक्तोंको आत्मातक दान करवाले अथवा पाखंडको खंडन करनेवाले होनेसे दाता नाम है। दारिद्र्यभञ्जनः ४९–दरिद्रके नाश करनेवाले अथवा दीनोंके दुःख दूर करनेवाले होनेसे दारिद्र्यभञ्जन नाम है। सर्वमङ्गलदाता ५०–सम्पूर्ण मंगल वस्तुवोंके दाता अथवा

सर्व प्रकारके सुख देनेवाले होनेसे सर्वमङ्गलदाता नाम है। सर्वकामप्रदायकः ५१—सम्पूर्ण कामनाओंके देनेवाले अथवा भक्तोंके सकल मनोरथ सिद्ध करनेवाले होनेसे सर्वकामप्रदायक नाम है ॥ ७ ॥

आदिकर्ता महीभर्ता सर्वसागरसिन्धुजः ।
गजगामी गजोद्धारी कामी कामकलानिधिः ॥ ८॥

अर्थ—आदिकर्ता ५२—'जन्माद्यस्य यतः-इति वेदान्तसूत्रात्' सबके आदिकर्ता अथवा संसारके मुख्य कर्ता होनेसे आदिकर्ता नाम है। महीभर्ता ५३—श्रीरामादि रूप धारण करके पृथिवीकी रक्षा करनेसे अथवा शेषरूपसे भूमंडलके धारण करनेवाले होनेसे महीभर्ता नाम है। सर्वसागरसिन्धुजः५४—संपूर्ण सागर और सिंधुनदीके उत्पत्तिस्थान होनेसे सर्वसागरसिन्धुज नाम है। गजगामी ५५—गज (हाथी) के समान गमन करनेवाले अथवा गजेंद्रके हेतु गमन करनेवाले होनेसे गजगामी नाम है। गजोद्धारी ५६—ग्राहके मुखसे गजके उद्धार करनेवाले अर्थात् ग्राहसे गजके रक्षक होनेसे गजोद्धारी नाम है। कामी ५७—प्राणियोंको अपने अपने काममें प्रवृत्त करनेवाले अथवा भक्तजनोंकी कामना पूर्ण करनेवाले होनेसे कामी नाम है। कामकलानिधिः ५८—चौंसठ काम-

कलाओंसे युक्त अथवा कामशास्त्रोक्त सिंहविक्रमादिक षोडश-बन्ध, षोडशशृंगार, आश्लेषादि अष्ट मैथुन, आभ्यंतर और बाह्य ये दो दो भेद, श्रवणादिक चतुर्विधदर्शन और विभावादिक पांच भाव तथा हेलादि तेरह भाव ऐसे कामकलाओंके आधाररूप होनेसे कामकलानिधि नाम है ॥ ८ ॥

कलङ्करहितश्चन्द्रो बिम्बास्यो बिम्बसत्तमः ।
मालाकारकृपाकारः कोकिलस्वरभूषणः ॥ ९ ॥

अर्थः-कलंकरहितः५९-सत्राजित्की स्यमंतकमाणिके कलंकसे रहित होनेसे कलंकरहित नाम है । चन्द्रः ६०-' नक्षत्राणामहं शशी-इति स्मृतेः ' तारागणमें आल्हाद होनेसे अथवा स्वयं प्रकाशित होनेसे चन्द्र नाम है । बिम्बास्यः ६१-बिम्बाफलके सदृश मनोहर मुख होनेसे बिम्बास्य नाम है । बिम्बसत्तमः ६२-बिंबाकी नाईं श्रेष्ठ होनेसे अथवा सकल प्रतिबिंबोंमें श्रेष्ठ होनेसे बिंबसत्तम नाम है । मालाकारकृपाकारः ६३-मालाकार (सुदामामाली) के विषे कृपा करनेवाले होनेसे मालाकारकृपाकार नाम है । कोकिलस्वरभूषणः ६४-कोकिलाके स्वरके भूषण अर्थात् वसन्तऋतुरूपी होनेसे कोकिलस्वरभूषण नाम है ॥ ९ ॥

रामो नीलाम्बरो देवो हली दुर्दाममर्दनः ।
सहस्राक्षपुरीभेत्ता महामारीविनाशनः ॥ १० ॥

अर्थः—रामः ६५—श्रीगोपालजीमें योगीजन रमण करते हैं इससे राम नाम है । नीलाम्बरः ६६—बलदेवरूपसे नील वस्त्र धारण करनेवाले होनेसे नीलांबर नाम है । देवः ६७—'दीव्यति क्रीडति सर्गादिभिर्योऽसौ देवः' सबमें प्रकाशित होनेसे अथवा अपनी इच्छासे सर्वत्र विचरनेवाले होनेसे देव नाम है । हली ६८—संवर्तक नाम होनेसे अथवा बलरामरूपसे हलको धारण करनेवाले होनेसे हली नाम है । दुर्दाममर्दनः ६९—दुर्दाम नामवाले बैलोंको नाग्नजितीके स्वयंवरमें मर्दन करनेवाले होनेसे दुर्दाममर्दन नाम है । सहस्राक्षपुरीभेत्ता ७०—सत्यभामाके निमित्त कल्पवृक्ष लानेको इन्द्रपुरीका भेदन करनेसे सहस्राक्षपुरीभेत्ता नाम है । महामारीविनाशनः ७१—'दन्ता गजानां कुलिशाग्रनिष्ठुराः शीर्णा यदेतेन बलं ममैतत् । महाविपत्कालविनाशनीयं जनार्दनानुस्मरणानुभावः—इति प्रल्हादवचनात् ।' महाविपत्कालको दूर करनेवाले अथवा स्मरणमात्रसे महामारी रोगको नाश करनेवाले होनेसे महामारी विनाशन नाम है ॥ १० ॥

शिवः शिवतमो भेत्ता बलारातिप्रपूजकः ।
कुमारीवरदायी च वरेण्यो मीनकेतनः ॥ ११ ॥

अर्थः—शिवः ७२–कल्याणकारी अथवा शांतिस्वरूप होनेसे शिव नाम है । शिवतमः ७३–'मङ्गलानां च मङ्गलं–इति भागवतोक्तेः ।' अत्यन्त मंगलरूप होनेसे शिवतम नाम है । भेत्ता ७४–भक्तोंके दुःखको दूर करनेवाले होनेसे भेत्ता नाम है । बलारातिप्रपूजकः ७५–इन्द्रद्वारा बडी पूजा होनेसे बलारातिप्रपूजक नाम है । कुमारीवरदायी ७६–कन्याओंके वर देनेवाले होनेसे कुमारीवरदायी नाम है । (च–और) वरेण्यः ७७–सबके प्रार्थनीय अथवा सौंदर्य, सौकुमार्य, माधुर्य, लावण्यादि गुणों करके आश्रयके योग्य होनेसे वरेण्य नाम है । मीनकेतनः ७८–'आत्मा वै पुत्रनामासि–इति श्रुतेः' पुत्ररूपसे प्रद्युम्न नामक अवतार होनेसे मीनकेतन नाम है ॥ ११ ॥

नरो नारायणो धीरो धीरापतिरुदारधीः ।
श्रीपतिःश्रीनिधिःश्रीमान्मापतिःपतिराजहा॥१२॥

अर्थः—नरः ७९–नररूप अवतार होनेसे अथवा निर्विकार होनेसे नर नाम है । नारायणः ८०–नरोंसे उत्पन्न हुए तत्त्वोंके स्थान होनेसे अथवा क्षीरशायी होनेसे नारायण

नाम है। धीरः ८१—' समाधौ लभ्यते तत्त्वं धिया योगविवृद्धया ' बुद्धि देनेवाले अथवा निश्चयात्मिका बुद्धिसे प्राप्त होनेके योग्य होनेसे धीर नाम है। धीरापतिः ८२—धीरा (रुक्मिणी) के पति अथवा धर्मनिष्ठोंके सर्वप्रकार संरक्षक होनेसे धीरापति नाम है। उदारधीः ८३—परमोत्तम बुद्धिमान् होनेसे अथवा दानी पुरुषोंके ध्यानयोग्य होनेसे उदारधी नाम है। श्रीपतिः ८४—लक्ष्मीके पति होनेसे श्रीपति नाम है। श्रीनिधिः ८५—सम्पत्ति अथवा शोभाके समुद्र होनेसे श्रीनिधि नाम है। श्रीमान् ८६—सर्व शोभाओंसे युक्त अथवा सर्वदा लक्ष्मीसहित होनेसे श्रीमान् नाम है। मापतिः ८७— ' मा च मातरि माने च—इत्येकाक्षरीकोशात् ' भक्तोंके मानरक्षक अथवा सत्पुरुषोंको मान देनेवाले होनेसे मापति नाम है। पतिराजहा ८८—' पतीनां पालकानां राज्ञां राजा पतिराजस्तत्पदं हन्ति गच्छतीति ' सम्पूर्ण राजाओंके राजा अर्थात् राजाधिराज अथवा जगत्शिरोमणि होनेसे पतिराजहा नाम है ॥ १२ ॥

वृन्दापतिः कुलं ग्रामी धाम ब्रह्म सनातनः।
रेवतीरमणो रामः प्रियश्चञ्चललोचनः ॥ १३ ॥

अर्थः—वृन्दापतिः ८९—तुलसी अथवा राधाके पति होनेसे वृन्दापति नाम है। कुलम् ९०—वामनरूपसे पृथिवी दान

लेनेसे कुल नाम है । ग्रामी ९१–षड्ज, मध्यम और गान्धार इन तीनों ग्रामोंके स्थान होनेसे अथवा गोकुल–नन्द–ग्राममें–स्वरब्रह्मरूप होनेसे ग्रामी नाम है । धामः ९२–तेजस्स्वरूप अथवा अपने आश्रित भक्तोंके पोषक होनेसे धाम नाम है । ब्रह्म ९३–स्वरूप–गुण–शक्तिसे बृहत् होनेके कारण अथवा वेदस्वरूप परब्रह्म होनेसे ब्रह्म नाम है । सनातनः ९४–सर्वदा विद्यमान अथवा सदा वेदशास्त्रों करके विस्तारित होनेके कारण सनातन नाम है । रेवतीरमणः ९५–बलदेव-रूपसे रेवतीके साथ रमण करनेसे रेवतीरमण नाम है । रामः ९६–वन लता आदिकोंमें क्रीडा करनेसे अथवा गोपियोंमें विहार करनेसे राम नाम है । प्रियः ९७–सबके प्यारे होनेसे प्रिय नाम है । चञ्चललोचनः ९८–अतिचपल नेत्रवाले होनेसे चञ्चललोचन नाम है ॥ १३ ॥

रामायणशरीरोऽयं रामी रामः श्रियःपतिः ।
शर्वरः शर्वरी सर्वः सर्वत्रशुभदायकः ॥ १४ ॥

अर्थः–रामायणशरीरः ९९–रामचरित्रका प्रवर्तक शरीर धारण करनेसे अथवा लावण्यादिनिधियुक्त स्त्रियोंके घरोंमें गमनके योग्य शरीर धारण करनेसे रामायणशरीर नाम है । रामी १००–सदा रमणरूप लीला करनेसे रामी नाम है । रामः १०१–संसाररक्षक होनेसे अथवा जगत्में रमणरूप होनेसे

राम नाम है । श्रियःपतिः १०२—लक्ष्मी, शोभा, वा सम्पत्ति इनके पालक होनेसे श्रियःपति नाम है । शर्वरः १०३—अपने आश्रयभूत प्राणियोंके अमंगलको दूर करनेसे शर्वर नाम है । शर्वरी १०४—सब प्राणियोंको स्वप्नसुखदाता अथवा रात्रिरूप होनेसे शर्वरी नाम है । सर्वः १०५—' असतश्च सतश्चैव सर्वं च प्रभवाप्ययात् । सर्वदा सर्वज्ञानाच्च सर्वमेनं प्रचक्षते ' सर्वज्ञाता और सर्वव्यापक होनेसे सर्व नाम है। सर्वत्रसुखदायकः १०६—सब स्थानोंमें भूत, भविष्य, वर्तमान कालमें स्मरण करनेवालोंके सुख देनेवाले होनेसे सर्वत्र-सुखदायक नाम है ॥ १४ ॥

राधाराधयिताऽऽराधी राधाचित्तप्रमोदकः ।
राधारतिसुखोपेतो राधामोहनतत्परः ॥ १५ ॥

अर्थः—राधाराधयिता १०७—राधाजीने जिनका आराधन किया है ऐसे होनेसे राधाराधयिता नाम है । राधी १०८—राधया माधवो देवो माधवेनैव राधिका—इति श्रुतेः ' राधिको नित्य संबंधवाले होनेसे राधी नाम है; अथवा ब्राह्मणोंकी पूजादिसे आराधना करनेवाले अथवा आराधन करने योग्य होनेसे आराधी नाम है । राधाचित्तप्रमोदकः १०९—राधाजीके चित्तको प्रसन्न करनेवाले होनेसे राधाचित्तप्रमोदक नाम है । राधारतिसुखोपेतः ११०—राधाजीके संग रमणसुखसे युक्त

होनेसे राधारतिसुखोपेत नाम है। राधामोहनतत्परः १११–राधिकाजीके मोहनेमें दत्तचित्त होनेसे राधामोहनतत्पर नाम है ॥ १५ ॥

राधावशीकरो राधाहृदयाम्भोजषट्पदः ।
राधालिङ्गनसम्मोहो राधानर्तनकौतुकः ॥ १६ ॥
राधासंजातसंप्रीतो राधाकाम्यफलप्रदः ।
वृन्दापतिःकोकनिधिः कोकशोकविनाशनः॥१७॥
चन्द्रापतिश्चन्द्रपतिश्चण्डकोदण्डभञ्जनः ।
रामो दाशरथी रामो भृगुवंशसमुद्भवः ॥ १८ ॥

अर्थः–राधावशीकरः ११२–श्रीराधाजीको अपने प्रभावसे वशमें करनेवाले होनेसे राधावशीकर नाम है। राधाहृदयाम्भोजषट्पदः ११३–श्रीराधाजीके हृदयकमलमें भौंरेके समान रस ग्रहण करनेवाले होनेसे राधाहृदयाम्भोजषट्पद नाम है। राधालिङ्गनसंमोहः ११४–राधाजीके आलिंगनमें हर्ष प्राप्त करनेसे राधालिङ्गनसंमोह नाम है। राधानर्तनकौतुकः ११५–श्रीराधिकाजीके संग नृत्यलीला करनेसे राधानतर्नकौतुक नाम है॥ १६ ॥ राधासंजातसंप्रीतः ११६–श्रीराधाजीसे भलीभांति प्रीति होनेसे अथवा राधाजीके उत्पन्न करनेवाले वृषभानुजीसे प्रीति होनेसे राधासंजातसंप्रीत ऐसा नाम है। राधाकाम्यफ-

लप्रदः ११७—राधाजीको वांछितफल प्रदान करनेसे राधाकाम्यफलप्रद नाम है। वृन्दापतिः११८—वृन्दा (जलन्धरकी स्त्री) के पालक होनेसे वृन्दापति नाम है। कोकनिधिः ११९—कोक (काम) शास्त्रके प्रतिष्ठास्थान अर्थात् संस्थापक होनेसे कोकनिधि नाम है। कोकशोकविनाशनः१२०—'कोकश्चक्रे वृके ज्यैष्ठ्याम्-इति विश्वः' कोकनाम पक्षीके शोक करनेवाले अथवा कोकों (वृकों)से उत्पन्न हुआ गोकुलवासियोंका दुःख दूर करनेवाले होनेसे कोकशोकविनाशन नाम है॥ १७॥ चन्द्रापतिः १२१—चन्द्रा नामसखीके पति होनेसे चन्द्रापति नाम है। चन्द्रपतिः १२२—चन्द्रमाके पालक होनेसे अथवा चंद्रवंशीय यदुपति होनेसे चन्द्रपति नाम है। चण्डकोदण्डभञ्जनः १२३—'धार्यमाणो नृभिः कृष्णः प्रसह्य धनुराददे—इति श्रीभागवतात्' रुद्रधनुषको तोड़नेसे चण्डकोदण्डभञ्जन नाम है। रामः १२४—योगीजनोंके चित्तमें रमण करनेसे राम नाम है। दाशरथिः १२५—दशरथके घरमें अवतार धारण करनेसे दाशरथि नाम है। रामः १२६—सूर्य अग्नि और चन्द्र इन तीनों रूपवाले होनेसे राम नाम है। भृगुवंशसमुद्भवः १२७ भृगुवंशमें परशुराम रूप धारण करनेसे भृगुवंशसमुद्भव ऐसा नाम है॥ १८॥

आत्मारामो जितक्रोधो मोहो मोहान्धभञ्जनः।
वृषभानुभवो भावी काश्यपिः करुणानिधिः॥१९॥

अर्थः—आत्मारामः १२८—अपने आपमें ही रमण करनेवाले अथवा आत्मारूप राधाके संग रमण करनेसे आत्माराम नाम है। जितक्रोधः १२९—क्रोधको जीतनेवाले होनेसे जितक्रोध नाम है। मोहः १३०—'कवय आनतकन्धरचित्ताः कश्मलं ययुरनिश्चिततत्त्वाः—इति भागवतोक्तेः' देवतादिकोंके चित्तको भी मोहरूपसे मोहित करनेवाले होनेसे मोह नाम है। मोहान्धभञ्जनः १३१—मोहरूपी अंधकारको नाश करनेसे अथवा मोहमें जो अन्धे हैं उनके नाशक होनेसे मोहान्धभञ्जन नाम है। वृषभानुभवः १३२—'राधा कृष्णात्मिका नित्यं कृष्णो राधात्मको ध्रुवम्—इत्युक्तेः' वृषभानुसुताराधारूप होनेसे, अथवा वृषभासुरका अनुभव किया कि यह वृषभ नहीं है किन्तु असुर है, अथवा धर्मसे अनुभव होनेसे वृषभानुभव नाम है। भावी १३३—'भावः पदार्थे सत्तायाम्—इति कोशात्' सम्पूर्ण पदार्थ हैं जिनमें, अथवा सम्पूर्ण पदार्थ हैं जिनके, अथवा कर्मफलकी भावना करनेसे भावी नाम है। काश्यपिः १३४—कश्यपके पुत्र होनेसे काश्यपि नाम है। करुणानिधिः १३५—करुणा (दया) के निधि (निधान) अर्थात् दयालु होनेसे करुणानिधि नाम है॥ १९॥

कोलाहलो हली हालो हली हलधरप्रियः।
राधामुखाब्जमार्तण्डो भास्करो रविजो विधुः॥२०॥

अर्थः—कोलाहलः १३६—दुष्टोंके एकीभावको नाश करनेवाले होनेसे कोलाहल नाम है। हली १३७—बलदेवरूपसे हल धारण करनेसे हली नाम है। हालः १३८—हलसे उत्पादित यवादि व अन्नस्वरूप होनेसे हाल नाम है। हली १३९—'अहं कार्ष्णायसो भूत्वा कर्षामि पृथिवीमिमाम्—इति स्मृतेः' अर्थात् खेती उत्पन्न करनेसे हली नाम है। हलधरप्रियः १४०—हलधरके प्रिय लघु भ्राता होनेसे हलधरप्रिय नाम है। राधामुखाब्जमार्तण्डः १४१—श्रीराधिकाजीके मुखारविन्दको प्रकाश करनेमें सूर्यरूप होनेसे राधामुखाब्जमार्तण्ड नाम है। भास्करः १४२—लोकके प्रकाशकर्ता होनेसे भास्कर नाम है। रविजः १४३—सूर्यवंशमें रामरूप होनेसे रविज नाम है। विधुः—१४४ 'नक्षत्राणामहं शशी—इति स्मृतेः' चन्द्रमारूप होनेसे विधु नाम है॥ २०॥

विधिर्विधाता वरुणो वारुणो वारुणीप्रियः।
रोहिणीहृदयानन्दी वसुदेवात्मजो बली॥ २१॥

अर्थः—विधिः १४५—जगत्का विधान करनेसे अथवा अपने ही अंगोंसे यज्ञोंके विधान करनेवाले होनेसे विधि नाम है। विधाता १४६—जीवोंको विचित्र कर्मफल देनेसे अथवा जगत्को अपने अपने कार्यमें प्रवृत्त करनेसे विधाता नाम है।

वरुणः १४७–श्रेष्ठ कर्मोंद्वारा वरण किये जानेसे वा प्रचेतारूप होनेसे तथा भक्तोंको वरण करनेवाले होनेसे वरुण नाम है। वारुणः १४८–'महर्षीणामहं भृगुरिति' वरुणके भृगुरूप पुत्र होनेसे अथवा निषिद्धाचरणको निवारण करनेवाले होनेसे वारुण नाम है। वारुणीप्रियः १४९–वरुणकी पुत्रीके प्रिय होनेसे वारुणीप्रिय नाम है। रोहिणीहृदयानन्दी १५०–रोहिणीके हृदयको आनन्द दाता होनेसे रोहिणीहृदयानन्दी नाम है। वसुदेवात्मजः १५१–वसुदेवजीके पुत्र होनेसे वसुदेवात्मज नाम है। बली १५२–विश्व धारण आदि शक्तिवाले होनेसे बली नाम है॥ २१॥

नीलाम्बरो रौहिणेयो जरासन्धवधोऽमलः।
नागो जवाम्भो विरुदो विरहो वरदो बली॥ २२॥

अर्थः—नीलाम्बरः १५३–यमुना (कालिंदी) को वरनेवाले अथवा निरन्तर इला (पृथिवी) को विराट्‌रूपद्वारा आवरण करनेसे नीलाम्बर नाम है। रौहिणेयः १५४–रोहिणीके पुत्र बलदेवरूप होनेसे रौहिणेय नाम है। जरासन्धवधः १५५–जरासन्धका भीमसेनद्वारा वध करानेसे जरासन्धवध नाम है। अमलः १५६–सांसारिक विषयोंसे रहित होनेसे, अथवा निर्मलरूप तथा रोगरहित होनेसे अमल नाम है। नागः १५७–निष्ठारहित पुरुषोंके हृदयमें न प्राप्त होनेवाले,

अथवा शेषरूपसे पृथ्वीको धारण करनेवाले होनेसे नाग नाम है । जवाम्भः १५८—भक्तोंके आश्वासननिमित्त शीघ्रतापूर्वक शब्द करनेवाले अथवा अन्तर्मुखमें शीघ्र प्रकाशमान होनेसे जवाम्भ नाम है । विरुदः १५९—'कृतागसं तं प्ररुदन्तमक्षिणी—इति भागवतोक्तेः' विमुख प्राणियोंको रोदन करानेसे अथवा भक्तोंको विशेष रुलानेवाले अथवा यशोदाजीके भयसे रोनेवाले होनेसे विरुद नाम है । विरहः १६०—'यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत—इति गीतोक्तेः' अधर्मके फैलनेपर अवतार लेनेसे विरह नाम है । वरदः १६१—ईप्सित वर देनेवाले होनेसे वरद नाम है । बली १६२—विराट्रूप होनेसे अथवा वला जो लक्ष्मी उसके वर होनेसे बली नाम है ॥ २२ ॥

गोपथो विजयी विद्वान् शिपिविष्टः सनातनः ।
पर्शुरामवचोग्राही वरग्राही शृगालहा ॥ २३ ॥

अर्थः—गोपथः १६३—'नाविरतो दुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः । नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्—इत्युक्तेः' वेदवाणीरूप ज्ञान ही है प्राप्त होनेका मार्ग जिनका उनका गोपथ नाम है । विजयी १६४—ज्ञान, बल, ऐश्वर्यादि द्वारा सबसे उत्कृष्ट होनेसे विजयी नाम है । विद्वान् १६५—'यः सर्वज्ञः स सर्ववित्—इत्यादिश्रुतेः' जो सर्वज्ञ, अर्थात् सर्व जगत्को यथार्थ जानते हैं

उनका विद्वान् नाम है। शिपिविष्टः १६६ 'यज्ञोऽयं विष्णुः पशवः शिपिर्यज्ञ एव पशुषु प्रतिष्ठितः—इति श्रुतेः' पशुओंमें यज्ञरूपसे स्थित अथवा किरणोंमें प्रकाशरूपसे स्थित होनेसे शिपिविष्ट नाम है। सनातनः १६७—सर्वदा यज्ञादिकके रूपको विस्तार करनेवाले होनेसे अथवा सनातन ऋषिरूप होनेसे सनातन नाम है। परशुरामवचोग्राही १६८—हरिवंशमें परशुरामका वचन है कि, 'मुझको स्मरण कर जो संग्राममें जाता है वह विजय पाता है' इस वचनको ग्रहण करनेसे परशुरामवचोग्राही नाम है। वरग्राही १६९—'भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि—इति मार्कण्डेयोक्तेः' अपने मधुरवचनसे मधु कैटभ आदि दैत्योंको मोहित कर उनसे भी उनकी मृत्युका वर ग्रहण करनेमें शीलवान् होनेसे वरग्राही नाम है। शृगालहा १७०—मिथ्यावासुदेवरूप शृगालका वध करनेसे शृगालहा नाम है ॥ २३ ॥

दमघोषोपदेष्टा च रथग्राही सुदर्शनः ।
वीरपत्नीयशस्त्राता जराव्याधिविघातकः ॥२४॥

अर्थः—दमघोषोपदेष्टा १७१—दमघोष राजाको उपदेश करनेसे अथवा इन्द्रियनिग्रहका जो उपदेशरूप घोष उसके उपदेशक होनेसे दमघोषोपदेष्टा नाम है। रथग्राही १७२—

अर्जुनके सारथी होनेसे रथग्राही नाम है। सुदर्शनः १७३–सुन्दर दर्शनीय अर्थात् मनोहररूप होनेसे सुदर्शन नाम है। वीरपत्नीयशस्त्राता १७४–द्रौपदी, रुक्मिणी आदि वीरपत्नियोंके यशकी रक्षा करनेसे वीरपत्नीयशस्त्राता नाम है। जराव्याधिविघातकः[1] १७५–जरामरणरूप रोगादिके नाशक वा जरा नाम लुब्धकके अंतःकरणकी व्याधियोंको[2] दूर करनेसे जराव्याधिविघातक नाम है ॥ २४ ॥

द्वारकावासतत्त्वज्ञो हुताशनवरप्रदः ।
यमुनावेगसंहारी नीलांबरधरः प्रभुः ॥ २५ ॥

अर्थः–द्वारकावासतत्त्वज्ञः १७६–द्वारकावासके तत्त्व (जलस्तंभादि) को जाननेवाले होनेसे अथवा द्वारकावासियोंके शिक्षक होनेसे द्वारकावासतत्त्वज्ञ नाम है। हुताशनवरप्रदः १७७–'विष्णुश्च दाहिकां शक्तिं ददौ तस्मै शिवाज्ञया–इति

---

१ यहां 'ज्वरव्याधिविघातकः' यह भी पाठ है.

२ जिस समय भगवान् श्रीकृष्णजी अपने धाम जानेलगे तब जरा नाम व्याधने दूरहीसे भगवच्चरणोंको मृगइका मुख समझकर बाण मारा. पीछे समीप आकर देखा तो मृग नहीं है. अपने बाणसे आपके मृगमुखसे चरणकमल ही बींधे गये हैं इससे व्याधके मनमें भई हुई व्याधिको भगवान्ने सांत्वना देकर शांत की.

ब्रह्मवैवर्तोक्तेः ' अग्निके अर्थ वरप्रदान करनेसे हुताशनवरप्रद नाम है । यमुनावेगसंहारी १७८–बलरामरूपसे यमुनाके प्रवाहको रोकनेसे यमुनावेगसंहारी नाम है । नीलाम्बरधरः १७९–'अहं धारणया शक्त्या द्यावाभूमी दधाम्यहम्–इत्युक्तेः' निरन्तर इला (पृथ्वी) और आकाशको धारण करनेवाले होनेसे अथवा बलभद्ररूपसे नीलांबर धारण करनेसे नीलांबरधर नाम है । प्रभुः १८०–सामर्थ्यवान् होनेसे प्रभु नाम है ॥२५॥

विभुः शरासनो धन्वी गणेशो गणनायकः ।
लक्ष्मणो लक्षणो लक्ष्यो रक्षोवंशविनाशनः॥२६॥

अर्थः–विभुः १८१–भक्तोंको अभीष्ट फल देनेसे अथवा विविध प्रकारसे जगत्में व्याप्त होनेसे विभु नाम है। शरासनः १८२–अनेकप्रकारकी उद्वेजकतासे बाणमें निवास करनेसे अथवा शत्रुओंके विषे बाणप्रहार करनेसे शरासन नाम है। धन्वी १८३–धनुषधारी होनेसे अथवा धनुर्विद्या जाननेवाले होनेसे धन्वी नाम है । गणेशः १८४–गौ और गोपियोंके समूहके पालक होनेसे गणेश नाम है । गणनायकः १८५–गौ और गोप गोपियोंके नायक होनेसे गणनायक नाम है । लक्ष्मणः १८६–उत्तम चिह्नवाले होनेसे अथवा सबको जाननेसे लक्ष्मण नाम है । लक्षणः १८७–हाथपांवोंमें शुभ लक्षण धारण करनेसे अथवा अनेक दीनोंको अपने धाम प्राप्त

करनेवाले होनेसे लक्षण नाम है। लक्ष्यः १८८—'प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा यस्य तल्लक्ष्यमुच्यते ॥ अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत्—इति श्रुतेः' देखने योग्य तथा अवधिरूप होनेसे तथा अपने भक्तोंके लक्ष्य होनेसे लक्ष्य नाम है। रक्षोवंशविनाशनः १८९—राक्षसोंके वंशके नाश करनेवाले होनेसे रक्षोवंशविनाशन नाम है ॥ २६ ॥

वामनो वामनीभूतोऽवामनो वामनारुहः ।
यशोदानन्दनः कर्ता यमलार्जुनमुक्तिदः ॥ २७ ॥

अर्थः—वामनः १९०—'ॐ नमो वामनाय—इति यजुःश्रुतेः' तथा च 'वामनमासीनं विश्वेदेवा उपासत इति—श्रुतेः' वामनावतार धारण करनेसे वामन नाम है। वामनीभूतः १९१—अपने बृहद्रूपका छोटा रूप करनेसे वामनीभूत नाम है। अवामनः १९२—'महतो महीयान्—इति श्रुतेः' सबसे बड़े शरीरवाले अर्थात् विराट्रूप होनेसे अवामन नाम है। वामनारुहः १९३—अद्भुतरूपसे प्रगट होनेसे वामनारुह नाम है। यशोदानन्दनः १९४—यशोदाजीको आनन्द देनेवाले पुत्र होनेसे यशोदानन्दन नाम है। कर्ता १९५—जगत्के कारण होनेसे कर्ता नाम है। यमलार्जुनमुक्तिदः १९६—अर्जुनवृक्षरूप नलकूवर और मणिग्रीव इन दोनों को मोक्ष देनेसे यमलार्जुनमुक्तिद नाम है ॥ २७ ॥

उलूखली महामानो दामबद्धाह्वयी शमी ।
भक्तानुकारी भगवान् केशवो बलधारकः ॥ २८ ॥

अर्थः—उलूखली १९७-'गोपिकोलूखले दाम्ना बबन्ध प्राकृतं यथा—इति भागवतात्' भक्तवात्सल्यके कारण उलूखल (ओखली) में स्वयं बँध जानेसे उलूखली नाम है। महामानः १९८—बड़ोंसे बड़ा सन्मान पानेवाले होनेसे अथवा सर्वोत्कृष्ट मानवाले होनेसे महामान नाम है। दामबद्धाह्वयी १९९—दाम (रस्सीसे) बांधनेके कारण विदितनामवाले होनेसे दामबद्धाह्वयी नाम है। शमी २००—'शान्तं शाश्वतमप्रमेयम्—इत्यादिश्रुतेः' भक्तजनोंके तीनों प्रकारके ताप शान्त करनेवाले होनेसे अथवा स्वयं शान्तस्वरूप होनेसे शमी नाम है। भक्तानुकारी २०१—भक्तजनोंपर अनुग्रह करनेवाले होनेसे अथवा भक्तोंको अंगीकार करनेके स्वभाववाले होनेसे भक्तानुकारी नाम है। भगवान् २०२—'ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः॥ ज्ञानवैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरणा—इत्युक्तेः' नित्य छहों ऐश्वर्योंसे युक्त अथवा षट् गुणों करके युक्त होनेसे भगवान् नाम है। केशवः २०३—सुन्दर केशवाले होनेसे अथवा 'ईशोऽहं सर्वदेहिनाम्—इत्युक्तेः' ब्रह्मांडके ईश्वर होनेसे केशव नाम है। बलधारकः २०४—बलको धारण करनेसे अथवा दुष्टोंके संहारके लिए भीम अर्जुन आदिकोंको बल अर्थात्

पुरुषार्थ धारण करानेवाले होनेसे बलधारक नाम है ॥ २८॥

केशिहा मधुहा मोही वृषासुरविघातकः ।
अघासुरविनाशी च पूतनामोक्षदायकः ॥ २९ ॥

अर्थः—केशिहा २०५—केशीदैत्यके संहारकर्ता होनेसे केशिहा नाम है । मधुहा २०६—मधुनाम दैत्यके नाशक होनेसे मधुहा नाम है । मोही २०७—अभक्तजनोंमें मोह रखनेवाले होनेसे मोही नाम है । वृषासुरविघातकः २०८—वृषासुरके मारनेवाले होनेसे वृषासुरविघातक नाम है । अघासुरविनाशी २०९—अघासुरको मारनेवाले होनेसे अघासुरविनाशी नाम है । पूतनामोक्षदायकः २१०—पूतनाको मोक्ष देनेवाले होनेसे पूतनामोक्षदायक नाम है ॥ २९ ॥

कुब्जाविनोदी भगवान् कंसमृत्युर्महामखी ।
अश्वमेधो वाजपेयो गोमेधो नरमेधवान् ॥ ३० ॥

अर्थः—कुब्जाविनोदी २११—कुब्जाके साथ विहार करनेसे कुब्जाविनोदी नाम है । भगवान् २१२—प्रशंसाके योग्य ऐश्वर्यवान् होनेसे भगवान् नाम है । कंसमृत्युः २१३—कंसकी मृत्युका कारण होनेसे कंसमृत्यु नाम है । महामखी २१४—स्वाहाकार, स्वधाकार, बलिकर्म, वेदपाठ और अतिथिसत्कार इन पांचों

यज्ञोंसे युक्त होनेसे महामखी नाम है । अश्वमेधः २१५—'यज्ञो वै विष्णुः—इति श्रुतेः' अश्वमेध अर्थात् प्राजापत्ययज्ञरूप होनेसे अश्वमेध नाम है । वाजपेयः २१६—बार्हस्पत्ययज्ञरूप अथवा देवाचार्य बृहस्पतिरूप होनेसे वाजपेय नाम है । गोमेधः २१७—गोमेधरूप अथवा इन्द्रियानिग्रह करनेसे गोमेध नाम है । नरमेधवान् २१८—नरमेधयज्ञरूप होनेसे नरमेधवान् नाम है ॥३०॥

कन्दर्पकोटिलावण्यश्चन्द्रकोटिसुशीतलः ।
रविकोटिप्रतीकाशो वायुकोटिमहाबलः ॥ ३१ ॥

अर्थः—कन्दर्पकोटिलावण्यः २१९—कोटि कामदेवोंके समान सुन्दर रूपवाले होनेसे कन्दर्पकोटिलावण्य नाम है । चन्द्रकोटिसुशीतलः २२०—कोटिचन्द्रमाके समान शीतल होनेसे चन्द्रकोटिसुशीतल नाम है । रविकोटिप्रतीकाशः २२१—कोटि सूर्योंके समान प्रकाशमान् होनेसे रविकोटिप्रतीकाश नाम है । वायुकोटिमहाबलः २२२—कोटिवायुके सदृश बलवान् होनेसे वायुकोटिमहाबल नाम है ॥ ३१ ॥

ब्रह्मा ब्रह्माण्डकर्ता च कमलावाञ्छितप्रदः ।
कमली कमलाक्षश्च कमलामुखलोलुपः ॥ ३२ ॥

अर्थः—ब्रह्मा २२३—प्रजाको बढ़ानेसे अथवा रास आदि

क्रीडाके निमित्त बढनेवाले होनेसे ब्रह्मा नाम है । ब्रह्माण्ड-कर्ता २२४–संपूर्ण ब्रह्मांडोंके कर्ता होनेसे ब्रह्मांडकर्ता नाम है । कमलावाञ्छितप्रदः २२५–लक्ष्मीजीको अथवा कमला-नामवाली गोपीको इच्छित फल देनेवाले होनेसे कमलावा-ञ्छितप्रद नाम है । कमली २२६--' बाहुं प्रियांस उपधाय गृहीतपद्मः--इति भागवतोक्तेः ' हाथमें कमल ग्रहण करनेसे अथवा वक्षस्स्थलमें लक्ष्मीका चिन्ह होनेसे कमली नाम है । कमलाक्षः २२७–कमलके समान नेत्रवाले होनेसे कमलाक्ष नाम है । कमलामुखलोलुपः २२८–लक्ष्मीजीके मुखपर चुंबनके लिए आसक्त होनेसे कमलामुखलोलुप नाम है ॥ ३२ ॥

कमलाव्रतधारी च कमलाक्षः पुरन्दरः ॥
सौभाग्याधिकचित्तोऽयं महामायी महोत्कटः ॥३३॥

अर्थः—कमलाव्रतधारी २२९–केवल लक्ष्मीके व्रतके धारण कर्ता होनेसे कमलाव्रतधारी नाम है । कमलाक्षः २३०–लक्ष्मीजीमें स्थिर नेत्रवाले होनेसे कमलाक्ष नाम है । पुरन्दरः २३१--असुरोंके पुरोंको विध्वंस करनेवाले होनेसे पुरन्दर नाम है । सौभाग्याधिकचित्तः २३२--परमोत्तम चित्तवाले होनेसे सौभाग्याधिकचित्त नाम है । महामायी २३३--' मायां तु प्रकृतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम्–इत्युक्तेः' अचिन्त्या माया

अर्थात् शक्तिवाले होनेसे महामायी नाम है। महोत्कटः २३४—बड़े उत्कट अर्थात् जो किसीसे भी नहीं जीते जासकें ऐसे होनेसे महोत्कट नाम है ॥ ३३ ॥

ताटकारिः सुरत्राता मारीचक्षोभकारकः ।
विश्वामित्रप्रियो दान्तो रामो राजीवलोचनः॥३४॥

अर्थः—ताटकारिः २३५—रामावतारमें ताटका राक्षसीका वध करनेसे ताटकारि नाम है। सुरत्राता २३६—देवताओंके रक्षक होनेसे सुरत्राता नाम है। मारीचक्षोभकारकः २३७—मारीचको क्षोभ करनेवाले होनेसे मारीचक्षोभकारक नाम है। विश्वामित्रप्रियः २३८—विश्वामित्रजीके प्रिय होनेसे अथवा विश्वामित्र जिनके प्रिय हैं ऐसे होनेसे विश्वामित्रप्रिय नाम है। दान्तः २३९—इन्द्रियोंके दमन करनेवाले अर्थात् जितेन्द्रिय होनेसे दान्त नाम है। रामः २४०—'रश्च रामेऽनिले वह्नौ भूमावपि धनेऽपि च—इत्येकाक्षरीकोशात्' रा (पृथ्वी) को अम (प्राप्त होनेवाले) अथवा प्रलयकालमें विश्वको अपनी काँखमें लपेट लेनेसे राम नाम है। राजीवलोचनः २४१—'राजीवं रालिने ना तु भेदे हरिणमीनयोः—इति कोशात्' हरिणोंको प्रकाश करनेवाले अथवा कमलतुल्य नेत्र होनेसे राजीवलोचन नाम है ॥ ३४ ॥

लंकाधिपकुलध्वंसी विभीषणवरप्रदः ।
सीतानन्दकरो रामो वीरो वारिधिबन्धनः ॥ ३५॥

अर्थः—लंकाधिपकुलध्वंसी २४२—रामरूपसे रावणके कुलका विध्वंस करनेवाले होनेसे लंकाधिपकुलध्वंसी नाम है । विभीषणवरप्रदः २४३—विभीषणको वरप्रदान करनेसे विभीषणवरप्रद नाम है । सीतानन्दकरः २४४—श्रीसीताजीके आनन्ददाता होनेसे सीतानन्दकर नाम है । रामः २४५—अतिरमणीय अथवा रमण आदिक दिव्यगुण धारण करनेवाले होनेसे राम नाम है । २४६—अत्यन्त बलवान् होनेसे अथवा विशेष करके सब प्राणियोंको कँपानेसे वीर नाम है । वारिधिबंधनः २४७—रामावतारमें समुद्रमें पाषाणका सेतु बनानेसे वारिधिबन्धन नाम है ॥ ३५ ॥

खरदूषणसंहारी संकेतपुरवासवान् ।
चन्द्रावलीपतिः कूलः केशिकंसवधोऽमलः ॥३६॥

अर्थः—खरदूषणसंहारी २४८—खरदूषणराक्षसका संहार करनेसे खरदूषणसंहारी नाम है । संकेतपुरवासवान् २४९—गोलोकश्वेतद्वीपआदि पुरोंमें निवास करनेसे संकेतपुरवासवान् नाम है । चन्द्रावलीपतिः २५०—राधाजीकी प्रियसखी चंद्रावलीके पति होनेसे चन्द्रावलीपति नाम है । कूलः २५१—

यमुनाजीका तट ही क्रीडास्थान होनेसे कूल नाम है । केशिकंसवधः २५२–केशी और कंसके वध करनेवाले होनेसे केशिकंसवध नाम है । अमलः २५३–' अस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्–इति श्रुतेः ' वैषम्यादिमलरहित होनेसे अमल नाम है ॥ ३६ ॥

माधवो मधुहा माध्वी माध्वीको माधवीविभुः ।
मुंजाटवीगाहमानो धेनुकारिर्धरात्मजः ॥३७॥

अर्थः—माधवः २५४–मधुवंशमें उत्पन्न होनेसे अथवा मा (लक्ष्मी) के धव (पति) होनेसे माधव नाम है । मधुहा २५५–मधुदैत्यके मारनेसे मधुहा नाम है । माध्वी २५६–अतिमाधुर्य गुणवाले होनेसे माध्वी नाम है । माध्वीकः २५७–मुरलीद्वारा मधुर गान करनेवाले होनेसे माध्वीक नाम है । माधवीविभुः २५८–' वासन्ती माधवी लता–इत्यमरः ' वसन्तऋतुकी लतामें व्यापक होनेसे माधवीविभु नाम है । मुंजाटवीगाहमानः २५९–मुंजाटवीनामक रमणीय वनमें भ्रमण करनेवाले होनेसे मुंजाटवीगाहमान नाम है। धेनुकारिः २६०–बलरामजीके रूपसे धेनुकासुरका वध करनेसे धेनुकारि नाम है । धरात्मजः २६१–' यशोदा सा धराऽभवत्–इत्युक्तेः ' यशोदाके पुत्र होनेसे धरात्मज नाम है ॥ ३७ ॥

वंशीवटविहारी च गोवर्द्धनवनाश्रयः ॥
तथा तालवनोद्देशी भांडीरवनशंकहा ॥ ३८॥

अर्थः— वंशीवटविहारी २६२—वंशीवटपर विहार करनेसे वंशीवटविहारी नाम है। गोवर्द्धनवनाश्रयः २६३—गोवर्धन पर्वतके समीपके वनका आश्रय करनेवाले होनेसे गोवर्धन-वनाश्रय नाम है। तालवनोद्देशी २६४—ग्वालबालोंको ताल-फल भोजन करानेके निमित्त तालवनमें जानेका संकेत कर-नेवाले होनेसे तालवनोद्देशी नाम है। भांडीरवनशंकहा २६५—कालियनागको निकालकर भांडीरवनको निःशंक करनेसे भांडीरवनशंकहा नाम है ॥ ३८ ॥

तृणावर्तकृपाकारी वृषभानुसुतापतिः ।
राधाप्राणसमो राधावदनाब्जमधुव्रतः ॥ ३९॥

अर्थः—तृणावर्तकृपाकारी २६६—तृणावर्त असुरको मार-कर उसे मोक्षपद देनेकी कृपा करनेसे तृणावर्तकृपाकारी नाम है। वृषभानुसुतापतिः २६७—श्रीराधिकाजीके पति होनेसे वृष-भानुसुतापति नाम है। राधाप्राणसमः २६८—श्रीराधिकाजीको प्राणोंके समान प्रिय होनेसे राधाप्राणसम नाम है। राधा-वदनाब्जमधुव्रतः २६९—श्रीराधाजीके मुखारविन्दपर भौंराके सदृश लोलुप होनेसे राधावदनाब्जमधुव्रत नाम है ॥ ३९ ॥

गोपीरंजनदैवज्ञो लीलाकमलपूजितः ।
क्रीडाकमलसंदोहो गोपिकाप्रीतिरंजनः ॥ ४० ॥

अर्थः—गोपीरंजनदैवज्ञः २७०—गोपियोंको शृंगारद्वारा प्रसन्न करनेमें चतुर होनेसे गोपीरंजनदैवज्ञ नाम है। लीलाकमलपूजितः २७१—श्रीराधिकाद्वारा कमलोंकरके पूजित किये जानेसे लीलाकमलपूजित नाम है। क्रीडाकमलसंदोहः २७२—क्रीडाके निमित्त कमलोंको इकट्ठा करनेसे क्रीडाकमलसंदोह नाम है। गोपिकाप्रीतिरंजनः २७३—गोपियोंकी प्रीतिको रंजन अर्थात् अधिक रागवती करनेसे गोपिकाप्रीतिरंजन नाम है ॥ ४० ॥

रंजको रंजनो रंगो रंगी रंगमहारुहः ।
कामः कामारिभक्तोऽयं पुराणपुरुषः कविः ॥४१॥

अर्थः—रंजकः २७४—भक्तोंके मनको अपनमें अनुरागयुक्त करानेसे रंजक नाम है। रंजनः २७५—भक्तोंकरके सुशोभित होनेसे अथवा अपने रागकरके भक्तोंके मन रँगानेसे रंजन नाम है। रंगः २७६—भक्तजनोंके हृदयके अभिप्रायको जाननेवाले होनेसे रंग नाम है। रंगी २७७—अपने प्रभावों करके युक्त होनेसे रंगी नाम है। रंगमहीरुहः २७८—'मल्लानामशनिर्नृणां नरवरः—इत्याद्युक्तेः' रंगभूमिमें चाणूरादिमल्लोंको पछाड़नेसे रंगमहीरुह नाम है। कामः २७९—शील संतोष सौंदर्य्य सौकु-

मार्यादि गुणों करके युक्त अथवा स्मरण करनेवालोंके मनोरथोंको पूर्ण करनेसे काम नाम है। कामारिभक्तः २८०—कामारि (शिवजी) जिनके भक्त हैं अथवा जो शिवजीके भक्त (प्रिय) हैं ऐसे होनेसे कामारिभक्त नाम है। पुराणपुरुषः २८१—पुरातन परम पुरुष होनेसे पुराणपुरुष नाम है। कविः २८२—'कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः—इति श्रुतेः' सर्वशास्त्रकर्ता होनेसे कवि नाम है ॥ ४१ ॥

नारदो देवलो भीमो बालो बालमुखाम्बुजः।
अंबुजो ब्रह्म साक्षी च योगी दत्तवरो मुनिः ॥४२॥

अर्थः—नारदः २८३—नारदरूपसे भक्तोंके अज्ञानको हरनेसे अथवा चराचरात्मक जगत्का पालन करनेसे नारद नाम है। देवलः २८४—देवताओंको अपनेसे करनेसे देवल नाम है। भीमः २८५—असुरोंको भयंकर होनेसे भीम नाम है। बालः २८६—'करारविन्देन पदारविन्दं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम्। वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुंदं मनसा स्मरामि—इत्युक्तेः' बालकरूपसे वटपत्रके पुटकमें शयन करनेसे बाल नाम है। बालमुखांबुजः २८७—बालकके समान मुखकमल होनेसे बालमुखांबुज नाम है। अंबुजः २८८—जलमें पांचजन्य आदि दैत्योंके जीतनेसे अथवा मत्स्यकूर्मावतार धारण करनेसे अंबुज नाम है।

ब्रह्म २८९–वेदधर्मको बढ़ानेसे ब्रह्म नाम है। साक्षी २९०–जगत्के साक्षात् द्रष्टा होनेसे साक्षी नाम है। योगी २९१–योगशास्त्रके प्रचारक होनेसे अथवा भक्तोंके हृदयमें संयोग करनेवाले (प्रकट) होनेसे योगी नाम है। दत्तवरः २९२–भक्तोंको वरप्रदान देनेवाले होनेसे दत्तवर नाम है। मुनिः २९३–मननशील होनेसे अथवा श्रुतियोंकरके अनुसंधान करने योग्य होनेसे मुनि नाम है ॥ ४२ ॥

ऋषभः पर्वतो ग्रामो नदीपवनवल्लभः ।
पद्मनाभः सुरज्येष्ठो ब्रह्मा रुद्रोऽहिभूषितः ॥४३॥

अर्थः–ऋषभः २९४–सबमें श्रेष्ठ होनेसे ऋषभ नाम है। पर्वतः २९५–'शैलोऽस्मीति विभावयन्' तथा 'मेरुः शिखरिणामहम्–इति स्मृतेः' गोवर्धन अथवा मेरुरूप होनेसे पर्वत नाम है। ग्रामः २९६–'सप्तस्वरास्त्रयो ग्रामा मूर्च्छनास्त्वेकविंशतिः–इत्याद्युक्तेः' ग्रामरूप (रागभेद) होनेसे अथवा सब प्राणियोंके प्रेरक होनेसे ग्राम नाम है। नदीपवनवल्लभः २९७–यमुनातटका पवन प्रिय होनेसे नदीपवनवल्लभ नाम है। पद्मनाभः २९८–विष्णुरूपमें नाभिमें कमल होनेसे पद्मनाभ नाम है। सुरज्येष्ठः २९९–सब देवताओंमें अग्रगण्य (श्रेष्ठ) होनेसे सुरज्येष्ठ नाम है। ब्रह्मा ३००–'यः स्वानां पक्षपोषणः–इति वचनात्' भक्तोंके पक्षको बढ़ानेवाले अथवा विश्वके द्रष्टा

होनेसे ब्रह्मा नाम है । रुद्रः ३०१—शत्रुओंकी स्त्रियोंको रुलानेसे अथवा शंकररूपसे संहारके समय प्रजाको रुदन करानेसे रुद्र नाम हैं । अहिभूषितः ३०२—कालीदमनके समय कालीनागके फणमंडलके बीच सुशोभित होनेसे अथवा कालीनागको अपने चरणचिह्नद्वारा भूषित करनेसे अहिभूषित नाम है ॥४३॥

गणानांत्राणकर्ता च गणेशो ग्रहिलो ग्रही ।
गणाश्रयो गणक्रोधी क्रोडीकृतजगत्त्रयः ॥४४॥

अर्थः—गणानांत्राणकर्ता ३०३—गोप गोपी और गोसमूहके रक्षक होनेसे गणानांत्राणकर्ता नाम है । गणेशः ३०४—गोप और गोपियोंके गणोंके स्वामी होनेसे गणेश नाम है। ग्रहिलः ३०५—अतिश्रेष्ठ ग्रहवाले अथवा सूर्यादिग्रहोंके निवासस्थान होनेसे ग्रहिल नाम है । ग्रही ३०६—भक्तोंकी अर्पण कीहुई पूजाको ग्रहण करनेसे ग्रही नाम है । यथा—'अहो लोकांतिनः श्रेष्ठान् श्रीणाति भगवान्हरिः । विधिप्रयुक्तां पूजां च ग्रह्णाति शिरसा स्वयम्' । गणाश्रयः ३०७—देवगणके आश्रयभूत होनेसे गणाश्रय नाम है । गणक्रोधी ३०८—आशाभंग करनेके कारण क्रोधवाले होनेसे गणक्रोधी नाम है । क्रोडीकृतजगत्त्रयः ३०९—तीनों लोक गोदमें धारण करनेसे क्रोडीकृतजगत्त्रय नाम है ॥ ४४ ॥

यादवेन्द्रो द्वारकेन्द्रो मथुरावल्लभो धुरी ।
भ्रमरः कुन्तली कुन्तीसुतरक्षी महामखी ॥ ४५ ॥

अर्थः—यादवेन्द्रः ३१०–यदुवंशियोंमें श्रेष्ठ होनेसे यादवेंद्र नाम है । द्वारकेन्द्रः ३११–द्वारकापुरीके नाथ होनेसे द्वारकेन्द्र नाम है । मथुरावल्लभः ३१२–'मथुरा भगवान्यत्र नित्यं सन्निहितो हरिः–इत्युक्तेः' मथुरापुरी प्रिय होनेसे मथुरावल्लभ नाम है । धुरी ३१३–विश्वका संपूर्ण भार उठानेसे धुरी नाम है । भ्रमरः ३१४–वृंदावनकी कुंजलतामें मृगया करनेसे अथवा नृत्य करते हुए गान करनेसे भ्रमर नाम है । कुन्तली ३१५–सुन्दर केशोंको धारण करनेसे कुन्तली नाम है । कुन्तीसुतरक्षी ३१६–कुन्तीसुत (युधिष्ठिरादिक पांच पांडवों) की रक्षा करनेसे कुन्तीसुतरक्षी नाम है । महामखी ३१७–बड़े २ यज्ञ द्वारकामें वसुदेवजीके द्वारा करानेसे अथवा वैदिक, तांत्रिक और मिश्र यज्ञोंकी पूजा ग्रहण करनेसे महामखी नाम है ॥ ४५ ॥

यमुनावरदाता च कश्यपस्य वरप्रदः ।
शंखचूडवधो दाम्भी गोपीरक्षणतत्परः ॥ ४६ ॥

अर्थः—यमुनावरदाता ३१८–यमुनाको वरप्रदान करनेसे यमुनावरदाता नाम है । कश्यपस्य–वरप्रदः ३१९–कश्यपक-

षिको वरप्रदान करनेसे कश्यपस्य—वरप्रद नाम है। शंखचूडवधः ३२०—शंखचूडदैत्यका वध हुआ है जिससे ऐसे होनेसे शंखचूडवध नाम है। दामी ३२१—उदरमें दाम (रस्सी) धारण करनेसे अथवा 'कुन्ददामकृतकौतुकवेषः—इत्युक्तेः' कुन्द (पुष्प) की माला वा दाम गलेमें धारण करनेसे दामी नाम है। गोपीरक्षणतत्परः ३२२—गोपियोंकी रक्षा करनेमें कटिबद्ध होनेसे गोपीरक्षणतत्पर नाम है ॥ ४६ ॥

पांचजन्यकरो रामी त्रिरामी वनजो जयः।
फाल्गुनः फाल्गुनसखा विराधवधकारकः ॥४७॥

अर्थः—पांचजन्यकरः ३२३—पांचजन्य शंख हाथमें रहनेके कारण पांचजन्यकर नाम है। रामी ३२४—सर्वान्तर्यामी होनेसे रामी नाम है। त्रिरामी ३२५—मथुरा, गोकुल, और द्वारका इन तीनों स्थानोंमें निवास कर क्रीडा करनेवाले अथवा परशुराम, रामचन्द्र और बलरामरूप होनेसे त्रिरामी नाम है। वनजः ३२६—वन (जल) में मत्स्य कूर्म आदि अवतार धारण करनेसे वनज नाम है। जयः ३२७—सबके जीतनेवाले होनेसे जय नाम है। फाल्गुनः ३२८—भक्तोंके अर्थ अनेक प्रकारसे फल देनेवाले अथवा 'पांडवानां धनंजयः—इति स्मृतेः' अर्जुनरूप होनेसे फाल्गुन नाम है। फाल्गुनसखा ३२९—अर्जुनके

सखा (मित्र) होनेसे अर्जुनसखा नाम है । विराधवधकारकः ३३०-रामरूपसे विराधराक्षसका वध किया इससे विराधवधकारक नाम है ॥ ४७ ॥

रुक्मिणीप्राणनाथश्च सत्यभामाप्रियंकरः ॥
कल्पवृक्षो महावृक्षो दानवृक्षो महाफलः ॥४८॥

अर्थः—रुक्मिणीप्राणनाथः ३३१-रुक्मिणीजीके प्राणनाथ (पति) होनेसे रुक्मिणीप्राणनाथ नाम है । सत्यभामाप्रियंकरः ३३२-सत्यभामाजीके प्रिय कार्य करनेसे अर्थात् पारिजातके अर्पण करनेसे सत्यभामाप्रियंकर नाम है । कल्पवृक्षः ३३३-भक्तजनोंकी कामना पूर्ण करनेमें कल्पवृक्षरूप होनेसे कल्पवृक्ष नाम है । महावृक्षः ३३४-सबके कारणभूत कार्य-कारणके अभेदसे अखिलस्वरूप होनेसे अर्थात् समस्त जगत्के आधाररूप होनेसे महावृक्ष नाम है । दानवृक्षः ३३५-वृक्षके समान फलदाता होनेसे दानवृक्ष नाम है । महाफलः ३३६-मोक्षरूप महाफल देनेसे अथवा मोक्षरूप होनेसे महाफल नाम है ॥ ४८ ॥

अंकुशो भूसुरो भावो भ्रामको भामको हरिः ।
सरलः शाश्वतो वीरो यदुवंशी शिवात्मकः ॥४९॥

अर्थः—अंकुशः ३३७-वज्रांकुशका चिन्ह होनेसे अथवा

यशुमतिकी गोदमें शयन करनेसे किंवा सब लोकोंके नियन्ता होनेसे अंकुश नाम है। भूसुरः ३३८—पृथिवीमें विभूतिरूप ब्राह्मण है, ब्राह्मणही ईश्वररूप हैं अथवा पृथ्वीमें उत्तम प्रकार विराजमान होनेसे भूसुर नाम है। भावः ३३९—सबके उत्पन्न कर्ता होनेसे भाव नाम है। भ्रामकः ३४०—'मद्भक्तिविमुखो लोको भ्रमत्यज्ञानसंचरे—इत्युक्तेः' अपने विमुख जीवोंको नाना योनियोंमें भ्रमानेवाले होनेसे भ्रामक नाम है। भामकः ३४१—दुष्टोंपर क्रोध करनेसे अथवा अपनी मायासे ब्रह्मादि-कोंको भ्रमण करानेसे भामक नाम है। हरिः ३४२—'हरि-र्हरति पापानि दुष्टचित्तैरपि स्मृतः—इति स्मृतेः' भक्तजनोंके मन तथा पापोंका हरण करनेसे हरि नाम है। सरलः ३४३—सरलस्वभाव होनेसे सरल नाम है। शाश्वतः ३४४—निरन्तर विद्यमान होनेसे शाश्वत नाम है। वीरः ३४५—वि (पक्षी) ईरः (गमनकर्ता) अर्थात् गरुड वाहन होनेसे अथवा सबमें व्याप्त होनेसे वीर नाम है। यदुवंशी ३४६—यदुवंशमें अव-तार लेनेसे यदुवंशी नाम है। शिवात्मकः ३४७—'शिवस्य हृदयं विष्णुर्विष्णोश्च हृदयं शिवः—इति स्मृतेः' शिवके आत्मा अथवा शिवजी हैं आत्मा जिसके ऐसे होनेसे शिवात्मक नाम है ॥ ४९ ॥

प्रद्युम्नो बलकर्ता च प्रहर्ता दैत्यहा प्रभुः ।
महाधनो महावीरो वनमालाविभूषणः ॥५०॥

अर्थः—प्रद्युम्नः ३४८—विश्वको धारण करनेके लिए प्रकृष्ट सामर्थ्य रखनेसे अथवा भर्गरूपसे स्वर्गमें प्रकर्ष करके व्याप्त होनेसे प्रद्युम्न नाम है । बलकर्ता ३४९—दुष्टसेनाको बलपूर्वक नष्ट करनेसे अथवा गोवर्धनपर्वतको बलपूर्वक उठानेसे बलकर्ता नाम है । प्रहर्ता ३५०—ध्यानकर्ताओंके क्लेशकों हरनेसे अथवा अहंकारियोंका गर्व हरनेसे प्रहर्ता नाम है । दैत्यहा ३५१—दैत्योंको मारनेसे दैत्यहा नाम है । प्रभुः ३५२—सब क्रियायें जिनसे प्रगट होजाती हैं उनका प्रभु नाम है । महाधनः ३५३—महान् विभूतिवाले होनेसे महाधन नाम है । महावीरः ३५४—सबके जीनतेवाले अथवा महावीर होनेसे महावीरनाम है । वनमालाविभूषणः ३५५—वनमाला करके सुशोभित अथवा वनकी पंक्तियोंको सुशोभित करनेवाले होनेसे वनमालाविभूषण नाम है ॥ ५० ॥

तुलसीदामशोभाढ्यो जलंधरविनाशनः ।
शूरः सूर्योऽमृताण्डश्च भास्करो विश्वपूजितः॥५१॥

अर्थः—तुलसीदामशोभाढ्यः ३५६—तुलसीमाला करके अति शोभायुक्त होनेसे तुलसीदामशोभाढ्य नाम है । जलंधर-

विनाशनः ३५७—जलंधर दैत्यके नाशकर्ता होनेसे जलंधरविनाशन नाम है। शूरः ३५८—पराक्रमी होनेसे शूर नाम है। सूर्यः ३५९—' आदित्यो हिरण्मयः पुरुषो दृश्यते—इति श्रुतेः' सूर्यवत् प्रकाशित होनेसे अथवा सब प्राणियोंकी प्रेरणा करनेसे सूर्य नाम है। अमृताण्डः ३६०—सबमें अमृतस्वरूप होनेसे अथवा अविनाशी अंडरूप होनेसे अमृताण्ड नाम है। भास्करः ३६१—' यस्य भासा सर्वमिदं विभाति—श्रुतेः' सबके प्रकाशक होनेसे भास्कर नाम है। विश्वपूजितः ३६२—सबसे पूजित होनेसे विश्वपूजित नाम है॥ ५१॥

रविस्तमोहा वह्निश्च वाडवो वडवानलः।
दैत्यदर्पविनाशी च गरुडो गरुडाग्रजः॥ ५२॥

अर्थः—रविः ३६३—प्रलयकालमें जगत्का संहार करनेसे अथवा ज्ञानदीपकसे अज्ञानरूप अन्धकारको दूर करनेसे रवि नाम है। तमोहा ३६४—अज्ञानान्धकार दूर करनेसे तमोहा नाम है। वह्निः ३६५—भक्तजनोंको मोक्ष देनेसे वह्नि नाम है। वाडवः ३६६—'अग्रजन्मभूदेववाडवाः—इत्यमरः' विप्ररूप होनेसे वाडव नाम है। वडवानलः ३६७—अग्निरूप होनेसे वडवानल नाम है। दैत्यदर्पविनाशी ३६८—दैत्योंके मदको दूर करनेसे दैत्यदर्पविनाशी नाम है।

गरुडः ३६९—पक्षियोंमें गरुडरूप विभूतिवाले होनेसे गरुड नाम है। गरुडाग्रजः ३७०—भ्रातारूपसे गरुडके अग्रज (वामनरूप) होनेसे गरुडाग्रज नाम है ॥ ५२ ॥

गोपीनाथो महानाथो वृन्दानाथो विरोधकः ।
प्रपंची पंचरूपश्च लता गुल्मश्च गोपतिः ॥ ५३ ॥

अर्थः—गोपीनाथः ३७१—समस्त जगत्की रक्षा करनेसे अथवा व्रजसुन्दरियोंके नाथ होनेसे गोपीनाथ नाम है। महानाथः ३७२—ब्रह्मा आदिक लोकनाथोंके भी नाथ होनेसे महानाथ नाम है। वृन्दानाथः ३७३—वृन्दावनकी अधिष्ठात्री देवी राधाके नाथ होनेसे वृन्दानाथ नाम है। विरोधकः ३७४—कौरवपांडवोंमें विरोध करानेसे अथवा अपनेसे विमुख जीवोंके विरोधी होनेसे विरोधक नाम है। प्रपंची ३७५—अपनी शक्तिद्वारा जगत्का विस्तार करनेसे प्रपंची नाम है। पंचरूपः ३७६—पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन पंचमहाभूतोंमें विद्यमान होनेसे अथवा गणेश, विष्णु, सूर्य, देवी और शिव इन पंचदेवरूप होनेसे पंचरूप नाम है। लता ३७७—व्रजकी लतारूप होनेसे लता नाम है। गुल्मः ३७८—नवीन शाखारहित वृक्षरूप होनेसे गुल्म नाम है। गोपतिः ३७९—वेद, पृथिवी, स्वर्ग और यज्ञ इनके पति होनेसे गोपति नाम है ॥ ५३ ॥

गंगा च यमुनारूपो गोदा वेत्रवती तथा ।
कावेरी नर्मदा तापी गण्डकी सरयू रजः ॥५४॥

अर्थः—गंगा ३८०–'स्रोतसामस्मि जाह्नवी–इति' गंगा अथवा पुण्यप्रवाहरूप होनेसे गंगा नाम है। यमुनारूपः ३८१–यमुनारूप होनेसे यमुनारूप नाम है। गोदा ३८२–गोदानदीरूप अथवा पुण्यप्रवाहरूप होनेसे गोदा नाम है। वेत्रवती ३८३–वेत्रवतीनदीरूप अथवा पापियोंके हेतु वेत्र धारण करनेसे वेत्रवती नाम है। कावेरी ३८४-कावेरीनदीरूप अथवा ध्यान करनेसे पापनाशक होनेसे कावेरी नाम है। नर्मदा ३८५–नर्मदानदीरूप होनेसे अथवा उसमें स्नान करनेसे पापहारी होनेसे नर्मदा नाम है। तापी ३८६–तापीनदीरूप अथवा पापके तापसे संतप्त हुए प्राणियोंके आश्रयरूप होनेसे तापी नाम है। गंडकी ३८७–शालग्रामरूपसे गंडकीमें निवास करनेसे गंडकी नाम है। सरयू ३८८–सरयूरूप विभूतिवाले होनेसे सरयू नाम है। रजः ३८९–'आकृष्णेन रजसा वर्तमानः–इति श्रुतेः' सबके प्रसन्न करनेहारे अथवा सबमें व्यापक होनेसे रज नाम है ॥ ५४ ॥

राजसस्तामसः सत्त्वी सर्वांगी सर्वलोचनः ।
सुधामयोऽमृतमयो योगिनीवल्लभः शिवः ॥५५॥

अर्थः–राजसः ३९०–रजोगुणनियामक अभिमानसे ब्रह्मा होकर सृष्टि रचनेसे राजस नाम है । तामसः ३९१–तमोगुण अभिमानसे रुद्र होकर संहार करनेसे तामस नाम है । सत्त्वी ३९२–सत्वगुणसे विष्णु होकर प्रजापालन करनेसे सत्त्वी नाम है । सर्वांगी ३९३–"ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किंचिज्जगत्यां जगत्–इत्यादिश्रुतेः" सब अवतार सब अंगोंमें होनेसे सर्वांगी नाम है । सर्वलोचनः ३९४–प्राणीमात्रको देखनेसे अथवा सबको प्रकाश करनेसे सर्वलोचन नाम है। सुधामयः ३९५–अमृतमय चंद्ररूप होनेसे सुधामय नाम है। अमृतमयः ३९६–अमृतको प्राप्त करनेसे अमृतमय नाम है। योगिनीवल्लभः ३९७–योगिनीगोपीके प्रिय होनेसे योगिनीवल्लभ नाम है। शिवः ३९८–भक्तोंके कल्याणरूप होनेसे शिव नाम है ॥५५॥

बुद्धो बुद्धिमतांश्रेष्ठो विष्णुर्जिष्णुः शचीपतिः ।
वंशी वंशधरो लोकविलोको मोहनाशनः ॥ ५६ ॥

अर्थः—बुद्धः ३९९–प्रशस्त बुद्धि धारण करनेसे वा बुद्धावतार धारण करनेसे बुद्ध नाम है । बुद्धिमतां श्रेष्ठः ४००–बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ होनेसे बुद्धिमतां श्रेष्ठः नाम है । विष्णुः ४०१–सबमें व्यापक होनेसे विष्णु नाम है। जिष्णुः ४०२–जयशील होनेसे जिष्णु नाम है। शचीपतिः ४०३–इन्द्ररूप होनेसे शचीपति नाम है । वंशी ४०४–बांसुरीके बजानेवाले

होनेसे वंशी नाम है। वंशधरः ४०५—वंशके रक्षक होनेसे वंशधर नाम है, अथवा वंशीको धारण करनेसे वंशीधर नाम है। लोकविलोकः ४०६—लोकोंको कृपापूर्वक देखनेवाले होनेसे लोकविलोक नाम है। मोहनाशनः ४०७—ज्ञानोपदेशद्वारा मोहका नाश करनेसे मोहनाशन नाम है ॥ ५६ ॥

रवरावो रवो रावो बलो बालो बलाहकः ॥
शिवो रुद्रो नलो नीलो लांगुली लांगुलाश्रयः ५७

अर्थः—रवरावः ४०८—अपनी अपनी भाषाके अनुरूप उच्चारण करनेसे अथवा शब्द करके ज्ञान बतानेसे किंवा वेदरूपी शब्दसे जाननेयोग्य होनेसे रवराव नाम है। रवः ४०९—शब्दरूप अथवा सर्वज्ञ होनेसे रव नाम है। रावः ४१०—मेघमल्हारादि रागरूप होनेसे अथवा सर्वविषयभूत होनेसे राव नाम है। बलः ४११—प्राणरूप होनेसे बल नाम है। बालः ४१२—शिशुरूप होनेसे बाल नाम है। बलाहकः ४१३—मेघके समान भक्तोंके योगक्षेमको करनेवाले होनेसे बलाहक नाम है। शिवः ४१४—भक्तोंका कल्याण करनेसे अथवा पार्वतीपति शिवरूप होनेसे शिव नाम है। रुद्रः ४१५—पापियोंको नरकमें गिराकर रुलानेसे रुद्र नाम है। नलः ४१६—सेतुबंधनसमय नलरूप होनेसे नल नाम है। नीलः ४१७—नीलरूप

धारण करनेसे नील नाम है। लांगुली ४१८–समुद्रको उल्लंघन करते समय हनुमान्को अतिबल देनेसे लांगुली नाम है। लांगुलाश्रयः ४१९–रामरूपसे सुग्रीवादि वानरोंको आश्रय देनेसे अथवा हल धारण करनेसे लांगुलाश्रय नाम है ॥ ५७ ॥

पारदः पावनो हंसो हंसारूढो जगत्पतिः ।
मोहनी मोहनो माया महामायी महासुखी ॥५८॥

अर्थः—पारदः ४२०–संसारसागरसे प्राणियोंको पार करनेसे पारद नाम है। पावनः ४२१–'पवित्राणां पवित्रं यः' इति भारतोक्तेः'। अपने भक्तोंको पवित्र करनेसे पावन नाम है। हंसः ४२२–जीवरूप हंसावतार धारण करनेसे हंस नाम है। हंसारूढः ४२३–ब्रह्मारूप होकर हंसपर सवार होनेसे हंसारूढ नाम है। जगत्पतिः ४२४–जगत्के पालनकर्ता होनेसे जगत्पति नाम है। मोहनी ४२५–शिवजीको मोहनेके निमित्त मोहनीदेवीरूप धारण करनेसे मोहनी नाम है। मोहनः ४२६–अपनी सुन्दरतासे जगत्को मोह करनेसे मोहन नाम है। माया ४२७–अचिन्त्यशक्तिस्वरूप अथवा जगत्को अपने वशमें रखनेसे माया नाम है। महामायी ४२८–अत्यन्त कृपालु होनेसे महामायी नाम है। महासुखी ४२९–अति आनन्दवान् होनेसे महासुखी नाम है ॥ ५८ ॥

वृषो वृषाकपिः कालः कालीदमनकारकः ।
कुब्जाभाग्यप्रदो वीरो रजकक्षयकारकः॥५९॥

अर्थः—वृषः ४३०—धर्मरूप होनेसे वृष नाम है । वृषाकपिः ४३१—धर्मकी रक्षाके हेतु असुरोंको जीतकर पृथ्वी लानेसे अथवा शिवरूप होनेसे वृषाकपि नाम है । कालः ४३२—'कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्—इति भगवदुक्तेः' कालस्वरूप होनेसे काल नाम है। कालीदमनकारकः ४३३—कालीनागके मदका नाश करनेसे कालीदमनकारक नाम है। कुब्जाभाग्यप्रदः ४३४—कुब्जाके घर जाकर उसका सौभाग्य बढ़ानेसे कुब्जाभाग्यप्रद नाम है । वीरः ४३५—अतिपराक्रमवाले होनेसे वीर नाम है। रजकक्षयकारकः ४३६—कंसके धोबीको नाश करनेसे रजकक्षयकारक नाम है ॥ ५९ ॥

कोमलो वारुणीराजा जलजो जलधारकः ।
हारकः सर्वपापघ्नः परमेष्ठी पितामहः ॥६०॥

अर्थः—कोमलः ४३७—मधुर बालमूर्ति धारण करनेसे कोमल नाम है । वारुणीराजा ४३८—शतभिषामें शोभाको प्राप्त होनेसे वारुणीराजा नाम है । जलजः ४३९—जलमें मत्स्यरूप धारण करनेसे जलज नाम है । जलधारकः ४४०—जलमें शयन करनेसे अथवा जलके तत्त्व मौक्तिकादिको

धारण करनेसे जलधारक नाम है । हारकः ४४१–भक्तोंके तीनों प्रकारके तापोंको हरनेसे हारक नाम है । सर्वपापघ्नः ४४२–सम्पूर्ण पापोंको दूर करनेसे सर्वपापघ्न नाम है । परमेष्ठी ४४३–वैकुंठलोकमें अथवा चिदाकाशमें रहनेसे परमेष्ठी नाम है । पितामहः ४४४–पिताके पिता अथवा गुरुके गुरु अथवा ब्रह्माको भी उत्पन्न करनेवाले होनेसे पितामह नाम है ॥ ६० ॥

खड्गधारी कृपाकारी राधारमणसुन्दरः ।
द्वादशारण्यसंभोगी शेषनागफणालयः ॥ ६१ ॥

अर्थः—खड्गधारी ४४५–नन्दक नामवाला खड्ग धारण करनेसे खड्गधारी नाम है । कृपाकारी ४४६–दीन व भक्तों-पर कृपा करनेसे कृपाकारी नाम है । राधारमणसुन्दरः ४४७–श्रीराधाजीके संग रमण करनेमें अतिसुन्दर होनेसे राधारमण-सुन्दर नाम है । द्वादशारण्यसंभोगी ४४८–बारह वनों (भद्रवन, श्रीवन, लोहवन, भांडीरवन, महावन, तालवन, खदिरवन, बहुलावन, कुमुदवन, काम्यवन, मधुवन, व वृंदावन) में विहार करनेसे द्वादशारण्यसंभोगी नाम है । शेषनागफणालयः ४४९–शेषनागका फण ही शयन स्थान होनेसे शेषनागफणालय नाम है ॥ ६१ ॥

कामः श्यामः सुखश्रीदः प्रीहः प्रीदः पतिः कृती ।
हरिर्नारायणो नारो नरोत्तम इषुप्रियः ॥ ६२ ॥

अर्थः—कामः ४५०–अतिसुन्दर होनेसे काम नाम है। श्यामः ४५१–' मेघश्यामं पीतकौशेयवासम्–इत्युक्तेः ' नवीन मेघके समान श्यामवर्ण होनेसे श्याम नाम है । सुखश्रीदः ४५२–सुख और सौभाग्यकें दाता होनेसे अथवा सुखनिमित्त लक्ष्मी देनेवाले होनेसे सुखश्रीद् नाम है । प्रीहः ४५३–प्रीतिमें चेष्टा होनेसे प्रीह नाम है। प्रीदः ४५४ प्रीतिके देनेवाले होनेसे प्रीद् नाम है । पतिः ४५५–सबके स्वामी होनेसे पति नाम है। कृती ४५६–सब कामोंमें कुशल अथवा सम्पूर्ण यज्ञ करनेसे अथवा यज्ञरूप होनेंसे कृती नाम है । हरिः ४५७–दुष्टोंके नाशकर्ता तथा नृसिंहरूप होनेसे हरि नाम है । नारायणः ४५८–' नराणामयनं यस्मात्तस्मान्नारायणः स्मृतः–इत्यक्तेः ' मुमुक्षु जीवोंके आश्रयस्थान होनेसे नारायण नाम है । नारः ४५९–मनुष्यरूप धारण करनेसे नार नाम है। नरोत्तमः ४६०–मनुष्योंमें उत्तम होनेसे नरोत्तम नाम है । इषुप्रियः ४६१–बाणविद्यामें कुशल होनेसे अथवा इच्छाद्वारा प्रसन्न होनेसे इषुप्रिय नाम है ॥ ६२ ॥

गोपालीचित्तहर्ता च कर्ता संसारतारकः ।
आदिदेवो महादेवो गौरीगुरुरनाश्रयः ॥ ६३ ॥

अर्थः—गोपालीचित्तहर्ता ४६२—वंशी बजाकर गोपियोंके मनको हरनेसे गोपालीचित्तहर्ता नाम है। कर्ता ४६३—सबके आदिभूत कारण होनेसे कर्ता नाम है। संसारतारकः ४६४—अपने भक्तजनोंको संसारसे तार देनेसे संसारतारक नाम है। आदिदेवः ४६५—सर्वोपरि उपास्यदेव होनेसे अथवा सबके आदिकारण होनेसे आदिदेव नाम है। महादेवः ४६६—देवताओंके भी देवता होनेसे महादेव नाम है। गौरीगुरुः ४६७—गोपकन्याओंके अखिलक्रीडापर पति होनेसे गौरीगुरु नाम है। अनाश्रयः ४६८—सबके आश्रयभूत होनेसे अथवा किसीका आश्रय न लेनेसे अनाश्रय नाम है ॥ ६३ ॥

साधुर्माधुर्विधुर्धाता त्राताऽक्रूरपरायणः ।
रोलम्बी च हयग्रीवो वानरारिर्वनाश्रयः ॥ ६४ ॥

अर्थः—साधुः ४६९—भक्तजनोंका मनोरथ साधन करनेसे साधु नाम है। माधुः ४७०—लक्ष्मीको धारण करनेसे माधु नाम है। विधुः ४७१—समस्त जगत्को धारण करनेसे विधु नाम है। धाता ४७२—अनन्तरूपसे विश्वका धारण पोषण करनेसे धाता नाम है। त्राता ४७३—भक्तोंकी रक्षा करनेसे त्राता नाम है । अक्रूरपरायणः ४७४—अक्रूरके एक मात्र आधार होनेसे अक्रूरपरायण नाम है। रोलम्बी ४७५—उद्धवरूप भ्रमर (दूत) होनेसे अथवा भ्रमरके समान केश होनेसे

किंवा 'माला मधुव्रतवरूथगिरोपघुष्टा—इत्यादि भागवतोक्तेः'। भ्रमर हैं वनमालामें जिनके ऐसे होनेसे रोलम्बी नाम है। हयग्रीवः ४७६—हयग्रीवावतार होनेसे अथवा सुन्दर ग्रीवा होनेसे अथवा मधुकैटभके मारनेसे हयग्रीव नाम है। वानरारिः ४७७—बलभद्ररूपसे द्विविद वानर मारनेसे वानरारि नाम है। वनाश्रयः ४७८—रामरूपसे दंडकवनमें और कृष्णरूपसे वृन्दावनमें निवासस्थान करनेसे वनाश्रय नाम है ॥ ६४ ॥

वनं वनी वनाध्यक्षो महाबन्धो महामुनिः ।
स्यमन्तकमणिप्राज्ञो विज्ञो विघ्नविघातकः ॥६५॥

अर्थः—वनम् ४७९—वृन्दावनरूप होनेसे वन नाम है। वनी ४८०—वनमें विहार करनेसे वनी नाम है। वनाध्यक्षः ४८१—वनोंके अध्यक्ष होनेसे वनाध्यक्ष नाम है। महाबन्धः ४८२—'अहं भक्तपराधीनः—इत्याद्युक्तेः' भक्तवात्सल्यरूप बड़ा बन्ध होनेसे अथवा 'वृन्दावनं परित्यज्य पदमेकं न गच्छति—इत्युक्तेः' वृन्दावनको छोड़ एक पग भी कहीं नहीं जानेके कारण प्रतिज्ञात्मक बन्धन होनेसे महाबन्ध नाम है। महामुनिः ४८३—'कृष्णद्वैपायनं व्यासं विद्धि नारायणं स्वयमिति स्मृतेः' व्यासरूप होनेसे महामुनि नाम है। स्यमन्तकमणिप्राज्ञः ४८४—स्यमन्तकमणिके प्रभावको जाननेसे स्यमन्तकमणिप्राज्ञ

नाम है । विज्ञः ४८५–सर्वज्ञाता होनेसे विज्ञ नाम है । विघ्नविघातकः ४८६–व्रजमें आयेहुए अनेक विघ्नोंको दूर कर देनेसे विघ्नविघातक नाम है ॥ ६५ ॥

गोवर्द्धनो वर्द्धनीयो वर्द्धनीवर्द्धनप्रियः ।
वर्द्धन्यो वर्द्धनो वर्द्धी वर्द्धिष्णुः सुमुखः प्रियः ॥६६॥

अर्थः—गोवर्द्धनः ४८७–गौवोंके आनन्दको बढानेसे अथवा गोवर्द्धनरूप होनेसे अथवा भार उतारकर भूमिको बढानेसे गोवर्द्धन नाम है । वर्द्धनीयः ४८८–उपास्यतारूपसे उपासकों करके बढनेके योग्य होनेसे अथवा सेवा करनेपर वर्द्धनशील होनेसे वर्द्धनीय नाम है । वर्द्धनीवर्द्धनप्रियः ४८९–संपत्तियोंका बढना प्रिय होनेसे वर्द्धनीवर्द्धनप्रिय नाम है । वर्द्धन्यः ४९०–सबसे पूजनेके योग्य होनेसे वर्द्धन्य नाम है । वर्द्धनः ४९१–जगत्का विस्तार करनेसे वर्द्धन नाम है । वर्द्धी ४९२–हृदयमें भक्तिद्वारा बढनेवाले होनेसे वर्द्धी नाम है । वर्द्धिष्णुः ४९३–“ एकोऽहं वहु स्यां-इति श्रुतेः ” एकसे वहुतरूपवाले होनेसे अर्थात् वर्द्धनशीलवाले होनेसे वर्द्धिष्णु नाम है । सुमुखः ४९४–सुन्दर मुखवाले होनेसे सुमुख नाम है । प्रियः ४९५–भक्तोंको प्रसन्न करनेसे प्रिय नाम है ॥ ६६ ॥

वर्द्धितो वृद्धको वृद्धो वृन्दारकजनप्रियः ।
गोपालरमणीभर्ता साम्बकुष्ठविनाशनः ॥ ६७ ॥

अर्थ—वर्द्धितः ४९६—'ववृधे नन्दवेश्मनि—इत्युक्तेः' यशोदा करके वृद्धिको प्राप्त होनेसे वर्द्धित नाम है । वृद्धकः ४९७ 'पितामहोऽस्य जगतो धाता माता पितामहः' । 'वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम्—इत्युक्तेः' ज्ञान वय करके वृद्ध होनेसे वृद्धक नाम है । वृद्धः ४९८—सबसे वृद्ध होनेसे वृद्ध नाम है । वृन्दारकजनप्रियः ४९९ देवताओंके प्रिय होनेसे अथवा देवता प्रिय होनेसे वृन्दारकजनप्रिय नाम है । गोपालरमणी भर्ता ५००—गोपालोंकी स्त्रियोंके सुरक्षक होनेसे गोपालरमणीभर्ता नाम है । साम्बकुष्ठविनाशनः ५०१—साम्बके कुष्ठको विनाश करनेसे साम्बकुष्ठविनाशन नाम है ॥ ६७ ॥

रुक्मिणीहरणप्रेमा प्रेमी चन्द्रावलीपतिः ।
श्रीकर्ता विश्वभर्ता च नारायणनरो बली ॥६८॥

अर्थ—रुक्मिणीहरणप्रेमा ५०२—रुक्मिणीको हरनेमें प्रेम रखनेसे रुक्मिणीहरणप्रेमा नाम है । प्रेमी ५०३ भक्तोंमें प्रेम होनेसे प्रेमी नाम है। चन्द्रावलीपतिः ५०४ चन्द्रावली नाम गोपीके पालक होनेसे चन्द्रावलीपति नाम है । श्रीकर्ता ५०५—सम्प-

त्तिके कर्ता होनेसे अथवा शोभाको बढ़ानेवाले होनेसे श्रीकर्ता नाम है । विश्वभर्ता ५०६–विश्वके धारक और पोषक होनेसे विश्वभर्ता नाम है । नारायणनरः ५०७–नरनारायणरूप होनेसे नारायणनर नाम है । बली ५०८–सेनावाले और सामर्थ्यवाले होनेसे बली नाम है ॥ ६८ ॥

गणो गणपतिश्चैव दत्तात्रेयो महामुनिः ।
व्यासोनारायणोदिव्यो भव्यो भावुकधारकः॥५९॥

अर्थः—गणः ५०९–सब समूहोंमें गणना होनेसे गण नाम है । गणपतिः ५१०–देवगणोंके पालक होनेसे गणपति नाम है । दत्तात्रेयः ५११–दत्तात्रेयरूप होनेसे अथवा संन्यासाश्रमके प्रवर्तक होनेसे दत्तात्रेय नाम है । महामुनिः ५१२–वसिष्ठादि महामुनिरूप होनेसे महामुनि नाम है । व्यासः ५१३–व्यासरूप होनेसे व्यास नाम है यथा 'कृष्णद्वैपायनं व्यासं विद्धि नारायणं स्वयम्–इत्युक्तेः' नारायणः ५१४–जीवसमूहोंके ज्ञाता होनेसे नारायण नाम है । दिव्यः ५१५–दिव्यगुणोंसे युक्त होनेसे दिव्य नाम है । भव्यः ५१६–पृथिवीके हितार्थ जन्म धारण करनेसे भव्य नाम है । भावुकधारकः ५१७–'ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्–इति गीतोक्तेः' भावनाके अनुसार भक्तजनोंको माननेसे

अथवा भावना (भक्ति) करनेवालोंका पोषण करनेसे तथा मनुआदि रूप धारण करके कर्मकी व्यवस्था स्थापन करनेसे भावुकधारक नाम है ॥ ६९ ॥

स्वः श्रेयः शं शिवं भद्रं भावुकं भाविकं शुभम् ।
शुभात्मकः शुभः शास्ता प्रशस्तो मेघनादहा ॥७०॥

अर्थः—स्वः ५१८–स्वर्ग और अपवर्ग (मोक्ष) रूप होनेसे स्वः नाम है । श्रेयः ५१९–सबसे स्तुति करने योग्य होनेसे अथवा सबका कल्याण करनेसे श्रेयः नाम है । शं ५२०–कल्याणरूप होनेसे शं नाम है। शिवं ५२१–मोक्ष और सुखरूप होनेसे शिव नाम है । भद्रं ५२२–मँगलरूप होनेसे भद्र नाम है । भावुकं ५२३–भक्तजनोंके प्रेमी होनेसे भावुक नाम है । भाविकं ५२४–समस्त जगत्के उत्पन्न करनेवाले होनेसे भाविक नाम है । शुभं ५२५–सम्पूर्ण जगत्के शोभा-रूप होनेसे अथवा शुभ फलके दाता होनेसे शुभ नाम है । शुभात्मकः ५२६–कल्याणकारी आत्मावाले होनेसे शुभात्मक नाम है । शुभः ५२७–सर्वदा शोभावाले होनेसे शुभ नाम है । शास्ता ५२८–सबके शिक्षक होनेसे शास्ता नाम है । प्रशस्तः ५२९–अतिसुन्दररूप होनेसे प्रशस्त नाम है । मेघ-नादहा ५३०–लक्ष्मणरूपसे मेघनादको मारनेवाले होनेसे मेघनादहा नाम है ॥ ७० ॥

ब्रह्मण्यदेवो दीनानामुद्धारकरणक्षमः ।
कृष्णः कमलपत्राक्षः कृष्णः कमललोचनः ॥ ९१ ॥

अर्थः—ब्रह्मण्यदेवः ५३१–ब्राह्मणोंके हितकारी होनेसे ब्रह्मण्यदेव नाम है । दीनानामुद्धारकरणक्षमः ५३२–दीनजनोंके उद्धार करनेमें समर्थ होनेसे दीनानामुद्धारकरणक्षम नाम है । कृष्णः ५३३–'ब्रह्मणो वाचकः कोयमृकारोऽनंतवाचकः॥ शिवस्य वाचकः षश्च णकारो धामवाचकः' क (ब्रह्मा), ऋ (अनन्त), ष (शिव) और ण (तेज) इन गुणोंसे युक्त होनेसे कृष्ण नाम है । कमलपत्राक्षः ५३४–कमलपत्रके समान बडे नेत्र होनेसे कमलपत्राक्ष नाम है । कृष्णः ५३५–'कर्षति स्वीयलावण्यमुरलीकलनिस्स्वनैः॥ श्रीराधां मोहनगुणालंकृतः कृष्ण ईर्यते–इत्युक्तेः' अपने लावण्यादि गुणोंसे राधाजीको आकर्षण करनेसे अथवा 'कृत्वा रम्यसरः श्रेष्ठं कान्तयाऽनुपमस्तथा । आकृष्य सर्वतीर्थानि तत्स्नाता कृष्ण ईरितः–इत्युक्तेः' अपने श्रेष्ठ सरमें अर्थात् सरोवरमें समस्त तीर्थोंको आकर्षण करनेवाले होनेसे कृष्ण नाम है । कमललोचनः५३६–कमलके समान नेत्रवाले होनेसे अथवा कमलोंको सूर्यरूपसे प्रकाशित करनेसे कमललोचन नाम है ॥ ७१ ॥

कृष्णः कामी सदाकृष्णः समस्तप्रियकारकः ।
नन्दो नन्दी महानादी मादी मादनकःकिली॥७२॥

अर्थः—कृष्णः ५३७–'कृष्यते राधया प्रेम्णा यमुनातटकानने ॥ लीलया नंदितश्चापि धीरः कृष्ण उदाहृतः–इति वाक्यात्'यमुनातटके वनमें राधाजीके प्रेमसे खींचनेवाले अथवा श्यामवर्ण होनेसे तथा दुष्टोंको दमन करनेसे कृष्ण नाम है। कामी ५३८–दिव्य भोगवाले अथवा सदा पूर्णरूप होनेसे कामी नाम है। सदाकृष्णः ५३९–सदैव निर्मल प्रकाशवाले होनेसे सदाकृष्ण नाम है। समस्तप्रियकारकः ५४०–सबको प्रिय करनेवाले होनेसे समस्तप्रियकारक नाम है। नन्दः ५४१–संसारमें शुभके बढानेसे वा गोकुलादिमें क्रीडापूर्वक आनन्द देनेवाले होनेसे नन्द नाम है। नन्दी ५४२–नंदजीके पुत्र होनेसे अथवा आनन्दमय होनेसे नन्दी नाम है। महानादी ५४३–वेदरूप गम्भीर वाणीवाले होनेसे महानादी नाम है। मादी ५४४–भक्तजनोंको भक्तिरसमें मत्त करनेवाले होनेसे मादी नाम है। मादनकः ५४५–भक्तजनोंको भक्तिरससे विवश अथवा हर्षित करनेसे मादनक नाम है। किली ५४६–विश्वसर्ग विसर्ग आदिकरके क्रीडा करनेसे किली नाम है॥ ७२॥

मिली हिली गिली गोली गोलो गोलालयो गुली।
गुग्गुली मारकी शाखी वटः पिप्पलकः कृती॥७३॥

अर्थः—मिली ५४७–भक्त और गोपियोंसे मेल मिलाप करनेसे मिली नाम है। हिली ५४८–गोपियोंके संग नृत्य

करनेमें शीलवान् होनेसे अथवा बाललीलामें अनेक भावोंके स्वभाववाले होनेसे हिली नाम है । गिली ५४९—यशोदाआदि गोपियोंके दियेहुए माखनआदिको भोजन करनेसे अथवा भक्तोंके दियेहुए पत्र पुष्प फल आदिको ग्रहण करनेसे गिली नाम है । गोली ५५०—गोपबालाओंके संग क्रीडा करनेसे गोली नाम है । गोलः ५५१—गोपाल वेष धारण करनेसे गोल नाम है । गोलालयः ५५२—गोलोकमें वास करनेसे गोलालय नाम है । गुली ५५३—अपने भक्तजनोंकी रक्षा करनेसे गुली नाम है । गुग्गुली ५५४—गोपालों की रक्षा करनेसे अथवा गुगल सूंघना अतिप्रिय होनेसे गुग्गुली नाम है । मारकी ५५५—कामदेवके अहंकारको दूर करनेवाले होनेसे मारकी नाम है। शाखी ५५६—वेदरूप वृक्षकी शाखारूप होनेसे शाखी नाम है। वटः ५५७—जगत्को अपनी सत्तासे वेष्टन करनेसे वट नाम है । पिप्पलकः ५५८—' अश्वत्थः सर्ववृक्षाणामहम्—इति श्रुतेः' पीपलवृक्ष इन्हींकी विभूति होनेसे पिप्पलक नाम है । कृती ५५९—जगत् रचनेमें चतुर अथवा यशरूप होनेसे कृती नाम है ॥ ७३ ॥

म्लेच्छहा कालहर्ता च यशोदायश एव च ।
अच्युतः केशवो विष्णुर्हरिः सत्यो जनार्दनः ॥७४॥

अर्थः—म्लेच्छहा ५६०—म्लेच्छोंके नाशकर्ता होनेसे म्लेच्छहा

नाम है। कालहा ५६१—कालके संहारकर्ता होनेसे कालहर्ता नाम है। यशोदायशः ५६२—यशोदाके सौभाग्य वा कीर्तिरूप होनेसे यशोदायश नाम है। अच्युतः ५६३—' शाश्वतं शिवमच्युतम्—इति श्रुतेः' उत्पत्ति आदि विकारसे रहित अथवा कहीं कहांभी किसीके साथ पराजय न पानेसे अच्युत नाम है। केशवः ५६४—' अंशवो ये प्रकाशन्ते मामेते केशसंज्ञिताः ॥ सर्वज्ञाः केशवं तस्मान्मामाहुर्द्विजसत्तमाः—इति महाभातात् ' प्रकाशित अंशवाले होनेसे केशव नाम है। विष्णुः ५६५—सब जगत्में प्रवेश करनेसे विष्णु नाम है। हरिः ५६६—गोपियोंके दधि आदि हरनेसे हरि नाम है। सत्यः ५६७—सत्यरूप होनेसे सत्य नाम है। जनार्दनः ५६८—प्रलयके समय जगत्का नाश करनेवाले होनेसे जनार्दन नाम है ॥ ७४ ॥

हंसो नारायणो नीलो लीनो भक्तिपरायणः ।
जानकीवल्लभो रामो विरामो विषनाशनः ॥७५॥

अर्थः—हंसः ५६९—" सत्येन तपसा भक्त्या वा हन्यते प्राप्यते, वा सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा—इति " श्रुतेः ' भक्त्या त्वनन्यया लभ्यो ह्यहमेवंविधोऽर्जुन—इति स्मृतेः ' सत्य, तप वा भक्ति आदिसे प्राप्त होनेसे हंस नाम है। नारायणः ५७०—जीवसमूहोंके प्रवर्तक होनेसे नारायण नाम है। नीलः

५७१–सबके प्रेरक होनेसे अथवा 'नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगम्-इत्याद्युक्तेः' नीलकमलके समान वर्णवाले होनेसे नील नाम है। लीनः ५७२–प्रलयके समय सब जगत्को स्वात्मामें लीन होनेसे लीन नाम है। भक्तिपरायणः ५७३–केवल भक्तिही प्राप्तिका स्थान करनेसे भक्तिपरायण नाम है। जानकीवल्लभः ५७४–रामावतारमें जानकीजीके प्रिय अथवा जानकी प्रिय होनेसे जानकीवल्लभ नाम है। रामः ५७५–सर्वान्तर्यामी होनेसे राम नाम है। विरामः ५७६–सर्व चराचर जगत्के अवधिरूप होनेसे विराम नाम है। विश्वनाशनः ५७७–यमुनामेंसे विष दूर करनेसे अथवा पूतनाके विषको दूर करनेसे अथवा विषरूप मृत्युको नाश करनेसे विषनाशन नाम है ॥ ७५ ॥

सहभानुर्महाभानुर्वीरभानुर्महोदधिः ।
समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः ॥ ७६ ॥

अर्थः–सहभानुः ५७८–मुक्तिसे प्राप्ति होनेयोग्य होनेसे सहभानु नाम है। महाभानुः ५७९–'यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम्। यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्-इत्युक्तेः' अत्यन्त प्रकाशमान् अथवा सूर्यादिकेभी प्रकाशक होनेसे महाभानु नाम है। वीरभानुः ५८०–'यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा। तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंशसम्भवम्–इति गीतोक्तेः' पराक्रमी पुरुषोंमें प्रकाशित होनेसे

वीरभानु नाम है। महोदधिः ५८१—आनन्दके सागर होनेसे अथवा जलको धारण करनेसे महोदधि नाम है। समुद्रः ५८२—'मुदमानंदं एति ददातीति मुद्रा भक्तिस्तया सह वर्तते इति समुद्रः' भक्तिसे प्राप्त होनेसे अथवा लक्ष्मीसहित शोभायमान होनेसे समुद्र नाम है। अब्धिः ५८३—'सरसामस्मि सागरः—इत्युक्तेः' सागररूप होनेसे अब्धि नाम है। अकूपारः ५८४—कूर्मावतार होनेसे अकूपार नाम है। पारावारः ५८५—संसारमें व्यापार पर व्यापक होनेसे पारावार नाम है। सरित्पतिः ५८६—समुद्ररूपसे नदियोंके पति अथवा यमुनाजीके पति होनेसे सरित्पति नाम है॥ ७६॥

गोकुलानन्दकारी च प्रतिज्ञापरिपालकः।
सदारामः कृपारामो महारामो धनुर्धरः॥ ७७॥

अर्थः—गोकुलानन्दकारी ५८७—गोकुलनिवासियोंको आनन्ददाता होनेसे गोकुलानन्दकारी नाम है। प्रतिज्ञापरिपालकः ५८८—अपनी प्रतिज्ञाको पूरी करनेवाले होनेसे प्रतिज्ञापरिपालक नाम है। सदारामः ५८९—साधुजनोंको विश्रामस्थान अथवा भक्तोंके हृदयमें सदा रमण करनेसे सदाराम नाम है। कृपारामः ५९०—जगत्में कृपापूर्वक विहार करनेसे कृपाराम नाम है। महारामः ५९१—महात्माओंमें रमण करनेसे महाराम नाम है। धनुर्द्धरः ५९२—धनुष धारण करनेसे धनुर्द्धर नाम है॥ ७७॥

पर्वतः पर्वताकारो गयो गेयो द्विजप्रियः ।
कमलाश्वतरो रामो रामायणप्रवर्तकः ॥ ७८ ॥

अर्थः—पर्वतः ५९३—'मेरुः शिखरिणां महम्—इति गीतोक्तेः' मेरुपर्वतरूप विभूतिवाले होनेसे पर्वत नाम है । पर्वताकारः ५९४—पर्वतोंके अभिमानी देवतारूप होनेसे पर्वताकार नाम है। गयः ५९५—"मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद—इति वचनात्" मेरे भक्त जहां गुणानुवाद गाते रहते हैं हे नारद! मैं वहां रहता हूं इस भगवद्वचनानुसार गानप्रिय होनेसे गय नाम है। गेयः ५९६—गानेके योग्य होनेसे गेय नाम है। द्विजप्रियः ५९७—'अविद्यो वा सविद्यो वा ब्राह्मणो मामकी तनुः—इत्युक्तेः' ब्राह्मण प्रिय होनेसे द्विजप्रिय नाम है। कमलाश्वतरः ५९८—कमनीय उच्चश्रवावाले होनेसे कमलाश्वतर नाम है । रामः ५९९—कर्मफलदाता तथा सर्वज्ञ अथवा अतिरमणीय तथा गोपियोंके संग विहार करनेसे राम नाम है। रामायणप्रवर्तकः ६००—वाल्मीकिद्वारा रामायणको प्रचलित करानेसे रामायण-प्रवर्तक नाम है ॥ ७८ ॥

द्यौर्दिवो दिवसो दिव्यो भव्यो भावीभयापहः ।
पार्वतीभाग्यसहितो भर्ता लक्ष्मीविलासवान् ॥७९॥

अर्थः—द्यौः ६०१—"आकाशवत्सर्वगतश्च नित्यम्—इति

श्रुतेः’ आकाशके समान सर्वत्र व्यापक अथवा सर्वत्रप्रकाशवान् होनेसे द्यौः नाम है। दिवः ६०२—आकाशरूप होनेसे दिवः नाम है। दिवसः ६०३—सबके प्रकाशक होनेसे दिवस नाम है। दिव्यः ६०४—सबके स्तुतिके योग्य होनेसे दिव्य नाम है। भव्यः ६०५—“ सर्वदैकरसोऽयमात्मा—इति श्रुतेः ” सदा एकरस रहनेसे भव्य नाम है। भावीभयापहः ६०६—भक्तजनोंके सांसारिक दुःख दूर करनेवाले होनेसे भावीभयापह नाम है। पार्वतीभाग्यसहितः ६०७—पार्वतीजीके सौभाग्य करके युक्त अर्थात् शिवरूप होनेसे पार्वतीभाग्यसहित नाम है। भर्ता ६०८—भक्तोंके पोषणकर्ता होनेसे भर्ता नाम है। लक्ष्मीविलासवान् ६०९—लक्ष्मीजीके संग विलास करनेवाले होनेसे लक्ष्मीविलासवान् नाम है ॥ ७९ ॥

विलासी साहसी सर्वी गर्वी गर्वितलोचनः ।
मुरारिर्लोकधर्मज्ञो जीवनो जीवनान्तकः ॥ ८० ॥

अर्थः—विलासी ६१०—गोपियोंके संग व रुक्मिणीआदि स्त्रियोंके संग क्रीडा करनेसे विलासी नाम है। साहसी ७११—साहसवाले होनेसे साहसी नाम है। सर्वी ६१२—सकल कलाकौतुकसे युक्त होनेसे सर्वी नाम है। गर्वी ६१३—“पुरुषान्न परं किंचित्—इति श्रुतेः” हमसे परे कोई नहीं ऐसा गर्व होनेसे गर्वी नाम है। गर्वितलोचनः ६१४—गर्वयुक्त नेत्रवाले होनेसे

गर्वितलोचन नाम है । मुरारिः ६१५–मुरदैत्यके शत्रु होनेसे मुरारि नाम है । लोकधर्मज्ञः ६१६–वर्णाश्रमधर्मके जाननेवाले होनेसे लोकधर्मज्ञ नाम है । जीवनः ६१७–सब जगत्के जीवनरूप होनेसे जीवन नाम है । जीवनान्तकः ६१८–कालरूपसे प्राणियोंके प्राणोंका अन्त करनेवाले होनेसे जीवनान्तक नाम है ॥ ८० ॥

यमो यमारिर्यमनो यामी यामविघातकः ।
वंशुली पांशुली पांशुः पाण्डुरर्जुनवल्लभः ॥ ८१ ॥

अर्थः—यमः ६१९–'यमः संयमतामस्मि–इति स्मृतेः' धर्म-अधर्मका फल देनेसे संसारको नियमपूर्वक चलानेवाले होनेसे यम नाम है । यमारिः ६२०–भक्तोंके यमसे उत्पन्न हुए त्रासको दूर करनेसे यमारि नाम है । यमनः ६२१–यमराजद्वारा स्तुति किये जानेसे यमन नाम है । यामी ६२२–संसारसे भक्तजनोंको उपराम प्राप्त करनेवाले होनेसे यामी नाम है । यामविघातकः ६२३–सूर्यरूपसे यामोंके बितानेवाले होनेसे यामविघातक नाम है । वंशुली ६२४–मुरलीको धारण कर बजानेसे वंशुली नाम है । पांशुली ६२५–जिनके अति सुन्दररूपके दर्शनसे साध्वीभी असाध्वीसरीखा आचरण करने लगती है, तिससे पांशुली नाम है । पांशुः ६२६–भक्त-विरोधियोंका नाश करनेसे पांशु नाम है । पांडुः ६२७–

गोचारणमें धूलधूसरित अंग होनेसे अथवा सर्वज्ञ होनेसे पांडु नाम है। अर्जुनवल्लभः ६२८—अर्जुनके प्रेमी अथवा अर्जुन प्रिय होनेसे अर्जुनवल्लभ नाम है ॥ ८१ ॥

ललिताचन्द्रिकामाली माली मालाम्बुजाश्रयः ।
अम्बुजाक्षो महायक्षो दक्षश्चिंतामणिः प्रभुः ॥८२॥

अर्थः—ललिताचन्द्रिकामाली ६२९—सुन्दर वैजयन्तीमाला धारण करनेवाले होनेसे ललिताचन्द्रिकामाली नाम है। माली ६३०—तुलसीदल और मंजरीकी माला धारण करनेवाले होनेसे माली नाम है। मालांबुजाश्रयः ६३१—कमलोंसे ग्रथित माला धारण करनेसे मालांबुजाश्रय नाम है। अम्बुजाक्षः ६३२—कमलके समान विशाल अथवा बड़े नेत्र होनेसे अम्बुजाक्ष नाम है। महायक्षः ६३३—सर्वपूज्य अथवा सबके पूजनेयोग्य होनेसे महायक्ष नाम है। दक्षः ६३४—सब कामोंमें चतुर होनेसे दक्ष नाम है। चिंतामणिः ६३५—भक्तोंके मनोरथ पूर्ण करनेवाले होनेसे चिन्तामणि नाम है। प्रभुः ६३६—सबके अधिपति होनेसे प्रभु नाम है ॥ ८२ ॥

मणिर्दिनमणिश्चैव केदारो बदरीश्रयः ।
बदरीवनसंप्रीतो व्यासः सत्यवतीसुतः ॥ ८३ ॥

अर्थः—मणिः ६३७—सबके प्रकाशक अथवा सबसे श्रेष्ठ

होनेसे मणि नाम है । दिनमणिः ६३८—सूर्यरूपसे सबको प्रकाशित करनेसे दिनमणि नाम है । केदारः ६३९—समुद्रमें शंखासुरको मारनेसे केदार नाम है । बदरीश्रयः ६४०—बदरिकाश्रममें निवास करनेसे बदरीश्रय नाम है । बदरीवनसंप्रीतः ६४१—बदरीवनमें भलीभांति प्रीति होनेसे बदरीवनसंप्रीत नाम है। व्यासः ६४२—वेदोंका विभाग करके विस्तार करनेसे व्यास नाम है । सत्यवतीसुतः ६४३—'मुनीनामप्यहं व्यासः—इति गीतोक्तेः' सत्यवतीके सुत व्यासरूप होनेसे सत्यवतीसुत नाम है ॥ ८३ ॥

अमरारिनिहंता च सुधासिंधुविधूदयः ।
चंद्रो रविः शिवः शूली चक्री चैव गदाधरः ॥ ८४ ॥

अर्थः—अमरारिनिहन्ता ६४४—देवताओंके शत्रुओं (दैत्यों) को मारनेवाले होनेसे अमरारिनिहन्ता नाम है । सुधासिंधुविधूदयः ६४५—सुधासिंधु (अमृतसमुद्र) को चंद्रोदयके समान आनंददायक होनेसे और सब किसीको आनन्द देनेवाले होनेसे सुधासिंधुविधूंदय नाम है । चन्द्रः६४६—संसारको प्रसन्न करनेवाले होनेसे चन्द्र नाम है । रविः ६४७—वेदध्वनि करनेसे अथवा सबके जाननेसे रवि नाम है । शिवः ६४८—मंगलमूर्ति होनेसे शिव नाम है । शूली ६४९—असुरोंको दुःख देनेसे शूली नाम है । चक्री ६५०—लोकरक्षानिमित्त सुदर्शन-

चक्र धारण करनेसे चक्री नाम है। गदाधरः ६५१—कौमोदकी गदा धारण करनेसे अथवा औषधियोंके जाननेसे गदाधर नाम है ॥ ८४ ॥

श्रीकर्ता श्रीपतिः श्रीदः श्रीदेवो देवकीसुतः ।
श्रीपतिः पुंडरीकाक्षः पद्मनाभो जगत्पतिः ॥ ८५ ॥

अर्थः—श्रीकर्ता ६५२—भक्तजनोंको शोभासंपत्तिके दाता अथवा मोक्षसंपदा देनेवाले होनेसे श्रीकर्ता नाम है। श्रीपतिः ६५३—लक्ष्मीके पति होनेसे श्रीपति नाम है। श्रीदः ६५४—भक्तजनोंको मोक्षसंपत्ति देनेवाले होनेसे श्रीद नाम है। श्रीदेवः ६५५—लक्ष्मीजीके साथ विहार अथवा शयनादि व्यवहार करनेसे श्रीदेव नाम है। देवकीसुतः ६५६—देवकीके पुत्र होनेसे देवकीसुत नाम है। श्रीपतिः ६५७—'धियां पतिर्लोकपतिर्धरापतिः—इत्युक्तेः' श्रेष्ठ बुद्धियोंके स्वामी अथवा लक्ष्मीसे जगत्की रक्षा करनेसे श्रीपति नाम है। पुंडरीकाक्षः ६५८—"अथ यदिदमस्मिन्ब्रह्मपुरे दहरपुण्डरीकं वेश्म—इत्यादिच्छान्दोग्यश्रुतेः" कमलरूप हृदयमें व्यापक होनेसे पुंडरीकाक्ष नाम है। पद्मनाभः ६५९—कमलकी नाईं नाभि होनेसे अथवा नाभिमें कमल होनेसे पद्मनाभ नाम है। जगत्पतिः ६६०—सकल चराचर जगत्के रक्षक होनेसे जगत्पति नाम है ॥ ८५ ॥

वासुदेवोऽप्रमेयात्मा केशवो गरुडध्वजः ।
नारायणः परंधाम देवदेवो महेश्वरः ॥ ८६ ॥

अर्थः—वासुदेवः ६६१ 'वसनात्सर्वभूतेषु वसित्वादेवयोनिषु ॥ वासुदेवस्ततो ज्ञेयो मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः—इत्युक्तेः' सब प्राणियोंमें निवास करनेसे अथवा वसुदेवके पुत्र होनेसे अथवा 'सत्वं विशुद्धं वसुदेवशब्दितम्—इत्याद्युक्तेः' सत्त्वाविशुद्ध अन्तःकरणको प्रकाशित करनेवाले होनेसे वासुदेव नाम है । अप्रमेयात्मा ६६२ अप्रमाण आत्मावाले अर्थात् अनन्त मूर्तिवाले होनेसे अप्रमेयात्मा नाम है । केशवः ६६३–'क इति ब्रह्मणो नाम ईशोऽहं सर्वदेहिनाम् ॥ आवां तवांगसंभूतौ तस्मात्केशवनामवान्—इत्युक्तेः' ब्रह्मा और शिवके प्रेरक होनेसे केशव नाम है । गरुडध्वजः ६६४–गरुड वाहन वा ध्वज होनेसे गरुडध्वज नाम है । नारायणः ६६५–जीवसमूहोंको साक्षात् देखनेसे नारायण नाम है। परंधाम ६६६–'परंब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्—इति स्मृतेः' अतिउत्कृष्ट तेजवाले होनेसे परंधाम नाम है । देवदेवः ६६७–देवताओं करके स्तुति किये जानेसे अथवा देवताओंकेभी देवता होनेसे देवदेव नाम है । महेश्वरः ६६८–सबके प्रभु होनेसे महेश्वर नाम है ॥ ८६ ॥

चक्रपाणिः कलापूर्णो वेदवेद्यो दयानिधिः ।
भगवान् सर्वभूतेशो गोपालः सर्वपालकः ॥ ८७॥

अर्थः—चक्रपाणिः ६६९–सुदर्शनचक्रधारी होनेसे चक्रपाणि नाम है। कलापूर्णः ६७०–सब कलाओंमें पूर्ण होनेसे कलापूर्ण नाम है। वेदवेद्यः ६७१–वेदोंसे जाननेयोग्य होनेसे वेदवेद्य नाम है। दयानिधिः ६७२–कृपाके समुद्र होनेसे दयानिधि नाम है। भगवान् ६७३–षडैश्वर्यसम्पन्न होनेसे भगवान् नाम है। सर्वभूतेशः ६७४–सब जीवोंके ईश्वर होनेसे सर्वभूतेश नाम है। गोपालः ६७५–इन्द्रियोंके पालक होनेसे गोपाल नाम है। सर्वपालकः ६७६–सबके पालक होनेसे सर्वपालक नाम है ॥ ८७ ॥

अनन्तो निर्गुणो नित्यो निर्विकल्पो निरंजनः।
निराधारो निराकारो निराभासो निराश्रयः ॥८८॥

अर्थः—अनन्तः ६७७–'प्रजानां पतयः सप्त ऋषयश्च सहामरैः ॥ नास्यान्तमधिगच्छन्ति ततोऽनन्त इति स्मृतः—इत्युक्तेः' कोई जिनका पार नहीं पा सकै अथवा नहीं है पार जिनका अथवा देशकाल-गुणोंके परिच्छेदसे रहित होनेसे अनन्त नाम है। निर्गुणः ६७८–'प्रकृत्युत्थगुणाभावादनन्तत्वात्तथेश्वरम् ॥ असिद्धत्वान्मद्गुणानां निर्गुणं मां वदन्ति हि–इत्युक्तेः' प्राकृतगुणोंसे रहित होनेसे निर्गुण नाम है। नित्यः ६७९–नाशरहित होनेसे नित्य नाम है। निर्विकल्पः ६८०–विकल्प (भेद) से रहित होनेसे निर्विकल्प नाम है। निरंजनः

६८१–देहेन्द्रियरूप प्रकृति (माया) अथवा त्रिविध दुःखोंसे रहित होनेसे निरंजन नाम है। निराधारः ६८२–जगत्के आधाररूप होनेसे निराधार नाम है। निराकारः ६८३–प्राकृत आकाररहित होनेसे निराकार नाम है। निराभासः ६८४–स्वयं पूर्ण प्रकाशवान् होनेसे निराभास नाम है। निराश्रयः ६८५–कार्यकारणरूप होनेसे और दूसरेकी अपेक्षा नहीं रखनेसे निराश्रय नाम है ॥ ८८ ॥

पुरुषः प्रणवातीतो मुकुन्दः परमेश्वरः ।
क्षणावनिः सार्वभौमो वैकुंठो भक्तवत्सलः ॥ ८९ ॥

अर्थः—पुरुषः ६८६ अन्तर्यामीरूपसे सब शरीरोंमें स्थित होनेसे पुरुष नाम है। प्रणवातीतः ६८७–'ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म–इति स्मृतेः' "ओमिति ब्रह्म ओमिति ँ सर्वम्–इत्यादिश्रुतेः' ओंकार करके प्रतिपादित होनेसे प्रणवातीत नाम है। मुकुन्दः ६८८–'मुकुन्द-भक्तिरसः प्रेम वचनं वेदसम्मतम् । यस्तं ददाति भक्तेभ्यो मुकुन्दस्तेन कीर्तितः–इत्युक्तेः' भक्तजनोंको भक्तिरस तथा मुक्ति देनेसे मुकुन्द नाम है। परमेश्वरः ६८९–प्रकृष्ट लक्ष्मी के ईश्वर होनेसे परमेश्वर नाम है। क्षणावनिः ६९०–उत्सवोंके बढाने तथा भक्तोंके रक्षक होनेसे क्षणावनि नाम है। सार्वभौमः ६९१–समस्त भूमंडलके एकमात्र ईश्वर होनेसे सार्वभौम नाम है। वैकुंठः ६९२–ज्ञानरूप अथवा नाशरहित

स्थान होनेसे वैकुंठ नाम है। भक्तवत्सलः ६९३–भक्तोंकी रक्षा व पालना माताके समान दयायुक्त होकर करनेवाले होनेसे भक्तवत्सल नाम है ॥ ८९ ॥

विष्णुर्दामोदरः कृष्णो माधवो मथुरापतिः ।
देवकीगर्भसंभूतो यशोदावत्सलो हरिः ॥ ९० ॥

अर्थः—विष्णुः ६९४–'व्याप्य सर्वानिमाँल्लोकान् स्थितः सर्वत्र केशवः ॥ ततश्च सर्वनामासि धातोर्व्याप्तेश्च दर्शनात्—इत्युक्तेः' सर्वचराचर जगत्के व्यापक होनेसे विष्णु नाम है। दामोदरः ६९५–' तयोर्मध्यंगतो दाम्ना बद्धो गाढं तथादरे ॥ ततो हि दामोदरतां स ययौ दामबन्धनात्—इत्युक्तेः' यमलार्जुनवृक्षोंके बीच यशोदाद्वारा रस्सीसे उदरमें बंधेहुए होनेसे दामोदर नाम है। कृष्णः ६९६–' सर्वेषां तेजसां राशिः सर्वमूर्तिस्वरूपकः ॥ सर्वाधारः सर्ववीजं तेन कृष्ण इति स्मृतः—इत्युक्तेः' सब तेजोंके राशि होनेसे कृष्ण नाम है। माधवः ६९७–'मा विद्या च हरेः प्रोक्ता तस्या ईशो यतो भवान् ॥ तस्मान्माधवनामासि धवः स्वामीति शब्दितः—इत्युक्तेः' मा (विद्या) के पति होनेसे अथवा मधुदैत्यके मारनेसे माधव नाम है। मथुरापतिः ६९८–मथुराके रक्षक होनेसे मथुरापति नाम है। देवकीगर्भसंभूतः ६९९–देवकीके गर्भसे भलीभांती (अयोनि) जन्म होनेसे देवकीगर्भसंभूत नाम है। यशोदा-

वत्सलः ७००—यशोदाजीके प्रिय पुत्र होनेसे यशोदावत्सल नाम है। हरिः ७०१—भक्तोंका दुःख हरनेसे अथवा प्रलयकालमें संहार करनेसे हरि नाम है ॥ ९० ॥

शिवः संकर्षणः शम्भुर्भूतनाथो दिवस्पतिः ।
अव्ययः सर्वधर्मज्ञो निर्मलो निरुपद्रवः ॥ ९१ ॥

अर्थः—शिवः ७०२—प्रलयकालमें सुखपूर्वक सबको शयन करानेसे शिव नाम है। संकर्षणः ७०३—प्रलयकालमें प्रजाको अपने बीचमें खैंच लेनेसे अथवा यादवोंको मथुरासे द्वारकाको सम्यक्प्रकार आकर्षण करनेसे संकर्षण नाम है। शंभुः ७०४—भक्तजनोंके सुखनिमित्त शोभाको प्राप्त होनेसे शंभु नाम है। भूतनाथः ७०५—सब प्राणियोंके स्वामी होनेसे भूतनाथ नाम है। दिवस्पतिः ७०६—स्वर्गके स्वामी होनेसे दिवस्पति नाम है। अव्ययः ७०७—त्रिकालमें नाशादि विकारोंसे रहित होनेसे अव्यय नाम है। सर्वधर्मज्ञः ७०८—सब धर्मोंके जाननेवाले होनेसे सर्वधर्मज्ञ नाम है। निर्मलः ७०९—मलरहित अथवा मलिन जो गज, गीध, गणिका आदि उनको निर्मल करनेसे निर्मल नाम है। निरुपद्रवः ७१०—दुष्कर्मरहित अथवा भक्तजनोंको उपद्रवरहित करनेवाले होनेसे निरुपद्रव नाम है ॥९१॥

निर्वाणनायको नित्यो नीलजीमूतसन्निभः ।
कलाक्षयश्च सर्वज्ञः कमलारूपतत्परः ॥ ९२ ॥

अर्थः—निर्वाणनायकः ७११—मोक्षके दाता होनेसे निर्वाणनायक नाम है। नित्यः ७१२—सदा एक समानरूप रहनेसे नित्य नाम है। नीलजीमूतसन्निभः ७१३—नील मेघके समान श्यामवर्ण होनेसे नीलजीमूतसन्निभ नाम है। कलाक्षयः ७१४-कलाओंके निवासभूत होनेसे कलाक्षय नाम है। सर्वज्ञः ७१५—सबको जाननेवाले होनेसे सर्वज्ञ नाम है। कमलारूपतत्परः ७१६—लक्ष्मीजीके स्वरूपमें आसक्त होनेसे कमलारूपतत्पर नाम है ॥ ९२ ॥

हृषीकेशः पीतवासा वसुदेवप्रियात्मजः ।
नन्दगोपकुमारार्यो नवनीताशनो विभुः ॥ ९३ ॥

अर्थः— हृषीकेशः ७१७—इन्द्रियोंके नियन्ता अथवा इन्द्रियोंके प्रवर्तक होनेसे हृषीकेश नाम है। पीतवासाः ७१८—पीतवर्ण वस्त्र पहिरनेसे पीतवासा नाम है। वसुदेवप्रियात्मजः ७१९—वसुदेवकी प्रिया (देवकी) के पुत्र होनेसे अथवा वसुदेवजीके प्यारे पुत्र होनेसे वसुदेवप्रियात्मज नाम है। नन्दगोपकुमारार्यः ७२०—नन्दगोपके श्रेष्ठ कुमार होनेसे नन्दगोपकुमारार्य नाम है। नवनीताशनः ७२१—माखन खानेवाले होनेसे नवनीताशन नाम है। विभुः ७२२—सर्व जगत्के स्वामी अथवा सब चराचरके रक्षक अथवा सबमें व्याप्त होनेसे विभु नाम है ॥ ९३ ॥

पुराणपुरुषः श्रेष्ठः शंखपाणिः सुविक्रमः ।
अनिरुद्धश्चक्ररथः शार्ङ्गपाणिश्चतुर्भुजः ॥ ९४ ॥

अर्थः—पुराणपुरुषः ७२३—आदिसेही भक्तजनोंके पाप दूर करनेसे अथवा अनादि पुरुष होनेसे पुराणपुरुष नाम है। श्रेष्ठः ७२४—सबसे श्रेष्ठ (उत्तम) होनेसे श्रेष्ठ नाम है। शंखपाणिः ७२५—हाथमें पांचजन्य शंखधारण करनेसे शंखपाणि नाम है। सुविक्रमः ७२६—सबसे अधिक पराक्रमी होनेसे सुविक्रम नाम है। अनिरुद्धः ७२७—किसीके रोकनेमें नहीं आनेसे अनिरुद्ध नाम है। चक्ररथः ७२८—चक्राकार रथवाले अथवा जगच्चक्र, कालचक्र और युगचक्रकरके रमण करनेवाले होनेसे चक्ररथ नाम है। शार्ङ्गपाणिः ७२९—हाथमें शार्ङ्ग नामक धनुष धारण करनेसे शार्ङ्गपाणि नाम है। चतुर्भुजः ७३०—चार भुजावाले होनेसे अथवा अर्थ, धर्म, काम व मोक्ष इन चारोंकी रक्षा करनेसे चतुर्भुज नाम है ॥ ९४ ॥

गदाधरः सुरार्तिघ्नो गोविन्दो नन्दकायुधः ।
वृंदावनचरः शौरिर्वेणुवाद्यविशारदः ॥ ९५ ॥

अर्थः—गदाधरः ७३१—असुरोंका संहार करके भक्तोंकी रक्षा करनेसे और कौमोदकीगदा धारण करनेसे गदाधर नाम है। सुरार्तिघ्नः ७३२—देवताओंके दुःखको दूर करनेसे सुरा-

तिंघ्र नाम है। गोविन्दः ७३३—उपनिषद्द्वारा सज्जनोंको अपना स्वरूप बतानेसे अथवा वराहरूपसे पृथिवीको प्राप्त करनेवाले होनेसे गोविन्द नाम है। नन्दकायुधः ७३४—नन्दक नामक खड्ग धारण करनेसे नन्दकायुध नाम है। वृन्दावनचरः ७३५—वृन्दावनमें विहार करनेसे वृन्दावनचर नाम है। शौरिः ७३६—शूरवंशमें उत्पन्न होनेसे अथवा वसुदेवके घर प्रकट होनेसे अथवा असज्जनोंको गर्वयुक्त करनेसे शौरी नाम है। वेणुवाद्यविशारदः ७३७—वंशी बजानेमें निपुण होनेसे वेणुवाद्यविशारद नाम है॥ ९५॥

तृणावर्तान्तको भीमसाहसो बहुविक्रमः।
शकटासुरसंहारी बकासुरविनाशनः॥ ९६॥

अर्थः—तृणावर्तान्तकः ७३८—तृणावर्त नाम दैत्यका संहार करनेसे तृणावर्तान्तक नाम है। भीमसाहसः ७३९—गोवर्धनपर्वतको उठानेमें साहसी होनेसे अथवा दुष्टजनोंको भयंकर साहस दिखानेसे भीमसाहस नाम है। बहुविक्रमः ७४०—महापराक्रमी होनेसे बहुविक्रम नाम है। शकटासुरसंहारी ७४१—शकटासुरका संहार करनेसे शकटासुरसंहारी नाम है। बकासुरविनाशनः ७४२—बकासुरका विनाश करनेसे बकासुरविनाशन नाम है॥ ९६॥

धेनुकासुरसंहारी पूतनारिर्नृकेसरी ।
पितामहो गुरुः साक्षी प्रत्यगात्मा सदाशिवः ॥९७॥

अर्थः—धेनुकासुरसंहारी ७४३–धेनुकासुरका संहार करनेसे धेनुकासुरसंहारी नाम है । पूतनारिः ७४४–पूतनाराक्षसीके प्राण हरण करनेसे पूतनारि नाम है । नृकेसरी ७४५–मनुष्योंमें श्रेष्ठ होनेसे अथवा नृसिंहअवतार धारण करनेसे नृकेसरी नाम है । पितामहः ७४६–पित्रादिकोंके अथवा ब्रह्मादिकोंकेभी पूज्य होनेसे पितामह नाम है । गुरुः ७४७–'गृणाति हितमुपदिशति इति गुरुः' 'गुशब्दस्त्वंधकारः स्याद्रुशब्दस्तन्निरोधकृत् ॥ अन्धकारविरोधित्वाद्गुरुरित्यभिधीयते–इत्युक्तेः' भक्तजनोंके हृदयसे अज्ञानरूपी अन्धकारको दूर करनेसे गुरु नाम है । साक्षी ७४८–सबको साक्षात् देखनेसे साक्षी नाम है । प्रत्यगात्मा ७४९–'प्रतिशरीरमञ्चति व्याप्नोतीति व्युत्पत्तेः' सब प्राणियोंके अन्तर्यामी होनेसे प्रत्यगात्मा नाम है । सदाशिवः ७५०–भक्तजनोंको सदैव मंगलदायक होनेसे सदाशिव नाम है ॥ ९७ ॥

अप्रमेयः प्रभुः प्राज्ञोऽप्रतर्क्यः स्वप्नवर्द्धनः ।
धन्यो मान्यो भवो भावो धीरः शान्तो जगद्गुरुः ९८

अर्थः—अप्रमेयः ७५१–प्रमाणरहित होनेसे अप्रमेय नाम है ।

प्रभुः ७५२–सबसे उत्कृष्ट होकर रहनेसे प्रभु नाम है। प्राज्ञः ७५३–साधारणरीतिसे नहीं जाननेयोग्य होनेसे प्राज्ञ नाम है। अप्रतर्क्यः ७५४–अत्यन्त तर्कना करनेको योग्य न होनेवाले होनेसे अर्थात् जिसके विषे केवल कल्पनाभी नहीं हो सक्ती उसका नाम अप्रतर्क्य है। स्वप्नवर्द्धनः ७५५–स्वप्नोंके बढ़ानेवाले होनेसे स्वप्नवर्द्धन नाम है। धन्यः ७५६–लोकसे स्तुतियोग्य अथवा कृतकृत्यरूप होनेसे धन्य नाम है। मान्यः ७५७–ब्रह्मादिदेवताओंकेभी पूजनीय होनेसे मान्य नाम है। भवः ७५८–जगत्को उत्पन्न करनेवाले होनेसे भव नाम है। भावः ७५९–सत्तात्मक होनेसे भाव नाम है। धीरः ७६०–बुद्धिप्रदान करनेवाले अथवा धैर्यवान् होनेसे धीर नाम है। शान्तः ७६१–सहनशील होनेसे शान्त नाम है। जगद्गुरुः ७६२–सम्पूर्ण ब्रह्मांडके पूजनीय होनेसे अथवा सब जगत्के शिक्षक होनेसे जगद्गुरु नाम है॥ ९८॥

अन्तर्यामीश्वरो दिव्यो दैवज्ञो देवसंस्तुतः।
क्षीराब्धिशयनो धाता लक्ष्मीवाँलक्ष्मणाग्रजः॥९९॥

अर्थः—अन्तर्यामी ७६३–सबके भीतरका और बाहरकाभी वृत्तान्त जाननेसे अन्तर्यामी नाम है। ईश्वरः ७६४–सबके स्वामी होनेसे ईश्वर नाम है। दिव्यः ७६५–अप्राकृत जन्मकर्म होनेसे अथवा स्तुतियोग्य होनेसे दिव्य नाम है।

दैवज्ञः ७६६–' पूर्वकर्मार्जितविपाको दैवं तज्जानातीति दैवज्ञः ' होनहार बातोंको जाननेसे दैवज्ञ नाम है। देवसंस्तुतः ७६७–देवताओंकरके भलीभांती स्तुतियोग्य होनेसे देवसंस्तुत नाम है । क्षीराब्धिशयनः ७६८–क्षीरसागरमें शयन करनेसे क्षीराब्धिशयन नाम है। धाता ७६९–अनन्तरूपसे जगत्को धारण करनेसे धाता नाम है । लक्ष्मीवान् ७७०–वक्षस्स्थलमें लक्ष्मीरूप चिन्ह धारण करनेसे लक्ष्मीवान् नाम है। लक्ष्मणाग्रजः ७७१–द्वापरयुगमें लक्ष्मणजीसे पहले अवतार लेनेवाले अथवा लक्ष्मणजीके वडे भाई (रामचंद्रजी) होनेसे लक्ष्मणाग्रज नाम है ॥ ९९ ॥

धात्रीपतिरमेयात्मा चन्द्रशेखरपूजितः ।
लोकसाक्षी जगच्चक्षुः पुण्यचारित्रकीर्तनः ॥१००॥

अर्थः—धात्रीपतिः ७७२–पृथ्वीके रक्षक होनेसे धात्रीपति नाम है । अमेयात्मा ७७३–अप्रमाण शरीर अथवा अपरिच्छिन्नरूप होनेसे अप्रमेयात्मा नाम है । चन्द्रशेखरपूजितः ७७४–शिवजीकरके पूजित होनेसे चन्द्रशेखरपूजित नाम है । लोकसाक्षी ७७५–लोकोंके शुभअशुभ कर्मके द्रष्टा अर्थात् साक्षीरूप होनेसे लोकसाक्षी नाम है। जगच्चक्षुः ७७६–जगत्के नेत्ररूप होनेसे जगच्चक्षु नाम है । पुण्यचारित्रकीर्तनः ७७७–

पुण्यरूप चरित्र और कीर्तन होनेसे पुण्यचारित्रकीर्तन नाम है ॥ १०० ॥

कोटिमन्मथसौंदर्यो जगन्मोहनविग्रहः ॥
मन्दस्मिततनो गोपगोपिकापरिवेष्टितः ॥ १०१ ॥

अर्थः—कोटिमन्मथसौन्दर्यः ७७८—करोडों कामदेवोंके समान सुन्दर होनेसे कोटिमन्मथसौंदर्य नाम है । जगन्मोहनविग्रहः ७७९—जगत्को मोह करानेवाली शक्ति धारण करनेसे जगन्मोहनविग्रह नाम है । मन्दस्मिततनः ७८०—मन्द मन्द मुसक्यानसे भक्तजनोंको प्रसन्न करनेसे मन्दस्मिततन नाम है । गोपगोपिकापरिवेष्टितः ७८१—गोप और गोपियोंसे घिरे-हुये अथवा जीव और प्रकृतिसे वेष्टित होनेसे गोपगोपिका-परिवेष्टित नाम है ॥ १०१ ॥

फुल्लारविन्दनयनश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ।
इन्दीवरदलश्यामो बर्हिबर्हावतंसकः ॥ १०२ ॥

अर्थः—फुल्लारविन्दनयनः ७८२—प्रफुल्लित (खिलेहुये) कमलके समान नेत्र होनेसे फुल्लारविन्दनयन नाम है । चाणूरान्ध्रनिषूदनः ७८३—चाणूर और मुष्टिकनाम मल्लोंको पछार-कर मारनेसे चाणूरान्ध्रनिषूदन नाम है । इन्दीवरदलश्यामः ७८४—नील कमलदलके समान श्यामवर्ण होनेसे इन्दीवरदल-

श्याम नाम है । बर्हिबर्हावतंसकः ७८५–मोरपंखका तुर्रा और मुकुट धारण करनेसे बर्हिबर्हावतंसक नाम है ॥ १०२ ॥

मुरलीनिनदाह्लादो दिव्यमाल्याम्बरावृतः ।
सुकपोलयुगः सुभ्रूयुगलः सुललाटकः ॥१०३॥

अर्थः—मुरलीनिनदाह्लादः ७८६–वंशीके शब्दसे आनन्द देनेवाले होनेसे मुरलीनिनदाह्लाद नाम है । दिव्यमाल्याम्बरावृतः ७८७–दिव्यमाला और वस्त्रोंसे अलंकृत होनेसे दिव्यमाल्याम्बरावृत नाम है । सुकपोलयुगः ७८८–दोनों कपोल (गाल) सुन्दर होनेसे सुकपोलयुग नाम है । सुभ्रूयुगलः ७८९–दोनों भ्रुकुटी (भौंहें) सुन्दर होनेसे सुभ्रूयुगल नाम है । सुललाटकः ७९०–सुन्दर ऊँचा ललाट (मस्तक) वाले होनेसे सुललाटक नाम है ॥ १०३ ॥

कुंबुग्रीवो विशालाक्षो लक्ष्मीवाञ्छुभलक्षणः ।
पीनवक्षाश्चतुर्बाहुश्चतुर्मूर्तिस्त्रिविक्रमः ॥१०४॥

अर्थः—कुंबुग्रीवः ७९१–शंखकीसी त्रिवलीयुक्त ग्रीवा होनेसे कुंबुग्रीव नाम है । विशालाक्षः ७९२–विशालनेत्र होनेसे विशालाक्ष नाम है । लक्ष्मीवान् ७९३–लक्ष्मीजीके स्वामी होनेसे लक्ष्मीवान् नाम है । शुभलक्षणः ७९४–शुभलक्षणयुक्त हाथ पांवोंके चिन्ह होनेसे शुभलक्षण नाम है । पीनवक्षाः ७९५–

'कक्षा कुक्षिश्च वक्षश्च कर्णस्कंधललाटकम् । षडुन्नतं भवेद्यस्य राज्यं तस्य विनिर्दिशेत्' कटिबंध, कुक्षि, छाती, कान, कंधे और मस्तक ये छः अंग जिसके ऊँचे हों वह राजा होता है सो ऊंची अथवा पुष्ट छातीवाले होनेसे पीनवक्षा नाम है। चतुर्बाहुः ७९६–चार वेदरूप चारों भुजा होनेसे चतुर्बाहु नाम है। चतुर्मूर्तिः ७९७–बलराम, कृष्ण, प्रद्युम्न और अनिरुद्ध ये चारों स्वरूप यही (श्रीकृष्ण) होनेसे चतुर्मूर्ति नाम है। त्रिविक्रमः ७९८–'त्रिरित्येव त्रयो लोकाः कीर्तिता मुनिसत्तमैः। क्रमते तांस्तथा सर्वांस्त्रिविक्रमो जनार्दनः' वामनरूप हो तीन पगसे तीनों लोक व्यापनेसे अथवा तीनों लोकोंमें विद्यमान पराक्रमवाले होनेसे त्रिविक्रम नाम है ॥ १०४ ॥

कलंकरहितः शुद्धो दुष्टशत्रुनिबर्हणः ।
किरीटकुंडलधरः कटकांगदमंडितः ॥ १०५ ॥

अर्थः—कलंकरहितः ७९९–'पत्न्यस्तु षोडशसहस्रमनंगबाणैर्यस्येन्द्रियं विमथितुं कुहनैर्न शेकुः-इति भागवतोक्तेः' सोलह हजार स्त्रियोंके होनेपरभी कामदेव श्रीकृष्णजीको नहीं जीतसका सो अच्युतवीर्य होनेसे श्रीगोपालजीका कलंकरहित नाम है। शुद्धः ८००–'शुद्धमपापविद्धम्–इत्यादिश्रुतेः' विकाररहित होनेसे शुद्ध नाम है। दुष्टशत्रुनिबर्हणः ८०१–गो ब्राह्मण और देवताओंके सतानेवाले रावणआदि दुष्ट और

शिशुपाल आदि शत्रुओंके नाशक होनेसे दुष्टशत्रुनिबर्हण नाम है। किरीटकुंडलधरः ८०२–मुकुट और कुंडल धारण करनेसे किरीटकुंडलधर नाम है। कटकांगदमण्डितः ८०३–किंकिणी और भुजबन्द करके सुशोभित होनेसे कटकांगद-मंडित नाम है ॥ १०५ ॥

मुद्रिकाभरणोपेतः कटिसूत्रविराजितः ।
मंजीररञ्जितपदः सर्वाभरणभूषितः ॥ १०६ ॥

अर्थः—मुद्रिकाभरणोपेतः ८०४–अंगूठी आदि धारण करनेसे मुद्रिकाभरणोपेत नाम है। कटिसूत्रविराजितः ८०५–करधनी धारण करनेसे कटिसूत्रविराजित नाम है। मंजीररंजितः ८०६–नूपुरों करके सुन्दर चरणवाले होनेसे मंजीररंजितपद नाम है। सर्वाभरणभूषितः ८०७–सम्पूर्ण आभूषणोंकरके सुशोभित होनेसे सर्वाभरणभूषित नाम है ॥ १०६ ॥

विन्यस्तपादयुगलो दिव्यमंगलविग्रहः ।
गोपिकानयनानन्दः पूर्णचन्द्रनिभाननः ॥१०७॥

अर्थः—विन्यस्तपादयुगलः ८०८–रासलीला करतेसमय नृत्ययुक्त चरण रखनेसे विन्यस्तपादयुगल नाम है। दिव्यमंगलविग्रहः ८०९–अप्राकृत मंगलरूप शरीर होनेसे दिव्य-मंगलविग्रह नाम है। गोपिकानयनानन्दः ८१०–गोपियोंके

नयनोंको आनन्द देनेवाले होनेसे गोपिकानयनानन्द नाम है। पूर्णचन्द्रनिभाननः ८११—पूर्णचन्द्रमाके समान कान्तिमान् मुख होनेसे पूर्णचन्द्रनिभानन नाम है ॥ १०७ ॥

समस्तजगदानन्दः सुन्दरो लोकनन्दनः ।
यमुनातीरसंचारी राधामन्मथवैभवः ॥ १०८ ॥

अर्थः—समस्तजगदानन्दः ८१२—सम्पूर्ण जगत्को आनन्द देनेवाले होनेसे समस्तजगदानन्द नाम है। सुन्दरः ८१३—मनोहर रूपवान् होनेसे सुन्दर नाम है। लोकनन्दनः ८१४—लोकोंको समृद्धियुक्त वा हर्षयुक्त करनेसे लोकनन्दन नाम है। यमुनातीरसंचारी ८१५—यमुनाजीके तटपर भलीभाँति विहार करनेवाले होनेसे यमुनातीरसंचारी नाम है। राधामन्मथवैभवः ८१६—राधिकाजीमेंही कामसंपदावाले होनेसे राधामन्मथवैभव नाम है ॥ १०८ ॥

गोपनारीप्रियो दान्तो गोपीवस्त्रापहारकः ।
शृंगारमूर्तिः श्रीधामा तारको मूलकारणम् ॥१०९॥

अर्थः—गोपनारीप्रियः ८१७—गोपियोंके प्रीतिपात्र होनेसे गोपनारीप्रिय नाम है। दान्तः ८१८—जितेन्द्रिय होनेसे दान्त नाम है। गोपीवस्त्रापहारकः ८१९—गोपियोंके चीर हरण करनेसे गोपीवस्त्रापहारक नाम है। शृंगारमूर्तिः ८२०—शृंगारकी साक्षात्

मूर्ति अर्थात् शृंगाररसस्वरूप होनेसे शृंगारमूर्ति नाम है। श्रीधामा ८२१–लक्ष्मीके, शोभाके वा संपदाके स्थान होनेसे श्रीधामा नाम है। तारकः ८२२–भवसागरसे भक्तोंको तारनेवाले अथवा अनेकप्रकारके पाप, मृत्यु और भ्रूणहत्या आदिसे तारनेवाले होनेसे तारक नाम है। मूलकारणम् ८२३–सम्पूर्ण जगत्के मूलकारण होनेसे मूलकारण नाम है ॥ १०९ ॥

सृष्टिसंरक्षणोपायः क्रूरासुरविभंजनः ।
नरकासुरसंहारी मुरारिर्वैरिमर्दनः ॥ ११० ॥

अर्थः—सृष्टिसंरक्षणोपायः ८२४–जगत्की रक्षा भलीभांति स्मरणमात्रसेही करनेवाले होनेसे सृष्टिसंरक्षणोपाय नाम है। क्रूरासुरविभंजनः ८२५–दुष्टस्वभाववाले असुरोंको मारनेवाले होनेसे क्रूरासुरविभंजन नाम है। नरकासुरसंहारी ८२६–नरकासुरके नाशकर्ता होनेसे नरकासुरसंहारी नाम है। मुरारिः ८२७–भक्तजनोंको दुःख देनेवाले मुरदैत्यके नाशकर्ता होनेसे मुरारि नाम है। वैरिमर्दनः ८२८–शत्रुओंके विनष्टकर्ता होनेसे अथवा भक्तजनोंके काम क्रोध आदि वैरियोंको दूर करनेवाले होनेसे वैरिमर्दन नाम है ॥ ११० ॥

आदितेयप्रियो दैत्यभीकरो यदुशेखरः ।
जरासंधकुलध्वंसी कंसारातिः सुविक्रमः ॥ १११ ॥

अर्थः—आदितेयप्रियः ८२९—देवताओंके प्रिय होनेसे आदितेयप्रिय नाम है। दैत्यभीकरः ८३०—दैत्योंको डरानेवाले होनेसे दैत्यभीकर नाम है। यदुशेखरः८३१—यदुवंशमें शिरोमणि होनेसे यदुशेखर है। जरासंधकुलध्वंसी ८३२—जरासंधके वंशके विध्वंसकर्ता होनेसे-जरासंधकुलध्वंसी नाम है। कंसारातिः ८३३—कंसके वैरी होनेसे कंसाराति नाम है। सुविक्रमः ८३४—परम पराक्रमवाले होनेसे सुविक्रम नाम है ॥ १११ ॥

पुण्यश्लोकः कीर्तनीयो यादवेन्द्रो जगन्नुतः ।
रुक्मिणीरमणः सत्यभामाजाम्बवतीप्रियः ॥ ११२ ॥

अर्थः—पुण्यश्लोकः ८३५—निर्मलयशवाले होनेसे पुण्यश्लोक नाम है। कीर्तनीयः ८३६—कीर्तन करनेके योग्य होनेसे कीर्तनीय नाम है। यादवेन्द्रः ८३७—यादवोंमें श्रेष्ठ होनेसे यादवेन्द्र नाम है। जगन्नुतः ८३८—जगत्में सबसे स्तुति करनेयोग्य होनेसे जगन्नुत नाम है। रुक्मिणीरमणः ८३९—रुक्मिणीके संग रमण करनेवाले होनेसे रुक्मिणीरमण नाम है। सत्यभामाजाम्बवतीप्रियः ८४०—सत्यभामा और जाम्बवतीके प्रिय (पति) होनेसे सत्यभामाजाम्बवतीप्रिय नाम है ॥ ११२ ॥

मित्रविन्दानाग्नजितीलक्ष्मणासमुपासितः ।
सुधाकरकुलेजातोऽनन्तप्रबलविक्रमः ॥ ११३ ॥

अर्थः—मित्रविन्दानाग्नजितीलक्ष्मणासमुपासितः ८४१—मित्रविन्दा, नाग्नजिती व लक्ष्मणा इन्होंकरके सेवा किये जानेसे मित्रविन्दानाग्नजितीलक्ष्मणासमुपासित नाम है । सुधाकरकुलेजातः ८४२—चन्द्रवंशमें उत्पन्न होनेसे सुधाकरकुलेजात नाम है । अनन्तप्रबलविक्रमः ८४३—महापराक्रमवाले होनेसे अथवा असीम निरतिशय प्रतापवान् होनेसे अनन्तप्रबलविक्रम नाम है ॥ ११३ ॥

सर्वसौभाग्यसम्पन्नो द्वारकापत्तनेस्थितः ।
भद्रासूर्यसुतानाथो लीलामानुषविग्रहः ॥ ११४ ॥

अर्थः—सर्वसौभाग्यसंपन्नः ८४४—सम्पूर्ण सौभाग्य अर्थात् स्त्री, पुत्र, मित्र धनादि वस्तुओंसे युक्त होनेसे सर्वसौभाग्यसम्पन्न नाम है । द्वारकापत्तनेस्थितः ८४५—द्वारकापुरीमें विराजमान होनेसे द्वारकापत्तनेस्थित नाम है । भद्रासूर्यसुतानाथः ८४६—भद्रा और यमुना (कालिंदी) के स्वामी होनेसे भद्रासूर्यसुतानाथ नाम है । लीलामानुषविग्रहः ८४७—"नराकृतिः परं ब्रह्म—इति श्रुतेः ।" लीलाके हेतु अथवा लीलासेही नररूप धारण करनेसे लीलामानुषविग्रह नाम है ॥११४॥

सहस्रषोडशस्त्रीशो भोगमोक्षैदायकः ।
वेदान्तवेद्यः संवेद्यो वैद्यो ब्रह्माण्डनायकः ॥११५॥

अर्थः—सहस्रषोडशस्त्रीशः ८४८—सोलह हजार स्त्रियोंके पति होनेसे सहस्रषोडशस्त्रीश नाम है। भोगमोक्षैकदायकः ८४९—भोग और मोक्षके मुख्य दाता होनेसे भोगमोक्षैकदायक नाम है। वेदान्तवेद्यः ८५०—वेदान्त (उपनिषद्) इन्होंसे जानने योग्य होनेसे वेदान्तवेद्य नाम है। संवेद्यः ८५१—भली भाँति जानने योग्य अथवा मोक्षादि पदार्थनिमित्त उपासनायोग्य होनेसे संवेद्य नाम है। वैद्यः ८५२—धन्वन्तरिरूप होनेसे वैद्य नाम है। ब्रह्माण्डनायकः ८५३—सम्पूर्ण ब्रह्माण्डके स्वामी होनेसे ब्रह्माण्डनायक नाम है॥ ११५॥

गोवर्धनधरो नाथः सर्वजीवदयापरः॥
मूर्तिमान् सर्वभूतात्मा आर्तत्राणपरायणः॥११६॥

अर्थः—गोवर्धनधरः ८५४—गोवर्धन पर्वतको उठाकर अँगुली पर धारण करनेसे गोवर्धनधर नाम है। नाथः ८५५—लोकोंसे प्रार्थना करनेयोग्य होनेसे अथवा दुष्टोंको दंड देनेवाले होनेसे नाथ नाम है। सर्वजीवदयापरः ८५६—सम्पूर्ण जीवोंपर कृपा करनेवाले होनेसे सर्वजीवदयापर नाम है। मूर्तिमान् ८५७—परम उत्तम रूप धारण करनेसे मूर्तिमान् नाम है। सर्वभूतात्मा ८५८—सब प्राणियोंके आत्माके अन्तर्यामी होनेसे सर्वभूतात्मा नाम है। आर्तत्राणपरायणः ८५९—

शरणागतोंकी रक्षामें सदा उद्यत रहनेसे आर्तत्राणपरायण नाम है ॥ ११६ ॥

सर्वज्ञः सर्वसुलभः सर्वशास्त्रविशारदः ।
षड्गुणैश्वर्यसम्पन्नः पूर्णकामो धुरन्धरः ॥११७॥

अर्थः—सर्वज्ञः ८६०—सबको वेदार्थज्ञान करानेसे अथवा सबको चेत करानेसे सर्वज्ञ नाम है। सर्वसुलभः ८६१—सबको भक्तिद्वारा सुलभ होनेसे सर्वसुलभ नाम है । सर्वशास्त्रविशारदः ८६२—सब शास्त्रोंमें निपुण होनेसे सर्वशास्त्रविशारद नाम है। षड्गुणैश्वर्यसम्पन्नः ८६३—सन्धिआदि छः गुण और अणिमा आदि आठ सिद्धियोंसे युक्त होनेसे षड्गुणैश्वर्यसम्पन्न नाम है। पूर्णकामः ८६४—पूर्णकामनावाले अथवा भक्तोंकी कामना पूर्ण करनेवाले होनेसे पूर्णकाम नाम है। धुरंधरः ८६५—संपूर्ण जगत्के भरणपोषणका भार धारण करनेसे धुरंधर नाम है॥११७

महानुभावः कैवल्यदायको लोकनायकः ।
आदिमध्यान्तरहितः शुद्धसात्त्विकविग्रहः ॥११८॥

अर्थः—महानुभावः ८६६—प्रशंसाके योग्य प्रभाववाले अथवा श्लाघ्यगुणोंको धारण करनेसे महानुभाव नाम है। कैवल्यदायकः ८६७—मोक्षके दाता होनेसे कैवल्यदायक नाम है। लोकनायकः ८६८—सब लोकोंके अधीश्वर प्रभु होनेसे

लोकनायक नाम है। आदिमध्यान्तरहितः ८६९—आदि (जन्म) मध्य और अन्तसे रहित अर्थात् भूतभविष्यवर्तमानकालमें सदा एकरूप रहनेसे आदिमध्यान्तरहित नाम है। शुद्धसात्विकविग्रहः ८७०—विकाररहित सात्विक शरीरवाले होनेसे शुद्धसात्विकविग्रह नाम है ॥ ११८ ॥

असमानः समस्तात्मा शरणागतवत्सलः ।
उत्पत्तिस्थितिसंहारकारणं सर्वकारणम् ॥ ११९ ॥

अर्थः—असमानः ८७१—'न तत्समश्चाभ्यधिकश्च दृश्यते' न कोई समान है, न अधिक है अर्थात् किसीके समान न होनेसे असमान नाम है। समस्तात्मा ८७२—सबके आत्मा अर्थात् सर्वान्तर्यामी होनेसे समस्तात्मा नाम है। शरणागतवत्सलः ८७३—शरण आयेहुएकी रक्षा करनेवाले होनेसे शरणागतवत्सल नाम है। उत्पत्तिस्थितिसंहारकारणम् । ८७४—जगत्के उत्पन्नकर्ता, पालनकर्ता, और संहारकर्ता होनेसे उत्पत्तिस्थितिसंहारकारण नाम है। सर्वकारणम् ८७५—सबके आदिकारण होनेसे सर्वकारण नाम है ॥ ११९ ॥

गम्भीरः सर्वभावज्ञः सच्चिदानन्दविग्रहः ।
विष्वक्सेनः सत्यसन्धः सत्यवाक् सत्यविक्रमः ॥

अर्थः—गम्भीरः ८७६—ब्रह्मादिक बडे २ देवताभी

जिनके वृत्तान्तको भलीभांति नहीं जानते इससे उन गोपालजीका गंभीर नाम है । सर्वभावज्ञः ८७७-“ तं यथायथोपासते तदेव भवति-इति श्रुतेः” सबके भावको जाननेसे सर्वभावज्ञ नाम है (परमात्माको जिसप्रकार जैसी भावनासे जो उपासना करताहै उसको उसी प्रकारसे प्राप्त होतेहैं और मानते हैं. स्वयं कहाभी है कि, ‘ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्’ अर्थात् जे भक्तजन जिसप्रकार मेरी उपासना करतेहैं उनको वैसेही मैंभी भजताहूं । सच्चिदानन्दविग्रहः ८७८-सत् चित् व आनन्दरूप होनेसे सच्चिदानन्दविग्रह नाम है । विष्वक्सेनः ८७९-चारों ओर सेनावाले होनेसे विष्वक्सेन नाम है । सत्यसन्धः ८८०-सत्य प्रतिज्ञावाले होनेसे सत्यसन्ध नाम है । सत्यवाक् ८८१ वेदरूप सत्यवाणीवाले होनेसे सत्यवाक् नाम है । सत्यविक्रमः ८८२-सत्य अर्थात् अमोघ पराक्रमवाले होनेसे सत्यविक्रम नाम है ॥ १२०॥

सत्यव्रतः सत्यरतः सत्यधर्मपरायणः ।
आपन्नार्तिप्रशमनो द्रौपदीमानरक्षकः ॥ १२१ ॥

अर्थः—सत्यव्रतः ८८३-सत्य संकल्पवाले होनेसे सत्यव्रत नाम है । सत्यरतः ८८४-सत्यमें आसक्त रहनेसे सत्यरत नाम है । सत्यधर्मपरायणः ८८५-सत्यधर्मही उत्तम निवासस्थान होनेसे अथवा सत्यधर्म द्वारा ही प्राप्त होनेवाले होनेसे

सत्यधर्मपरायण नाम है। आपन्नार्तिप्रशमनः ८८६—शरणागतोंके दुःख नाशक होनेसे आपन्नार्तिप्रशमन नाम है। द्रौपदीमानरक्षकः ८८७—द्रौपदीजीकी लाज रखनेसे द्रौपदीमानरक्षक नाम है ॥ १२१ ॥

कन्दर्पजनकः प्राज्ञो जगन्नाटकवैभवः ।
भक्तिवश्यो गुणातीतः सर्वैश्वर्यप्रदायकः ॥ १२२ ॥

अर्थः—कन्दर्पजनकः ८८८—अपनी सुन्दरतासे गोपियोंके कामको उद्दीपन करनेवाले होनेसे अथवा कामदेवरूप प्रद्युम्नजीके जनक (पिता) होनेसे कन्दर्पजनक नाम है। प्राज्ञः ८८९—भलीभांति सबके ज्ञाता होनेसे प्राज्ञ नाम है। जगन्नाटकवैभवः ८९०—जगत्को नचानेरूप वैभववाले होनेसे जगन्नाटकवैभव नाम है। भक्तिवश्यः ८९१—भक्तिद्वारा वशमें होनेसे भक्तिवश्य नाम है। गुणातीतः ८९२—प्राकृतगुणोंसे हीन होनेसे गुणातीत नाम है। सर्वैश्वर्यप्रदायकः ८९३—सबको ऐश्वर्य देनेवाले अथवा सबका सब ऐश्वर्य देनेवाले होनेसे सर्वैश्वर्यप्रदायक नाम है ॥ १२२ ॥

दमघोषसुतद्वेषी बाणबाहुविखंडनः ।
भीष्मभक्तिप्रदो दिव्यः कौरवान्वयनाशनः ॥ १२३ ॥

अर्थः—दमघोषसुतद्वेषी ८९४—दमघोषसुत (शिशुपाल) के

द्वेषी (शत्रु) होनेसे दमघोषसुतद्वेषी नाम है । बाणबाहुविखण्डनः ८९५—बाणासुरकी भुजाओंको काटनेसे बाणबाहुविखन्डन नाम है । भीष्मभक्तिप्रदः ८९६—भीष्मजीको भक्ति देनेवाले होनेसे भीष्मभक्तिप्रद नाम है । दिव्यः ८९७—दिव्य लीलाओंके करनेवाले होनेसे दिव्य नाम है । कौरवान्वयनाशनः ८९८—पांडवों द्वारा कौरववंशके विध्वंसकर्ता होनेसे कौरवान्वयनाशन नाम है ॥ १२३ ॥

कौन्तेयप्रियबंधुश्च पार्थस्यन्दनसारथिः ।
नरसिंहो महावीरःस्तम्भजातोमहाबलः ॥ १२४ ॥

अर्थः—कौन्तेयप्रियबन्धुः ८९९—कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरआदिओंके प्रियबन्धु (हितकर्ता) होनेसे कौंतेयप्रियबन्धु नाम है । पार्थस्यन्दनसारथिः ९००—अर्जुनके रथके सारथि होनेसे पार्थस्यन्दनसारथि नाम है । नरसिंह ९०१—मनुष्योंमें सिंहके समान पराक्रमी होनेसे नरसिंह नाम है । महावीरः ९०२—बड़े पराक्रमी अथवा दुष्टोंको कंपानेवाले होनेसे महावीर नाम है । स्तम्भजातः ९०३—नृसिंहरूपसे खंभको फाडकर प्रगट होनेसे स्तम्भजात नाम है । महाबलः ९०४—बलवानोंसे भी अधिक बलवान् होनेसे महाबल नाम है ॥ १२४ ॥

प्रह्लादवरदः सत्यो देवपूज्योऽभयंकरः ।
उपेन्द्र इन्द्रावरजो वामनो बलिबन्धनः ॥ १२५ ॥

अर्थः—प्रह्लादवरदः ९०५–प्रह्लाद भक्तको वरप्रदान करनेसे प्रह्लादवरद नाम है। सत्यः ९०६–सज्जन महात्माओंके हित करनेवाले होनेसे सत्य नाम है। देवपूज्यः ९०७–इन्द्रआदिक देवताओंके पूजनीय होनेसे देवपूज्य नाम है। अभयंकरः ९०८–भक्तजनोंको अभय करनेवाले होनेसे अभयंकर नाम है। उपेन्द्रः ९०९–इन्द्र (देवराज) के समीपवर्ती होनेसे उपेन्द्र नाम है। इन्द्रावरजः ९१०—वामनरूपसे इन्द्रके लघु भ्राता होनेसे इन्द्रावरज नाम है। वामनः ९११–लघुरूप धारण करनेवाले होनेसे अथवा बावनपूरअंगुलके शरीरवाले होनेसे वामन नाम है। बलिबन्धनः ९१२–वामनरूपसे राजा बलिको बांधनेसे बलिबन्धन नाम है ॥ १२५ ॥

गजेन्द्रवरदः स्वामी सर्वदेवनमस्कृतः ।
शेषपर्यंकशयनो वैनतेयरथो जयी ॥ १२६ ॥

अर्थः—गजेन्द्रवरदः ९१३–गजेन्द्रको वर देनेसे गजेन्द्रवरद नाम है। स्वामी ९१४–'मदीयोऽयम्' यह मेरा है ऐसे अंगीकार करनेसे स्वामी नाम है। सर्वदेवनमस्कृतः ९१५–सब देवताओंकरके वन्दनीय होनेसे सर्वदेवनमस्कृत नाम है। शेषपर्यंकशयनः ९१६ शेषनागरूप शय्यामें शयन करनेसे शेषपर्यंकशयन नाम है। वैनतेयरथः ९१७–गरुड़ वाहन

होनेसे अथवा गरुडकी ध्वजा रथपर होनेसे वैनतेयरथ नाम है । जयी ९१८—सबको जीत लेनेसे अथवा सर्वत्र गमनशक्ति होनेसे जयी नाम है ॥ १२६ ॥

अव्याहतबलैश्वर्यसम्पन्नः पूर्णमानसः ।
योगेश्वरेश्वरः साक्षी क्षेत्रज्ञो ज्ञानदायकः ॥१२७॥

अर्थः—अव्याहतबलैश्वर्यसपन्नः ९१९—अखंडबल और ऐश्वर्यवाले होनेसे अव्याहतबलैश्वर्यसम्पन्न नाम है । पूर्णमानसः ९२०—संपूर्ण मानसवाले अर्थात् स्थिर चित्तवाले वा संपूर्ण विचारशक्तियुक्त मनवाले अथवा प्रसन्नमनवाले होनेसे पूर्णमानस नाम है । योगेश्वरेश्वरः ९२१—योगेश्वरोंके ईश्वर होनेसे योगेश्वरेश्वर नाम है । साक्षी ९२२—सब प्राणियोंके शुभाशुभको साक्षात् देखनेवाले होनेसे साक्षी नाम है । क्षेत्रज्ञः ९२३—शरीरआदिकके ज्ञाता होनेसे क्षेत्रज्ञ नाम है । ज्ञानदायकः ९२४—ज्ञानके दाता होनेसे ज्ञानदायक नाम है ॥ १२७ ॥

योगिहृत्पंकजावासो योगमायासमन्वितः ।
नादबिंदुकलातीतश्चतुर्वर्गफलप्रदः ॥ १२८ ॥

अर्थः—योगिहृत्पंकजावासः ९२५—योगियोंके हृदयकमलमें निवास करनेवाले होनेसे योगिहृत्पंकजावास नाम है । योगमायासमन्वितः ९२६—अचिन्त्यशक्तिवाले होनेसे योग-

मायासमन्वित नाम है। नादबिंदुकलातीतः ९२७—नाद (स्वर) बिन्दु (अनुस्वार व विसर्ग) और कला (मात्रा) इनमें अतिशय व्याप्त होनेसे नादबिंदुकलातीत नाम है। चतुर्वर्गफलप्रदः ९२८—अर्थ, धर्म, काम व मोक्षके देनेवाले होनेसे चतुर्वर्गफलप्रद नाम ॥ १२८ ॥

सुषुम्णामार्गसंचारी देहस्यांतरसंस्थितः ।
देहेन्द्रियमनःप्राणसाक्षी चेतःप्रसादकः ॥१२९॥

अर्थः—सुषुम्णामार्गसंचारी ९२९—सुषुम्णानाडी (जो हृदयमें स्थित है उस) के मार्गमें भलीभांति विचरनेवाले होनेसे सुषुम्णामार्गसंचारी नाम है। देहस्यांतरसंस्थितः ९३०—शरीरमें अंतर्यामीरूपसे भलीभांति स्थित होनेवाले होनेसे देहस्यांतरसंस्थित नाम है। देहेन्द्रियमनःप्राणसाक्षी ९३१—देह, इन्द्रिय, मन और प्राण इनके साक्षात् द्रष्टा होनेसे देहेन्द्रियमनःप्राणसाक्षी नाम है। चेतःप्रसादकः ९३२—निजजनोंके मनको प्रसन्न करनेवाले होनेसे चेतःप्रसादक नाम है ॥१२९॥

सूक्ष्मः सर्वगतो देही ज्ञानदर्पणगोचरः ।
तत्त्वत्रयात्मकोऽव्यक्तः कुंडलीसमुपाश्रितः॥१३०॥

अर्थः—सूक्ष्मः ९३३—“एष त आत्माऽन्तर्हृदयेऽणीयान्—इत्यादिछान्दोग्यश्रुतेः” अणुरूपसे सर्वत्र व्याप्त होनेसे सूक्ष्म

नाम है । सर्वगतः९३४-" सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा-इति श्रुतेः" सबमें स्थित होनेसे सर्वगत नाम है । देही ९३५-'द्वे वा व ब्रह्मणो रूपे मूर्तं चामूर्तं च-इति श्रुतेः' जीवके अंतर्यामी होनेसे अथवा साकाररूप अवतार लेनेसे देही नाम है । ज्ञानदर्पणगोचरः ९३६-जो ज्ञानरूपी दर्पणसे जाने जाते हैं उनका ज्ञानदर्पणगोचर नाम है । तत्त्वत्रयात्मकः ९३७-जीव ईश और प्रकृतिके आत्मा होनेसे तत्त्वत्रयात्मक नाम है । अव्यक्तः ९३८-पापियोंको अप्रगटरूप होनेसे अव्यक्त नाम है । कुंडलीसमुपाश्रितः ९३९-कालीनागके द्वारा भलीभांति उपासना किये जानेसे कुंडलीसमुपाश्रित नाम है ॥ १३० ॥

ब्रह्मण्यः सर्वधर्मज्ञः शान्तो दान्तो गतक्लमः ॥
श्रीनिवासः सदानन्दो विश्वमूर्तिर्महाप्रभुः॥१३१॥

अर्थः—ब्रह्मण्यः ९४०-'शब्दब्रह्मणि निष्णातो न निष्णातः परे यदि-इत्युक्तेः' ब्रह्म, जीव, वेद और प्रकृतिद्वारा जानने योग्य होनेसे अथवा वेदतत्त्व तपके हित करनेवाले होनेसे अथवा ब्राह्मणभक्त होनेसे ब्रह्मण्य नाम है । सर्वधर्मज्ञः ९४१-सब वर्णाश्रमधर्म जाननेवाले होनेसे सर्वधर्मज्ञ नाम है । शान्तः ९४२-भक्तजनोंके सब दुःखोंको दूर करनेसे शान्त नाम है । दान्तः ९४३ इन्द्रियोंको दमन करनेवाले होनेसे दान्त नाम है । गतक्लमः ९४४ परिश्रमरहित होनेसे गतक्लम नाम है ।

श्रीनिवासः ९४५—लक्ष्मीके निवासस्थान होनेसे श्रीनिवास नाम है। सदानन्दः ९४६ सदा सुखपूर्वक रहनेसे सदानन्द नाम है। विश्वमूर्तिः ९४७—जगत्में व्यापक मूर्तिवाले होनेसे विश्वमूर्ति नाम है। महाप्रभुः ९४८—सबके स्वामी होनेसे महाप्रभु नाम है ॥ १३१ ॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
समस्तभुवनाधारः समस्तप्राणरक्षकः ॥ १३२ ॥

अर्थः—सहस्रशीर्षा ९४९—"शतं सहस्रमयुतं सर्वमानन्त्य-वाचकं—इतिमानात्," अनन्त शिर होनेसे सहस्रशीर्षा नाम है। पुरुषः ९५०—भक्तोंके मनोरथ पूर्ण करनेवाले होनेसे अथवा सबमें निवास करनेवाले होनेसे पुरुष नाम है। सहस्राक्षः ९५१—सहस्रों नेत्रवाले होनेसे सहस्राक्ष नाम है। सहस्रपात् ९५२—अनन्त चरण होनेसे सहस्रपात् नाम है। समस्तभुवनाधारः ९५३—सर्व भुवनोंके आधारभूत होनेसे समस्तभुवनाधार नाम है। समस्तप्राणरक्षकः ९५४—सब जीवोंके प्राणोंकी रक्षा करनेवाले होनेसे समस्तप्राणरक्षक नाम है ॥ १३२ ॥

समस्तः सर्वभावज्ञो गोपिकाप्राणवल्लभः ।
नित्योत्सवो नित्यसौख्यो नित्यश्रीर्नित्यमंगलः १३३

अर्थः—समस्तः ९५५—सम्पूर्ण जगत्रूप होनेसे समस्त

नाम है। सर्वभावज्ञः ९५६—सबके भावको जाननेवाले होनेसे सर्वभावज्ञ नाम है। गोपिकाप्राणवल्लभः ९५७—गोपियोंके प्राणप्यारे अथवा गोपियां प्राणसमान प्रिय होनेसे गोपिकाप्राणवल्लभ नाम है। नित्योत्सवः ९५८—नित्य नवीन चरित्रवाले होनेसे नित्योन्सव नाम है। नित्यसौख्यः ९५९—सदासुखी वा भक्तोंको सदा सुख देनेवाले होनेसे निन्यसौख्य नाम है। नित्यश्रीः ९६०—नित्य नवीन शोभावाले अर्थात् कांति धारण करनेवाले होनेसे नित्यश्री नाम है। नित्यमंगलः ९६१—सदा मंगलरूप होनेसे नित्यमंगल नाम है॥ १३३॥

व्यूहार्चितो जगन्नाथः श्रीवैकुंठपुराधिपः।
पूर्णानन्दघनीभूतो गोपवेषधरो हरिः॥१३४॥

अर्थः—व्यूहार्चितः ९६२—सेनाकी रचना करनेमें प्रशंसायोग्य होनेसे व्यूहार्चित नाम है। जगन्नाथः ९६३—जगत्के नाथ होनेसे जगन्नाथ नाम है। श्रीवैकुंठपुराधिपः ९६४—शोभायुक्त वैकुंठपुरके अधिपति होनेसे श्रीवैकुंठपुराधिप नाम है। पूर्णानन्दघनीभूतः ९६५—पूर्ण आनन्दमूर्ति होनेसे पूर्णानन्दघनीभूत नाम है। गोपवेषधरः ९६६—गोपरूप धारण करनेसे गोपवेषधर नाम है। हरिः ९६७—भक्तजनोंको आनन्द देनेवाले होनेसे हरि नाम है॥ १३४॥

कलापकुसुमश्यामः कोमलः शान्तविग्रहः ।
गोपांगनावृतोऽनन्तो वृन्दावनसमाश्रयः ॥१३५॥

अर्थः—कलापकुसुमश्यामः ९६८—मोरपुच्छके तुल्य श्यामवर्ण होनेसे अथवा मोरपंखकी चन्द्रिकाके समान चमकदार श्याम केश होनेसे कलापकुसुमश्याम नाम है। कोमलः ९६९—सुकुमार स्वरूप होनेसे कोमल नाम है। शान्तविग्रहः ९७०—शान्तमूर्ति होनेसे शान्तविग्रह नाम है। गोपांगनावृतः ९७१—गोपियोंकरके घिरेहुए होनेसे गोपांगनावृत नाम है। अनन्तः ९७२—अन्तर्हित होनेसे अर्थात् सदा एकरस रहनेसे अनन्त नाम है। वृन्दावनसमाश्रयः ९७३—वृन्दावनमें निरन्तर निवास करनेसे वृन्दावनसमाश्रय नाम है ॥ १३५ ॥

गोपालकामिनीजारश्चौरजारशिखामणिः ।
परंज्योतिः पराकाशः परावासः परिस्फुटः ॥१३६॥

अर्थः—गोपालकामिनीजारः९७४—गोपोंकी स्त्रियोंके मित्र अथवा गोपियोंकी संसारवासनाको दूर करनेवाले होनेसे गोपालकामिनीजार नाम है। चौरजारशिखामणिः ९७५—उदरपूर्तिमात्र माखन चुरानेसे चौर और अपनी इच्छासे रहित कामइच्छाके पूरण करनेवाले होनेसे जार, चौर और

जारोंके शिरोमणि होनेसे चौरजारशिखामणि* नाम है। यहां चौरशब्दका आशय दूसरा यह है कि—'चौरः स चेतसां जारः सबुद्धीनामतो हरिः—इत्युक्तेः' गोपवालाओंकी इच्छाके अनुसार वर्तनेवाले हैं अथवा प्रेमवश माखन आदिको ग्रहण करनेवाले हैं; तथा अपने नामस्मरणमात्रसे भक्तोंके पापोंको चुरानेवाले हैं. कहा है कि 'नारायणो नाम नरो नराणां प्रसिद्धचोरः कथितः पृथिव्याम् । अनेकजन्मार्जितपापसंचयं हरत्यशेषं स्मृतमात्रमेव'॥ जारशब्दका आशय यह है कि ये अपनी इच्छा न होनेपर भी गोपियोंकी इच्छा पूर्ण करनेवाले हैं। शिखामणिका तात्पर्य यहां यह है कि—गोपियोंके संग विहार करनेपरभी वीर्यपात नहीं हुवा 'आत्मन्यवरुद्धसौरतः—इत्यादिभागवतोक्तेः' संग्रहरहित केवल उदरपूरणार्थ प्रेमवश माखन आदिको ग्रहण कर लेनेमें चोरशब्दका दोष नहीं आता। परं ९७६—सर्वोत्कृष्ट अथवा परिपूर्ण होनेसे परं नाम

---

* 'चौरजारशिरोमणिः' इस पाठको लेकर नवीन मतावलंवी जन श्रीकृष्ण भगवान्की निन्दा करने लगते हैं. यह उनकी भूल है. सनातनधर्म के तत्वको न जाननेसे उन लोगोंको नेत्ररोगी समझते हैं सो इसप्रकार कि, नेत्ररोगी अन्धकारमें दृष्टि डालनेसे सुखी रहता है, प्रकाशमें उसके नेत्र दुखने लागते हैं. सनातन धर्मके प्रकाशरूप ग्रन्थ देखनेमें उन्हें क्लेश जान पडता है।

है। ज्योतिः ९७७–सबके प्रकाशक होनेसे ज्योति नाम है। पराकाशः ९७८–जीवोंको श्रेष्ठ शिक्षा देनेसे पराकाश नाम है। परावासः ९७९–सबका उत्कृष्ट वासस्थान होनेसे परावास नाम है। परिस्फुटः ९८०–भक्तरक्षार्थ सर्वत्र प्रगट होनेसे परिस्फुट नाम है ॥ १३६ ॥

अष्टादशाक्षरो मंत्रव्यापको लोकपावनः।
सप्तकोटिमहामंत्रशेखरो देवशेखरः ॥ १३७ ॥

अर्थः—अष्टादशाक्षरः ९८१–'श्रीकृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा' इस अठारह अक्षरोंके मंत्ररूप होनेसे अष्टादशाक्षर नाम है। मंत्रव्यापकः ९८२–सब मंत्रोंमें व्यापक होनेसे मंत्रव्यापक नाम है। ९८३–लोकपावनः लोकोंको पवित्र करनेवाले होनेसे लोकपावन नाम है। सप्तकोटिमहामंत्रशेखरः ९८४–सात कोटि महामंत्रोंमें 'गोपीजनवल्लभाय नमः' यह दश अक्षरवाला मंत्र शिरोमणि है इससे सप्तकोटिमहामंत्रशेखर नाम है। देवशेखरः ९८५–देवताओंमें शिरोमणि होनेसे देवशेखर नाम है ॥ १३७ ॥

विज्ञानज्ञानसन्धानस्तेजोराशिर्जगत्पतिः।
भक्तलोकप्रसन्नात्मा भक्तमन्दारविग्रहः ॥ १३८ ॥

अर्थः—विज्ञानज्ञानसन्धानः ९८६–अनुभवजन्य और

शास्त्रीय ज्ञानसे जानने योग्य होनेसे विज्ञानज्ञानसन्धान नाम है । तेजोराशिः ९८७–तेजोंके समूहरूप होनेसे तेजोराशि नाम है । जगत्पतिः ९८८–जगत्के रक्षक वा स्वामी होनेसे जगत्पति नाम है । भक्तलोकप्रसन्नात्मा ९८९–भक्तजनोंमें प्रसन्न मनवाले होनेसे भक्तलोकप्रसन्नात्मा नाम है । भक्तमन्दारविग्रहः ९९०–भक्तजनोंके मनोरथ पूर्ण करनेवाले होनेसे भक्तमन्दारविग्रह नाम है ॥ १३८ ॥

भक्तदारिद्र्यदमनो भक्तानां प्रीतिदायकः ।
भक्ताधीनमनाः पूज्यो भक्तलोकशिवंकरः ॥१३९॥

अर्थः—भक्तदारिद्र्यदमनः ९९१–भक्तोंके दरिद्रको दूर करनेवाले होनेसे भक्तदारिद्र्यदमन नाम है । भक्तानां प्रीतिदायकः ९९२–भक्तोंको प्रीतिके अनुसार अभीष्ट फल देनेवाले होनेसे भक्तानां प्रीतिदायक नाम है । भक्ताधीनमनाः ९९३–भक्तोंके आधीन मन रखनेवाले होनेसे भक्ताधीनमना नाम है । पूज्यः ९९४–ब्रह्माआदिदेवताओंकेभी पूज्य होनेसे पूज्य नाम है । भक्तलोकशिवंकरः ९९५–भक्तजनोंके मंगल करनेवाले होनेसे भक्तलोकशिवंकर नाम है ॥ १३९ ॥

भक्ताभीष्टप्रदः सर्वभक्ताघौघनिकृन्तनः ।
अपारकरुणासिंधुर्भगवान् भक्ततत्परः ॥१४०॥

अर्थः—भक्ताभीष्टप्रदः ९९६—भक्तजनोंको अभीष्ट (मोक्ष संपत्ति आदि) फल देनेवाले होनेसे भक्ताभीष्टप्रद नाम है । सर्वभक्ताघौघनिकृन्तनः ९९७—अपने संपूर्ण भक्तोंके पापसमूहको नाश करनेवाले होनेसे सर्वभक्ताघौघानिकृन्तन नाम है । अपारकरुणासिन्धुः ९९८—अंतपाररहित दयाके सागर होनेसे अपारकरुणासिन्धु नाम है । भगवान् ९९९—अणिमादिक ऐश्वर्य करके युक्त होनेसे भगवान् नाम है । भक्ततत्परः १०००—भक्तोंके उद्धार करनेमें दत्तचित्त होनेसे भक्ततत्पर नाम है ॥ १४० ॥

अथ फलश्रुतिश्लोकाः ।

इति श्रीराधिकानाथसहस्रं नाम कीर्तितम् ।
स्मरणात्पापराशीनां खण्डनं मृत्युनाशनम् ॥ १ ॥

अर्थः—अब आगे गोपालसहस्रनाम पाठका फल कहते हैं—यह उपरोक्त श्रीराधिकानाथ (गोपालकृष्णजीका) सहस्रनाम स्तोत्र वर्णन किया; जो स्मरण करने मात्रसे पापसमूहका काटनेवाला और अकाल मृत्युका नाश करनेवाला है ॥ १ ॥

वैष्णवानां प्रियकरं महारोगनिवारणम् ।
ब्रह्महत्यासुरापानं परस्त्रीगमनं तथा ॥ २ ॥
परद्रव्यापहरणं परद्वेषसमन्वितम् ।
मानसं वाचिकं कायं यत्पापं पापसंभवम् ॥ ३ ॥

सहस्रनामपठनात् सर्वं नश्यति तत्क्षणात् ।

अर्थः—तथा यह वैष्णवोंको अभीष्ट फल देनेवाला और महारोग (राजयक्ष्मा आदि) को दूर करनेवाला है । एवं ब्रह्महत्या, मदिरापान, परस्त्रीगमन, ॥ २ ॥ पराये धनको चुराना, दूसरोंसे ईर्षा करना, तथा मन, वाणी और शरीर इनसे जो पाप उत्पन्न होजाय ॥ ३ ॥ गोपालसहस्रनामका पाठ करनेसे उन सब पापोंका उसीसमय नाश होजाता है.

महादारिद्र्ययुक्तो यो वैष्णवो विष्णुभक्तिमान् ॥४॥
कार्तिक्यां संपठेद्रात्रौ शतमष्टोत्तरं क्रमात् ।
पीताम्बरधरो धीमान् सुगन्धैः पुष्पचन्दनैः ॥५॥
पुस्तकं पूजयित्वा तु नैवेद्यादिभिरेव च ।
राधाध्यानांकितो धीरो वनमालाविभूषितः ॥ ६ ॥

अर्थः—महादरिद्रसे युक्त जो बुद्धिमान् विष्णुभक्त वैष्णव कार्तिकी पूर्णिमाको रात्रिसमय एक सौ आठ वार क्रमपूर्वक पीताम्बर धारण कर सुगन्धित फूल और चन्दनसे ॥४॥५॥ पुस्तककी पूजा करके नैवेद्यआदिसे भोग लगावे; अनन्तर वनमालाको पहिर सावधानमनसे प्रथम श्रीराधाजीका ध्यान करै ॥ ६ ॥

शतमष्टोत्तरं देवि पठेन्नामसहस्रकम् ।
चैत्रशुक्ले च कृष्णे च कुहूसंक्रान्तिवासरे ॥ ७ ॥
पठितव्यं प्रयत्नेन त्रैलोक्यं मोहयेत्क्षणात् ।
तुलसीमालया युक्तो वैष्णवो भक्तितत्परः ॥ ८ ॥
रविवारे च शुक्ले च द्वादश्यां श्राद्धवासरे ।
ब्राह्मणं पूजयित्वा च भोजयित्वा विधानतः ॥९॥
पठेन्नामसहस्रं च ततः सिद्धिः प्रजायते ।

अर्थः—फिर हे देवि ! चैत्रमासमें शुक्लपक्ष अथवा कृष्णपक्षमें अमावास्याको अथवा संक्रान्तिके दिन इस गोपालसहस्र नामके एकसौ आठ पाठ विधिपूर्वक करै ॥ ७ ॥ तो तिससे शीघ्र त्रिलोकीको मोहित करलेवै । तुलसीकी माला धारण कर विष्णुकी भक्तिमें तत्पर हो ॥ ८ ॥ रविवारको शुक्लपक्षकी द्वादशीको और श्राद्धके दिन ब्राह्मणकी विधिवत् पूजा कर भोजन करावै ॥ ९ ॥ और इस प्रकार गोपालसहस्रनामका पाठ करै तो सिद्धि प्राप्त होती है.

महानिशायां सततं वैष्णवो यः पठेत्सदा ॥ १० ॥
देशान्तरगता लक्ष्मीः समायाति न संशयः ।

त्रैलोक्ये च महादेवि सुन्दर्यः काममोहिताः ॥११॥
मुग्धाः स्वयं समायांति वैष्णवं च भजंति ताः ।

अर्थः—महानिशामें अर्थात् दीपमालिकाकी रात्रिमें जो वैष्णव निरन्तर गोपालसहस्रनामका पाठ करता है ॥ १० ॥ उसकी देशान्तरको गईहुई लक्ष्मी फिर प्राप्त हो जाती है, इसमें संशय नहीं है. तथा हे देवि ! तीनों लोकोंमें जो कामसे मोहित हुई ॥ ११ ॥ ऐसी सुन्दरी १६ बरसकी तरुणी स्त्रियां हैं वे स्वयमेव आकर उस वैष्णवकी सेवा करती हैं.

रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बंधनात्॥१२॥
गुर्विणी जनयेत्पुत्रं कन्या विन्दति सत्पतिम् ।
राजानो वश्यतां यांति किं पुनः क्षुद्रमानवाः ॥१३॥

सहस्रनामश्रवणात्पठनात्पूजनात्प्रिये ।
धारणात्सर्वमाप्नोति वैष्णवो नात्र संशयः ॥ १४ ॥

अर्थः—इस गोपालसहस्रनामके पाठमात्रसे रोगी रोगसे वा बद्ध हुआ आदमी बंधनसे छूट जाता है ॥ १२ ॥ इस स्तोत्रके प्रभावसे गर्भिणी स्त्री सुपुत्र जनती है; कन्या उत्तम पतिको प्राप्त

होती है; राजालोग वशीभूत होजाते हैं. फिर साधारण मनुष्योंका तो कहनाही क्या है ? ॥ १३ ॥ यह सहस्रनाम सुननेसे, पढनेसे, पूजनेसे वा धारण करनेसे हे प्रिये ! सर्व कामनाओंको वैष्णवजन निस्सन्देह प्राप्त होता है ॥ १४ ॥

वंशीवटे चान्यवटे तथा पिप्पलकेऽथवा ।
कदंबपादपतले गोपालमूर्तिसन्निधौ ॥ १५ ॥
यः पठेद्वैष्णवो नित्यं स याति हरिमन्दिरम् ।

अर्थः—वृन्दावनमें वंशीवट अथवा अन्य वटवृक्ष अथवा पीपल वृक्ष वा कदंब वृक्षके नीचे अथवा अपनी गोपालमूर्तिके समीप ॥१५॥ जो वैष्णव जन नित्य पाठ करता है, वह वैकुंठ लोकको जाता है.

कृष्णेनोक्तं राधिकायै मयि प्रोक्तं तया शिवे ॥ १६ ॥
नारदाय पुरा प्रोक्तं नारदेन प्रकाशितम् ।
मया तुभ्यं वरारोहे प्रोक्तमेतत्सुदुर्लभम् ॥ १७ ॥

अर्थः—हे शिवे ! यह स्तोत्र पहले श्रीकृष्णजीने राधिकाजीसे कहाथा, वही श्रीराधिकाने मुझसे वर्णन किया ॥ १६ ॥ तहां श्रीकृष्णजीने पहले नारदजीसे कहाथा और नारदजीने

लोकहितार्थ प्रकाशित किया. हे वरारोहे ! वही यह दुर्लभ गोपालसहस्रनाम मैंने तुम्हारे निमित्त प्रकाशित किया है॥१७॥

गोपनीयं प्रयत्नेन न प्रकाश्यः कथंचन ।
शठाय पापिने चैव लंपटाय विशेषतः ॥ १८ ॥
न दातव्यं न दातव्यं न दातव्यं कदाचन ।

अर्थः—इसकी भलीभांति रक्षा करै. किसीप्रकारभी प्रकाशित नहीं करै. विशेषकरके शठ पापी और लंपटको यह स्तोत्र ॥१८॥ न देवै; न देवै; किसी प्रकार कभी नहीं देवै ॥

देयं शिष्याय शांताय विष्णुभक्तिरताय च ॥१९॥

अर्थः—जो शिष्य शांत हो और विष्णुभक्तिमें तत्पर हो उसीको यह देना उचित है ॥ १९ ॥

गोदानब्रह्मयज्ञादेर्वाजपेयशतस्य च ।
अश्वमेधसहस्रस्य फलं पाठे भवेद्ध्रुवम् ॥ २० ॥

अर्थः—सौ गोदान, सौ ब्रह्मयज्ञादि, सौ वाजपेययज्ञ और हजार अश्वमेध यज्ञ इनका फल गोपालसहस्रनामका पाठ करनेसे निश्चय प्राप्त होता है ॥ २० ॥

मोहनं स्तंभनं चैव मारणोच्चाटनादिकम् ।
यद्यद्वांच्छति चित्तेन तत्तत्प्राप्नोति वैष्णवः ॥२१॥

अर्थः—विष्णुभक्तजन मोहन, स्तंभन, मारण, उच्चाटन आदि जो जो करनेकी अपने मनसे इच्छा करता है सो सो इसका पाठ करनेसे उसको प्राप्त होता है ॥२१॥

एकादश्यां नरः स्नात्वा सुगंधिद्रव्यतैलकैः ।
आहारं ब्राह्मणे दत्त्वा दक्षिणा स्वर्णभूषणम् ॥२२॥
तत आरंभकर्ताऽसौ सर्वं प्राप्नोति मानवः ।

अर्थः—जो वैष्णवजन एकादशीमें सुगंधित द्रव्योंसे युक्त तिलके तलसे उबटन लगाके, स्नान कर, ब्राह्मण जिमाय, उसे सुवर्ण आभूषण दक्षिणा देता है ॥२२॥ और गोपालसहस्रनामका पाठ करता है वह वांच्छित फल पाता है ॥

शतावृत्तं सहस्रं च यः पठेद्वैष्णवो जनः ॥ २३ ॥
श्रीवृंदावनचन्द्रस्य प्रसादात्सर्वमाप्नुयात् ।

अर्थः—जो वैष्णवजन सौ वा हजार वार इसका पाठ करता

है ॥ २३ ॥ वह श्रीवृंदावनचन्द्र (श्रीकृष्ण भगवान्) की कृपासे सब कुछ पाता है ।

यद्गृहे पुस्तकं देवि पूजितं चैव तिष्ठति ॥ २४ ॥
न मारी न च दुर्भिक्षं नोपसर्गभयं क्वचित् ।
सर्पाद्या भूतयक्षाद्या नश्यंते नात्र संशयः ॥ २५ ॥

अर्थः—हे पार्वति ! जिसके घरमें गोपालसहस्रनामकी पुस्तकका पूजन होता है ॥२४॥ वहां महामारी दुर्भिक्ष आदि अमंगल उपद्रवोंका भय कुछ भी नहीं होता है. सर्प आदि, पिशाच यक्षआदि सब निस्सन्देह नाशको प्राप्त होजाते हैं ॥२५॥

श्रीगोपालो महादेवि वसेत्तस्य गृहे सदा ।
एतद्यत्र सहस्रं च नाम्नां तिष्ठति पूजितम् ॥ २६ ॥

अर्थः—हे महादेवि ! जिसके घरमें यह गोपालसहस्रनामकी पुस्तक विद्यमान रहती है और प्रतिदिन इसकी पूजा होती है उसके घर श्रीगोपालजी सदा वास करते हैं अर्थात् वहां श्रीकृष्णजीका निरंतर वास रहता है ॥ २६ ॥

ॐम् तत्सदिति श्रीमोहनतंत्रे पार्वतीश्वरसंवादे श्रीगोपाल-सहस्रनामस्तोत्रं संपूर्णम् ।

इति श्रीमदयोध्यामण्डलान्तर्वर्ति—लखीमपुरखीरी-
निवासि—ज्योतिर्वित्पण्डितनारायणप्रसाद-
मिश्रलिखितश्रीगोपालसहस्रनामस्तो-
त्रस्य भाषाटीका समाप्ता ।

शुभमित्यलम् ।

वसुऋत्वङ्कचन्द्रेऽब्दे मार्गे मासि सिते दले ॥
द्वितीयायां बुधे वारे टीकेयं पूरिता मया ॥ १ ॥
अतिशीघ्रतया चेयं कृता व्याख्या मया किल ॥
अत्र कुत्राप्यशुद्धं चेत्क्षन्तव्यं विबुधैर्जनैः ॥ २ ॥

समाप्त.

अवधूत-गीता
भाषाटीकासहिता.

यह गीता अवधूतमुकुटमणि भगवदवतार श्रीमान् दत्तात्रेय भगवान्‌ने स्वयम् श्रीमुखसे कही है. इससे बढ़ाकर इसकी बोधजनकताके विषयमें प्रबल प्रमाण क्या होसकता है ? यह 'अवधूत गीता' संसारानलदग्ध, किंकर्तव्यविमूढ आत्मजिज्ञासु जनोंकी पथदर्शिका है. इसमें अवधूतनायक श्रीगुरु दत्त भगवान्‌नें अपनी अवधूतावस्थामें अनुभव कियेहुए वेदान्तरहस्यका ऐसे मर्मस्पर्शी शब्दोंसे निरूपण किया है कि, जिन [शब्दों] के सुननेसें तत्काल शुद्ध बोध और सुदृढ वैराग्य उत्पन्न होजाता है, ऐसे अलभ्य पुस्तकको बडे परिश्रमसे ढूंढकर सर्व साधारणके बोधार्थ भाषाटीकासहित सुन्दर कागजपर सुवाच्य अक्षरोंमें छपाकर प्रकाशित किया है. आशा है कि, सज्जन महाशय इसका संग्रह कर हमारे अपार परिश्रमको सफल करेंगे. की० ६ आना. डा. ख. १ आना.

